राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत
RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय

मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in

वर्ष-१, अंक-११ लखनऊ अगस्त २०१५ विक्रमी सं. २०७२ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-२४ रु. १०

भारत रत्न डा. अब्दुल कलाम के देहांत पर देश शोकमग्न

नई दिल्ली। मिसाइल मैन के नाम से मशहूर भारत के पूर्व राष्ट्रपति डाक्टर एपीजे अब्दुल कलाम का विगत २७ जुलाई को शिलांग में निधन हो गया। वे ८३ साल के थे। डाक्टर कलाम शाम साढ़े छह बजे आईआईएम शिलांग में एक लेक्चर के दौरान अचानक गिर गए। अस्पताल ले जाने पर डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। एपीजे अब्दुल कलाम के शव को अगले दिन शिलांग से दिल्ली लाया गया, जहां हजारों लोगों ने उनके अंतिम दर्शन किये। फिर उनके पार्थिव शरीर को उनके गृहनगर रामेश्वरम ले जाया गया और वहीं उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने डाक्टर अब्दुल कलाम को अपनी श्रद्धांजलि दी है और उनके निधन पर ७ दिनों के राष्ट्रीय शोक की घोषणा की गई है।

पूर्व राष्ट्रपति डा एपीजे अब्दुल कलाम का जन्म १५ अक्टूबर १९३१ को तमिलनाडु के रामनाथपुरम जिले के रामेश्वरम में हुआ था। मिसाइलमैन के नाम से मशहूर डा एपीजे अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिल जैनुलआबदीन अब्दुल कलाम था। एपीजे अब्दुल कलाम ने मद्रास इंस्टिट्यूट्स आफ टेक्नोलाजी से एयरोनाटिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। डा कलाम ने देश के पहले स्वदेशी तकनीक से बने सेटेलाइट लांच व्हीकल एसएलवी-३ को बनाने में अहम भूमिका निभाई जिससे १०८० में रोहिणी नाम के सैटेलाइट को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित किया गया। कलाम इसरो के लांच व्हीकल प्रोग्राम से जुड़े रहे। करीब दो दशक तक इसरो से जुड़े रहने के बाद डा. कलाम डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट आर्गनाइजेशन (डीआरडीओ) के मिसाइल प्रोग्राम से जुड़े और अग्रणी भूमिका निभाई। १९९८ में पोखरन-२ में उनका महत्वपूर्ण योगदान था और दशकों तक वे डीआरडीओ से जुड़े रहे। उनकी अगुवाई में अग्नि और पृथ्वी जैसी स्वदेशी तकनीक से बनी मिसाइल तैयार हुईं।

डा. कलाम को १९९७ में देश के सबसे बड़े सिविलियन पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। इसके पहले उन्हे पद्म भूषण और पद्मविभूषण से सम्मानित किया जा चुका था। डा. कलाम २५ जुलाई २००२ को वे भारत के ग्यारवें राष्ट्रपति बने। राष्ट्रपति पद से रिटायर होने के बाद वे देश के कई इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट संस्थानों में विजिटिंग प्रोफेसर की हैसियत से जुड़े रहे। देश के परमाणु और अंतरिक्ष कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण योगदान के लिए कलाम को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। राष्ट्रपति पद पर अपने कार्यकाल के दौरान भी कलाम ने काफी ख्याति अर्जित की। वे बच्चों के बीच भी काफी लोकप्रिय थे। वे साल २००२ से २००७ तक इस पद पर रहे। राष्ट्रपति कलाम ने ही भारत के विकास से जुड़ा विजन २०२० का कान्सेप्ट सबसे पहले सामने रखा था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम के निधन पर शोक जताते हुए हुआ कहा कि वो राष्ट्रपति के रूप में दिशादर्शक थे। उनके निधन से पूरे देश में शोक की लहर फैल गई है। वहीं वित्त मंत्री अरुण जेटली ने एपीजे अब्दुल कलाम के निधन को देश के लिए बहुत बड़ी क्षति बताया। उन्होंने कहा कि कलाम देश के मार्ग दर्शक और सकारात्मकता की मिसाल थे। उन्होंने जो योगदान देश के लिए दिया वो कभी चुकाया नहीं जा सकता। मिसाइल मैन कलाम के देहांत पर रोड ट्रांसपोर्ट एवं हाइवे मिनिस्टर नितिन गड़करी बोले कि कलाम हमेशा देश को लेकर काफी गंभीर रहे। वे चाहते थे भारत रक्षा के क्षेत्र में आत्म निर्भर बने। ■

आतंकवादी याकूब मेमन को फाँसी दे दी गयी

मुंबई। १९९३ के मुंबई बम विस्फोटों के दोषी याकूब मेमन को ३० जुलाई को पूर्व निर्धारित समय पर नागपुर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गयी। इससे लगभग ढाई घंटे पहले ही सर्वोच्च न्यायालय ने उसकी आखिरी याचिका भी ठुकरा दी थी, जिसकी सुनवाई रात्रि में हुई थी।

पोस्टमार्टम के बाद उसका शव उसके भाई और चचेरे भाई को सौंप दिया गया, जिसे मुंबई लाकर शाम को एक कब्रिस्तान में दफना दिया गया। याकूब की फांसी के कारण देशभर में कड़ी सुरक्षा रही।

याकूब मेमन को टाडा कोर्ट ने १९९३ में मुंबई में हुए बम विस्फोटों के आरोप में २००७ में फांसी की सजा सुनाई थी, जिनमें २५७ लोगों की मौत हुई थी और ७०० से अधिक लोग घायल हो गए थे।

याकूब मेमन ने फांसी से बचने के लिए तमाम हथकंडे अपनाये और कानूनी प्रक्रियाओं का सहारा लिया। लेकिन अंततः सर्वोच्च न्यायालय ने उसकी सभी दलीलों को खारिज कर दिया और फांसी की सजा को बरकरार रखा। इससे पहले राष्ट्रपति ने भी उसकी दया याचिकाओं को अस्वीकृत कर दिया था।

देश की अधिकांश जनता ने सैकड़ों निर्दोष व्यक्तियों की जानें लेने वाले आतंकवादी को फांसी देने का स्वागत किया है, परंतु कई दलों के नेताओं और मुस्लिम समुदाय के अनेक लोगों ने इसका विरोध किया है। याकूब के परिजनों को उसका शव इस शर्त पर दिया गया था कि कोई जुलूस आदि नहीं निकाला जाएगा, परंतु इन शर्तों को तोड़ते हुए उसकी शव यात्रा में हजारों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग शामिल हुए। ■

बिहार में विधानसभा चुनाव का बिगुल बज गया

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मुजफ्फरपुर में विशाल 'परिवर्तन रैली'

मुजफ्फरपुर। बिहार दौरे के दूसरे चरण में मुजफ्फरपुर में एक परिवर्तन रैली को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के मुख्यमंत्री और आरजेडी प्रमुख लालू यादव पर तीखा हमला बोला. एक ओर जहां उन्होंने नीतीश पर बिहार की जनता से धोखा करने का आरोप लगाया, वहीं लालू पर भी सांप और जहर वाले कथन को लेकर हमला बोला. उन्होंने कहा कि वह अपने स्वार्थ के लिए जहर पी रहे हैं. उन्होंने यहां की जनता से दो-तिहाई मतों से एनडीए को सत्ता में लाने की अपील की. आइए जानते हैं प्रधानमंत्री मोदी की इस रैली के दौरान कही गयी दस बड़ी बातें-

१. पीएम मोदी ने कहा कि नीतीश बिहार को फिर जंगल राज की ओर ला रहे हैं. अगर आप लोगों को जंगल राज से मुक्ति चाहिए तो एनडीए को एक बार सेवा का मौका दीजिए मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ६० दिन में बिहार की तस्वीर बदल दूंगा.

२. प्रधानमंत्री ने भीड़ की ओर इशारा करते हुए कहा कि मुझे शुरु में विश्वास नहीं था कि यहां इतनी भीड उमडेगी. जहां तक मैं देख रहा हूं मुझे सिर्फ लोग ही लोग दिख रहे हैं. और यह भीड़ बता रही है कि यहां सरकार किसकी बनेगी.

३. पीएम मोदी ने कहा कि नीतीश को हमसे शिकायत थी तो मुझे चांटा मार देते, मेरा गला घोंट देते लेकिन उन्होंने तो बिहार की पूरी जनता का गला घोंट दिया.

४. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लालू के सांप और जहर वाले मामले में कहा कि कौन जहर पीता है और कौन पिलाता है इससे बिहार की जनता को कोई मतलब नहीं है. अगर लालू जी जहर पी रहे हैं तो वह अपने स्वार्थ के लिए पी रहे हैं.

५. मोदी ने नीतीश पर हमला बोलते हुए कहा कि आपको याद होगा कि उन्होंने कहा था कि अगर हमने बिजली नहीं दी तो वोट मांगने नहीं आयेंगे. बिजली तो नहीं दी लेकिन वोट मांगने आ गये.

६. लालू पर निशाना साधते हुए उन्होंने लालू की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) का एक अलग ही मतलब बताया. उन्होंने कहा कि आरजेडी का मतलब है 'रोजाना जंगलराज का डर'.

७. गठबंधन को लेकर नीतीश पर हमला बोलते हुए मोदी ने कहा कि उनके तो डीएनए में ही गडबड है.

८. पीएम मोदी ने केंद्र में सरकार बनाने पर धन्यवाद देते हुए कहा कि एक इंजन तो दिल्ली में मिला, एक बिहार में भी मिलेगा तो गाडी अच्छी तरह चलेगी.

९. पीएम मोदी ने कहा कि मैंने बिहार के बारे में बारीकी से अध्ययन किया, जानकारों से बातचीत की. ५०,००० करोड़ का पैकेज भी यहां के विकास के लिए कम पडेगा. अभी संसद सत्र चल रहा है इसलिए मेरे मुंह में ताला लगा हुआ है. सत्र खत्म होते ही मैं बिहार के लिए एक बडे पैकेज की घोषणा करुंगा.

१०. प्रधानमंत्री मोदी ने अंत में यहां की जनता से अपील की कि वह एनडीए को दो-तिहाई बहुमत से जीत दिलाकर सेवा का मौका दें.

मोदी की रैली के इस मंच पर भाजपा के अनेक बड़े नेता तो उपस्थित थे ही, उनकी सहयोगी पार्टियों के शीर्ष नेता भी विराजमान थे। उन्होंने भी अपने भाषण में भाजपा गठबंधन को जिताने की अपील की। ■

कार्टून

आदत से मजबूर

-- मनोज कुरील

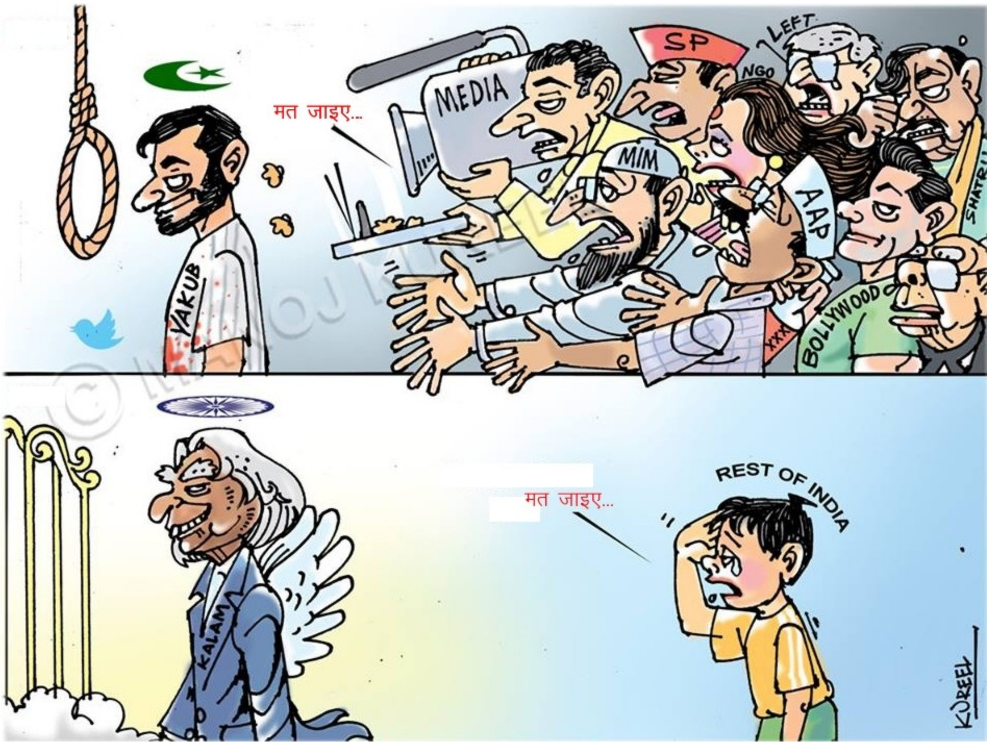

सुभाषित

दोषः कस्य कुले नास्ति, व्याधिना को न पीड़ितः।
व्यसनं केन न प्राप्तं, कस्य सौख्यं निरन्तरम्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- सभी कुलों में कोई न कोई दोष होता है, प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी रोग से ग्रस्त अवश्य होता है। किसी न किसी व्यसन के वशीभूत मनुष्य अवश्य होता है और किसी का भी सुख हमेशा नहीं बना रहता।

पद्यार्थ- किसके कुल दोष नहीं बसता, सबके कुल दोष रहे कम ज्यादा।
कब रोग कहो किसको न लगा, बचता नहिं बाल युवा अरु दादा।
मन के बस कौन हुआ न कहो, अति फैशन मस्त भले कम सादा।
कब कौन सदा सुख से विचरा, दुःख ने निज भार सभी पर लादा।।

(आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

आतंकी के हितैषी और देश के दुश्मन

१९९३ के बम विस्फोटों में सैकड़ों लोगों के प्राण गये थे और हजारों को घायल होना पड़ा था। इन विस्फोटों का प्रमुख सूत्रधार माफिया सरगना दाऊद इब्राहीम आज भी पाकिस्तान में बैठा है, वहां की खुफिया एजेंसी और सरकार के संरक्षण में। बड़ी मुश्किल से एक अपराधी याकूब मेमन सुरक्षा बलों के हाथ आया और अनेक वर्षों तक चली कानूनी प्रक्रिया के बाद उसे टाडा कोर्ट ने फांसी की सजा की सजा सुनायी।

जैसा कि स्वाभाविक है इस सजा के विरुद्ध अपील पर अपील हुई, परन्तु अन्ततः सर्वोच्च न्यायालय ने इस सजा को बनाये रखा। अब उसको फांसी देने की प्रक्रिया शुरू हुई, तो उसने राष्ट्रपति के सामने दया की अपील कर दी। पहले कांग्रेस की सरकार थी, जो ऐसी दया याचिकाओं को अनंत काल तक लटकाये रखने के लिए कुख्यात रही है। पहले पाकिस्तानी आतंकी अजमल कसाब के मामले में ऐसा हुआ, फिर कश्मीरी आतंकी अफजल गुरु के मामले में भी ऐसा ही हुआ।

अगर कांग्रेस की चलती, तो शायद उन दोनों को कभी फांसी न होती, क्योंकि उनकी दया याचिकाओं का निपटारा ही नहीं होता। लेकिन चाहे इसे डेंगू मच्छर की करामात कह लो या कांग्रेस के भीतर उमड़ आया देशप्रेम कि उन दोनों आतंकियों की याचिकाओं को निपटाकर उनको फांसी देनी पड़ी। आतंकी याकूब मेमन की याचिका भी वहीं पड़ी हुई थी। परन्तु वर्तमान सरकार की नीति ऐसी याचिकाओं का शीघ्र निपटारा करके अपराधियों को दंड देने का है। इसलिए याकूब को फांसी की तारीख तय कर दी गयी और उसकी तैयारियां चलने लगीं।

अगर यह अपराधी कोई हिंदू रहा होता, तो किसी को चिंता न होती, परन्तु संयोग से वह मुसलमान था। हालांकि सभी दल दिन में दस बार यह कहते हैं कि आतंकी का कोई धर्म नहीं होता। लेकिन जैसे ही उसको सजा देने का समय आता है, वैसे ही उसका 'धर्म' सामने आ जाता है, जो निरपवाद रूप से इस्लाम ही होता है। उसको फांसी देने से इस्लाम का खतरे में पड़ना लाजिमी होता है, वरना सेकूलरों का वोट बैंक ही खतरे में पड़ जाएगा।

यही सोचकर याकूब को फांसी से बचाने के लिए तमाम सेकूलर सक्रिय हो गये। एक दो नहीं चालीस नामी-गरामी नेता, अभिनेता, सामाजिक कार्यकर्ता और बुद्धिजीवी इसके लिए कमर कसकर तैयार हो गये कि याकूब को फांसी नहीं होनी चाहिए। इनकी दृष्टि में याकूब पूरी तरह निर्दोष है। शायद वे बम विस्फोटों में मरने वालों को ही दोषी मानते हैं कि वे उस समय वहां क्यों थे। इनके लिए आम आदमी के बजाय आतंकी की जान की कीमत अधिक है।

यह संतोष की बात है कि हमारे माननीय राष्ट्रपति, न्यायालय और सरकार इस दबाब में नहीं आये और सभी कानूनी प्रक्रियाओं को पूरा करने के बाद आतंकी याकूब को उसकी करतूत की सजा दे दी गयी। यही न्याय है।

-- बृजनन्दन यादव

आपके पत्र

आपकी पत्रिका का हर अंक स्तरीय साहित्यिक सामग्री से भरपूर होता है। सरस, सार्थक और सकारात्मक भावपूर्ण रचनाओं का बाहुल्य होने से यह पत्रिका पाठक को बरबस आकर्षित कर लेती है। मुझे तो बेसब्री से इंतजार रहता है। आपके श्रम को नमन! **-- कल्पना रामानी**

हर बार की तरह सुंदर अंक। अच्छी सामग्री। **-- हरमिन्दर सिंह चाहल**

हमेशा की तरह नायाब अंक के लिए बधाई। **-- लीला तिवानी**

अभी आपकी पत्रिका देखी। आप हंस की तरह सुन्दर-सुन्दर मोती चुन कर लाते है। इससे पत्रिका की गुणवत्ता बढ़ जाती है। आपका यह सारस्वत अभियान जारी रहे। **-- गिरीश पंकज**

जय विजय का जुलाई २०१५ अंक पढ़ा। बहुत अच्छी सामग्री आपने इसमें समाहित की है। कविता, कहानी, लेख सभी उत्तम कोटि के है। इस सूंदर अंक के लिए हार्दिक बधाई। **-- रामकिशोर उपाध्याय**

पत्रिका पढ़कर बहुत अच्छी लगी! देश और समाज के विकास के लिये सार्थक प्रयास! **-- श्वेता रस्तोगी**

सुन्दर रचनाओं से सुसज्जित बहुत ही सुन्दर और आकर्षक पत्रिका।

-- रीना मौर्या

पत्रिका 'जय विजय' का जुलाई २०१५ अंक बहुत पसंद आया। मेरी हार्दिक शुभकामनायें। **-- डा. भावना कुंवर**

इतने प्रतिष्ठित साहित्यकारों के साथ अपनी गजल देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। पत्रिका परिवार के सभी सदस्यों और माँ सरस्वती के समस्त पुत्र-पुत्रियों को प्रणाम। जय विजय पत्रिका अपने नाम के अनुरूप देश -दुनिया में अपनी ध्वजा फहरा रही है। आप सभी को साधुवाद। **-- अरुण निषाद**

प्रियवर, पत्रिका पढ़ते-पढ़ते मन रम गया। ८१ की आयु की आशीर्वाद स्वीकार करें। **-- डा. पी.के. बालासुब्रामणियम**

आपके द्वारा प्रकाशित 'जय विजय' पत्रिका प्रत्येक माह प्राप्त होती है। इसमें प्रेरणाप्रद संस्मरण, रोचक कहानियां, कवितायें, ज्ञानवर्धक और स्वास्थ्यवर्धक अनुभवों के संग्रह होते हैं। आपको पत्रिका प्रकाशन के लिए साधुवाद।

-- हरीश कुमार, विद्या भारती

पत्रिका के लिए बहुत-बहुत साधुवाद! जारी रखें! **-- वीवीएसएन राव**

बहुत खूबसूरत अंक है। आप अपना कार्य निरंतर करते रहें।

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

सुंदर पत्रिका की यह प्रति भेजने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद।

-- शिप्रा त्रिपाठी

बहुत आकर्षक और पठनीय अंक। शुभ कामनाएं।

-- मीनाक्षी सुकुमारन

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - **सम्पादक**)

गुरु पूर्णिमा एक पर्व ही नहीं जीवन का यथार्थ है

सोचो अगर गुरु परंपरा न होती तो ज्ञानियों की नई पौध कौन उगाता. कौन हमको गढ़-गढ़कर सुंदर बनाता। किसी ने सही कहा है कि हर मनुष्य की प्रथम पाठशाला हमारा घर होता है और पहली गुरु हमारी "माँ"। गुरु की भूमिका निभाना आसान काम नहीं होता उसमें खुशी कम बुराई ज्यादा झेलनी पड़ती है और बुराई का टोकरा सिर पर रखकर हमारा मार्ग दर्शन एक गुरु ही कर सकता है, एक माँ ही कर सकती है। मैं सदैव अपने माता-पिता-गुरु की ऋणी हूँ!

ज्ञान दीप गुरु ने दिया, घट में हुआ उजास।
राह पकड़ जो चल पड़ा, मिलिया वास सुवास।।

-- कल्पना मिश्रा बाजपेई

कहाँ गया गरीबों का पैसा?

निरंकार सिंह

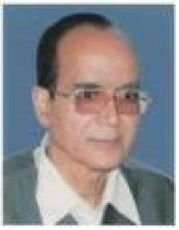

देश में एक तरफ जहां अरबपतियों, पूंजीपतियों की संख्या बढ़ रही है, वहीं अब तक बारह पंचवर्षीय योजनाओं में लाखों करोड़ रुपये खर्च करने के बावजूद ग्रामीण बेहद गरीबी में जीने को मजबूर हैं। देश के तमाम राजनीतिक दल जिन गांवों, गरीबों, किसानों और मजदूरों को लेकर शोर-शराबा मचाते हैं वे उनकी दशा सुधारने में असफल रहे हैं। सामाजिक, आर्थिक और जाति आधारित जनगणना २०११ की ताजा सरकारी रिपोर्ट इसी बात की पुष्टि करती है। इसके अनुसार गांवों में हर तीसरा परिवार भूमिहीन है और आजीविका के लिए मजदूरी पर निर्भर है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले १७.६ करोड़ परिवारों में से ७५ फीसदी परिवारों का अधिकतम वेतन ५ हजार रुपये से कम है वहीं ४० फीसदी परिवार भूमिहीन हैं और मजदूरी करते हैं। जाहिर है कि गांव बदहाल हैं। लेकिन उसके सुधार के लिए योजना बनाने वाले कर्ता-धर्ता और तमाम मंत्री, सांसद और विधायक मालामाल हो गये। गांवों की इस बदहाली की जिम्मेदारी उन सभी दलों को लेनी होगी जो कभी न कभी केन्द्र अथवा राज्यों में सत्ता में रहे हैं और किसानों और गांवों का हितैषी बनने का दावा करते रहे हैं। आजादी के ६८ वर्षो बाद भी देश की इतनी बड़ी आबादी किसी तरह गुजर-बसर कर रही है। इनकी दशा को सुधारे बिना देश तरक्की कैसे कर सकता है?

क्या यह हमारे राजनेताओं के लिए लज्जा की बात नहीं है कि शासन-सत्ता में आते ही उनकी सम्पत्ति दिन दूनी रात चौगुनी की रफ्तार से बढ़ने लगती है और देश के करोड़ों घरों में दोनों वक्त चूल्हा नहीं जलता है और लोग भूखे सो जाते हैं। देश की लगभग ३७ फीसदी आबादी गरीबी रेखा के नीचे बदहाली में गुजर बसर कर रही है। मल्टी डाइमेंशनल पावर्टी इंडेक्स की रिपोर्ट के अनुसार भी देश के आठ राज्यों बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में गरीबों की संख्या ४२ करोड़ है जो अफ्रीका के २६ निर्धनतम देशों की संख्या से भी अधिक है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स की ताजा रिपोर्ट के अनुसार भुखमरी के शिकार ८४ देशों की सूची में भारत का ६७वां स्थान है। बेरोजगारी की दर १०.७ फीसदी है और यदि यही हाल रहा तो यह २०२० तक ३० फीसदी तक पहुंच जायेगी। उधर हर साल लगभग नौ लाख लोगों की मौत दूषित जल और प्रदूषण से हो जाती है। निरक्षरता, बालश्रम और आर्थिक विषमता के मामले में भी हमारी स्थिति बहुत खराब है। विश्व की ६० फीसदी गंदी बस्तिया विकासशील देशों में हैं जिनमें से ३७ फीसदी बस्तियां सिर्फ भारत और चीन में है। ये आंकड़े हमारे राजनेताओं के राज चलाने की क्षमता पर सीधा सवाल खड़ा करते हैं।

एक राष्ट्र के रूप में हमने अपने विकास के लिए संसदीय लोकतंत्र की पद्धति अपनायी है। भारतीय संविधान परिषद ने जनता के नाम पर संकल्प लिया है कि भारत एक प्रभुता सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य बने। उसके नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म एवं पूजा की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा एवं अवसर की समानता प्राप्त हो तथा उनके बीच व्यक्ति की प्रतिष्ठा एवं राष्ट्र की एकता व अखण्डता को सुनिश्चित करते हुए बन्धुता बढ़ाने की भावना का प्रचार किया जाए।

ये लक्ष्य और उद्देश्य लोकतंत्र का एक प्रेरक एवं चुनौतीपूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। लेकिन आजादी के छह दशक के बाद भी केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मंत्री अपनी जनता के लिए पानी, बिजली जैसी मूलभूत आवश्यकताएं भी पूरी नहीं कर सके। नौकरशाही के भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के बजाय खुद भ्रष्टाचार में भागीदार बन गये। सांसद और विधायक निधि में भ्रष्टाचार ने संसदीय लोकतंत्र की व्यवस्था को पतन की पराकाष्ठा पर पहुंचा दिया। इस तरह से जिन लोक प्रतिनिधियों को नौकरशाही के भ्रष्टाचार पर लगाम लगानी थी वे अपने दायित्व को निभाने में असफल साबित हो रहे हैं। अंग्रेजों के समय जिस ढंग से जिस प्रकार शासन चल रहा था आज उससे भी बदतर स्थिति है। छोटा से छोटा राज कर्मचारी भी जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं है। उल्टे वह उन पर धौंस जमाता है और पहले की तरह उनसे रिश्वत वसूलता है।

कुल मिलाकर हमारा संसदीय लोकतंत्र सत्तारूढ़ दलों के नेताओं के निहित स्वार्थ पर टिका है। लोक कल्याणकारी राज्य की भावना कहीं दिखाई नहीं देती है। यही कारण है कि हमारी राज्य व्यवस्था लोगों के लिए रोजी रोजगार का प्रबन्ध करने में असफल साबित हो रही है। आम आदमी का जब भी किसी सरकारी विभाग से पाला पड़ता है तो उसकी जेब खाली हो जाती है। हालत यहां तक पहुंच गयी है कि सुप्रीम कोर्ट को भी एक मामले में सरकारी तंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता प्रकट करते हुए कहना पड़ा कि ‘कुछ भी बिना पैसे के नहीं होता। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि देश में भ्रष्टाचार पर कोई नियंत्रण नहीं है।’

मंत्री से लेकर संतरी तक और राज्य का छोटे से लेकर बड़े से बड़ा अधिकारी देखते ही देखते मालामाल हो जाए और हमारी राज्य व्यवस्था को यह दिखाई नहीं दे तो इसे क्या कहा जायेगा। हमारे कई वर्तमान और पूर्व मुख्यमंत्री और मंत्री, नौकरशाह सी.बी.आई. जांच के दायरे में है। लेकिन हमारी व्यवस्था में किसी भी मामले में किसी बड़े नेता और नौकरशाह को सजा नहीं मिलती है। अब यदि कानून को बड़े बड़े नेताओं और अफसरों की आलीशान कोठियां, शापिंग काम्पलेक्स, कृषि फार्म, महंगी विदेशी गाड़ियां और तमाम नामी और बेनामी सम्पत्तियां दिखाई नहीं देती हैं तो इसकी क्या व्याख्या की जा सकती है।

जरूरत इस बात की है कि केन्द्र और राज्य सरकारें संविधान के निर्देशित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ठोस संकल्प के साथ कदम उठायें। देश और संसदीय लोकतंत्र के भविष्य के लिए उन्हें यह करना ही पड़ेगा। यह संतोष की बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की इस दशा को समझा है और वे उसे सुधारने के लिए ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं। उनकी योजनाएं ऐसी हैं कि यदि उन्हें ठीक से लागू किया जाये, तो गांव और शहर की तस्वीर वास्तव में बदल सकती है। ■

स्वास्थ्य की शत्रु है चाय

विजय कुमार सिंघल

हमारे स्वास्थ्य की सबसे बड़ी दुश्मन है चाय। यह घर-घर में पी जाती है और दिन में कई बार भी पी जाती है। इसके कारण हमारे स्वास्थ्य का सत्यानाश हो रहा है। इसमें कोई पौष्टिक तत्व नहीं होता, बल्कि हानिकारक नशीली वस्तुएँ होती हैं। इसको कुछ दिन तक नियमित पीने से इसकी लत लग जाती है और यदि एक दिन भी समय पर चाय न मिले, तो सिर दर्द से फटने लगता है और शरीर शिथिल हो जाता है। इससे सिद्ध होता है कि यह एक नशा है और नशे के अलावा कुछ नहीं है।

चाय को गर्म-गर्म पिया जाता है, इससे आँतों पर इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। हमारे शरीर में ठंडी वस्तुओं को गर्म करने की व्यवस्था तो है, परन्तु गर्म वस्तुओं को ठंडा करने की कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए गर्म-गर्म चाय पेट और आँतों में काफी समय तक पड़ी रहती है और हमारी पाचन शक्ति को बिगाड़ देती है। चाय के प्रयोग से आँतें धीरे-धीरे निर्बल हो जाती हैं और मल निष्कासन प्रणाली भी शिथिल हो जाती है। इससे सड़ा हुआ मल आँतों में जमता रहता है और तरह-तरह की बीमारियाँ पैदा करता है। नियमित चाय पीने वाले प्रायः भूख न लगने की शिकायतें करते पाये गये हैं। इसका कारण यही है कि पाचन शक्ति कमजोर हो जाने के कारण कोई भी भोजन ठीक से पचता नहीं है, इसलिए खुलकर भूख भी नहीं लगती।

बहुत से लोगों में बेड टी की आदत होती है

(शेष पृष्ठ २३ पर)

संसार को किसने धारण किया है?

मनमोहन कुमार आर्य

सभी आंखों वाले प्राणी सूर्य, चन्द्र व पृथिवी से युक्त नाना रंगों वाले संसार को देखते हैं परन्तु उन्हें यह पता नहीं चलता कि यह संसार किसने व क्यों बनाया और कौन इसका धारण व पालन कर रहा है? जिस प्रकार प्राणियों के शरीर का धारण उसमें निहित जीवात्मा के द्वारा होता है, इसी प्रकार से इस संसार रूपी शरीर का धारण भी किसी चेतन सत्ता के द्वारा ही होना सम्भव है। यदि संसार चल रहा है तो कोई सत्ता अवश्य है, जो इसे चला रही है अन्यथा यह मृतक शरीर की भांति निष्क्रिय व निर्जीव होता। मनुष्य के शरीर को जीवात्मा धारण किये हुए होता है। जीवात्मा में ज्ञान व क्रिया का स्वभाविक गुण होता है जिससे आत्मा के द्वारा शरीर धारण किया जाता है।

ज्ञान दो प्रकार का होता है, एक सत्य व दूसरा असत्य। सत्य यथार्थ गुणों को कहते हैं और असत्य अयथार्थ, अस्तित्वहीन व सत्य के विपरीत जो वास्तविक नहीं अपितु कृत्रिम गुण हों, उनको कहते हैं। उदाहरण के लिए हम अपने शरीर को लेते हैं। यह भौतिक द्रव्यों से बना हुआ है जिसमें दो आंखें, दो नासिक छिद्रों से युक्त नासिका, दो कान, वाणी बोलने के यन्त्र व दांतों से युक्त मुख, त्वचा सहित ५ ज्ञान व ५ कर्म इन्द्रियां, मन एवं बुद्धि हैं। यह सत्य है, इसके विपरीत यह कहना कि शरीर में आंख, नाक, कान आदि हैं ही नहीं, यह असत्य है। यही वास्तविक ज्ञान है। ज्ञान में अपनी स्वाभाविक शक्ति भी निहित होती है। ज्ञान रहित जड़ पदार्थों को ज्ञानयुक्त सत्ता नियंत्रित करती है और ज्ञानयुक्त जीवात्मा व परमात्मा ज्ञान के अनुसार शक्तिवान व क्रियाशील हैं।

संसार को कौन धारण कर रहा है? इसका उत्तर देने से पूर्व आरम्भ में किये गये प्रश्न कि संसार को किसने व क्यों बनाया है, इसका संक्षिप्त उत्तर पर विचार करते हैं। इस दृश्यमान संसार को उस सत्ता ने बनाया है जो कि संसार को बना सकती है। कौन सी सत्ता बना सकती है? इसका उत्तर है जो सत्य, चित्त, दुःखों से सर्वथा रहित पूर्ण आनन्दयुक्त, सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तरयामी, सर्वशक्तिमान आदि गुणों से युक्त हो, उसी सत्ता से यह संसार बन सकता है। जड़ पदार्थ न तो स्वयं कुछ बुद्धिपूर्वक ज्ञानयुक्त रचना बन सकते हैं न ही परस्पर मिलकर बना सकते हैं और न ही उन पदार्थों का बिना बने कोई महत्व होता है। किसी पदार्थ की रचना किसी ज्ञान युक्त सत्ता से ही हुआ करती है और यह भी नियम है कि ज्ञानयुक्त सत्ता कोई भी कार्य अवश्य ही किसी प्रयोजन से करती है, बिना प्रयोजन के कोई कार्य नहीं करती।

जीवात्मा को ही लें, यह ज्ञानयुक्त व कर्म करने वाली सत्ता है। यह जो भी कार्य व क्रिया मनुष्य के रूप में करती व कराती है उसका प्रयोजन अवश्य होता है। निष्प्रयोजन यह कोई कार्य कदापि नहीं करती। अतः ईश्वर जिससे यह संसार बना, उसका चेतन पदार्थ होना आवश्यक है। सत्ता होने से वह सत्य है। जिनकी सत्ता नहीं होती वह असत्य पदार्थ होते हैं। संसार की विशालता और इसके बनाने वाले के आखों से दिखाई न देने के कारण वह निराकार व सर्वव्यापक है। सारा संसार एक सुनियोजित व ज्ञानयुक्त सत्ता है।

इसी प्रकार से दुःखों से युक्त व्यक्ति की कार्य करने में रुचि नहीं होती। कोई भी कार्य करने के लिए स्वस्थ व सुखी होना आवश्यक है, इसी प्रकार से ईश्वर यह रचना बनाकर चला रहा है तो इससे उसका सर्वानन्दयुक्त होना सिद्ध होता है। दिखाई न देने से वह सर्वातिसूक्ष्म तत्व है और प्रकृति के सत्व, रज व तम कणों से जो कि अत्यन्त सूक्ष्म हैं, उनसे परमाणुओं, अणुओं का निर्माण कर ईश्वर ने यह सृष्टि बनाई है, इससे भी सर्वातिसूक्ष्म सिद्ध होता है। इसी प्रकार सर्वान्तर्यामी एवं सर्वशक्तिमान विशेषण भी ईश्वर में सिद्ध होते हैं। ईश्वर का ऐसा ही स्वरूप ईश्वरीय ज्ञान वेदों में कहा गया है जो सृष्टि-उत्पत्ति के समय ईश्वर ने चार ऋषियों की आत्माओं में प्रेरणा द्वारा दिया था। ईश्वर के इस स्वरूप के विपरीत ईश्वर का चित्रण, वर्णन व कथन असत्य व निराधार है। वह लोगों की अज्ञानता व वैदिक ज्ञान से अनभिज्ञता व कुछ व अधिक निजी स्वार्थों के कारण होता है। वेदों के प्रमाणों के अतिरिक्त हमारे ऋषि-मुनि जिन्हें हमें अध्यात्म विज्ञान के वैज्ञानिक कह सकते हैं, उन्होंने योग पद्धति से उपासना करके ईश्वर के स्वरूप का अपनी हृदय गुहा में साक्षात्कार कर इसे सत्य पाया और दर्शनों, स्मृतियों व उपनिषदों में अपने ज्ञान व अनुभव पर आधारित ईश्वर के सत्य स्वरूप का वर्णन किया। अतः ईश्वर का अस्तित्व स्वयंसिद्ध है। यह संसार ईश्वर के द्वारा सत्व, रज व तम गुणों वाली जड़ प्रकृति (ज्ञान रहित) से पूर्व कल्पों के अनुसार जीवों को उनके पाप व पुण्य कर्मों के फलों को देने के लिये बनाया गया है।

हमारे लेख का विषय है कि संसार को किसने धारण किया हुआ है। इसके दो उत्तर हैं पहला तो यह कि सच्चिदानन्द स्वरूप ईश्वर ने व दूसरा सत्य नियमों ने। मनुष्यों के सत्य कर्मों व आचरण जिसे धर्म की संज्ञा दी गई है, उससे यह संसार पल्लवित व पुष्पित होता है और मिथ्याचरणों व अन्धविश्वास आदि से यह अव्यवस्थित होता है जिसके लिए सभी देशों की सरकारों ने दण्ड का प्राविधान किया हुआ है। यह सिद्धान्त ईश्वर के पाप-पुण्य के अनुसार पुरस्कार व दण्ड के विधान जिसे कर्म-फल व्यवस्था कहते हैं, का अनुकरण है। ईश्वर ने इस संसार को अपने सत्य नियमों में आरूढ़ होकर धारण किया हुआ है। इसका अर्थ है कि सृष्टि को बनाने व चलाने में जिन सत्य नियमों की आवश्यकता है, ईश्वर उसका पूरा पूरा पालन करता है। यदि ऐसा न हो तो यह संसार न तो बन ही सकता था और न चल ही सकता था। वैज्ञानिक भौतिक पदार्थों का अध्ययन कर जिन नियमों को ईश्वर प्रदत्त बुद्धि व ज्ञान से जान पाते हैं, वह नियम ईश्वर के बनाये नियम हैं और उन्हें ही सत्य नियम कहा जाता है। उन व वैसे ही अन्य सत्य नियमों से संसार का धारण ईश्वर करता है।

ईश्वर मनुष्यों को अपने सत्य नियमों से उत्पन्न करता है और उनसे अपेक्षा करता है कि वह भी सत्य का पालन व धारण करें। यही सच्चा मानव व वैदिक धर्म है। जो मनुष्य इनका पालन करता है वह ईश्वर की व्यवस्था से सुखी व दुःखों से निवृत रहता है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को जानकर व ईश्वर के बनाये सत्य नियमों के अनुसार प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करना तथा किसी पदार्थ का किंचित दुरुपयोग न करना ही मनुष्यों का कर्तव्य है। जो मनुष्य जीवन में सत्य विद्याओं व वेदों का अध्ययन नहीं करते व जिनका आचरण व व्यवहार सत्य नियमों के विपरीत होता है, वह संसार व ईश्वर के सत्य नियमों में बाधक बनते हैं जिससे ईश्वर उनको दुःख के रूप में दण्ड देता है। यह प्रायः मानसिक क्लेश, शारीरिक दुर्बलता व रोग आदि के रूप में होता है।

वेदों व वैदिक विचारधारा से अनभिज्ञ लोगों को अपने दुःखों का कारण समझ में नहीं आता और वह इनका समाधान आर्थिक समृद्धि आदि में खोजते हैं जिससे आंशिक लाभ ही होता है। आर्थिक समृद्धि व सपन्नता से किसी मनुष्य के आध्यात्मिक, आधिदैविक व आधिभौतिक दुःखों की पूर्ण निवृत्ति अद्यावधि देखने में नहीं आई। इससे जीवन में एक प्रकार का द्वन्द्व बनता है जिसमें उलझ कर वेद ज्ञान से अनभिज्ञ सत्य आचरण न करने वाले धनी व निर्धन व्यक्ति दुःखों व क्लेशों से आबद्ध रहकर कालान्तर में अभिनिवेश क्लेश मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। अतः वेदाध्ययन करना, सृष्टि में कार्यरत नियमों को जानना, ईश्वर-जीव-प्रकृति के यथार्थ स्वरूप को जानकर ईश्वर स्तुति-प्रार्थना-उपासना करते हुए सत्य नियमों के आधार पर धन अर्जित कर जीवन व्यतीत करना ही मनुष्य का कर्तव्य व धर्म है एवं सृष्टि में कार्यरत सत्य नियमों का पोषक है।

यह संसार सत्य नियमों में आबद्ध होकर बना व चल रहा है। हमें भी अपने जीवन को सत्य नियमों में आबद्ध रखकर जीवन जीना है। सत्य नियमों का पालन करते हुए जीवन व्यतीत करना ही अभ्युदय व निःश्रेयस का आधार है। इसके विपरीत दुःख व अवनति का मार्ग है। आइये, अपने जीवन से असत्य, अनीति, अज्ञान, अन्याय, दुराचार, निकम्मापन व भ्रष्टाचार आदि को सर्वथा दूर कर अपने प्रत्येक कर्म को सत्य पर आश्रित व अवलम्बित करके सत्यस्वरूप ईश्वर के आशीर्वाद के अधिकारी बनें। ■

मैंने कभी नहीं चाहा कि मैं भीड़ में खड़ी रहूँ
तुम्हें वैसे ही पुकारूँ जैसे और सब पुकारते हैं
उसी तरह सम्बोधित करूँ जैसे और सब करते हैं
मैं क्या हूँ तुम्हारे लिए समझ नहीं पाती
कुछ हूँ भी या नहीं ये भी पता नहीं
फिर कैसे कदम बढ़ाऊँ ?
इसलिए कि ऐसा मैं चाहती हूँ ?
मैं खुद कभी
पहल नहीं कर पाऊँगी मैं जानती हूँ
और फिर क्या यही एक वजह होनी चाहिए इसके पीछे ?
तुम्हारे साथ का जो हिस्सा मेरे पास है
जानती हूँ औरों के पास उतना भी नहीं
पर फिर भी मेरे लिए ये काफी नहीं मैं संतुष्ट नहीं
ये कैसी उद्विग्नता है ?
क्या प्रेम एकाधिकार चाहता है ?

-- अनिता अग्रवाल

माँ तू ही है जन्म दाता,
तेरे बिना जीवन खटकाता
हाथ पकड़कर चलना सिखाया,
गीले बिस्तर से सूखे में सुलाया
पढाई में मदद करके महान बनाया,
सबने तेरे रुप में ही खुदा पाया
अंधेरी रात में लोरी देकर दुःख को दूर भगाया,
निंद्रा के सपनो को दुनिया में तूने दिखाया
जब मैं रोया तो तेरी आँख में आँसू आए,
जब हँसा फिर भी तेरी आँख में आँसू आए!
मंजिल का रास्ता मैं भूल गया था,
उसे तू ने ही पार लगाया/माँ तू ही है जन्म दाता !

-- मयूर जसवानी

एक रक्षा का सूत्र बांधना है
अपने देश की एकता को भी
ताकि टूटने न पाए पवित्र बंधन
जो जुड़ा है सांसो से कई शहीदों के
करनी है रक्षा जी जान से अपने देश की
करनी है चौकसी दिन रात इस की
ताकि हर न ले जाये
कोई भारत माता हम से
बांधना है सूत्र ऐसा
जो गूंथा हो स्नेह से हमारे
जोड़ना है दिलों को अपने
करने हैं मजबूत हाथ अपने
आओ इस पावन बेला पर बांधें मिलकर
सूत्र एकता का अपने देश को
करें प्रण रखेंगे लाज सदा ही अपने देश की
बांधे सूत्र ऐसा जिसे खोल न पाए कोई
एक रक्षा का सूत्र बांधना है
अपने देश की एकता को भी
ताकि टूटने न पाए ये पवित्र बंधन कभी

-- मीनाक्षी सुकुमारन

हो बुलंद आवाज इतनी, कौन है मौन कह जाये!
रूह तन को ढूंढ़ती जो, रूह जीवित हो जाये।
खो न दे खोने का डर, दृढ़ता के आगे हार जाये।
झूठे को दर्पण दिखा, द्वेष को सीख सिखा।
संग बैठे बहुत बहुरूपिये, सामना कर पर्दा हटा।
मत दबा अपनी चहक, उड़ने दे अपनी महक।
अस्तित्व की रक्षा करें, विश्वास को पकड़े रखें।
धीरे-धीरे बढ़ती लता, सब्र रख छटती घटा।
है घना कुछ पल का और, पहले सदा मचता है शोर।
शोर कभी बरसते नहीं, भरे बादल रुकते नहीं।
कौन चुप रहते नहीं, मौन बुलन्द दिखते नहीं।
बना हकीकत स्वप्न स्वच्छ
संभल दरिया भरा है मगरमच्छ।
दर्प के दरिया शिखर,
बांध एक पुल निखर।
कर बुलन्द आवाज इतनी
कौन है मौन कह जाये।

-- संगीता कुमारी

(कविता संग्रह '**हृदय के झरोखे**' से साभार)

मैं कुछ पल फुर्सत के चाहती हूँ
हर बन्धन से रिहाई चाहती हूँ,
कुछ फुर्सत कलैंडर से
न डराए वो
आने वाले दिन की परेशानियों से,
कुछ फुर्सत घड़ी की टिक टिक से
जो भागती है तेज मुझसे तेज,
कुछ फुर्सत उस अपार अनंत ट्रैफिक से
जो चलता तो मेरे साथ है/पर हर कोई तन्हा है,
कुछ फुर्सत उन शिकवे शिकायतों से
जो मेरे घर पहुँचते ही मेरे अपने करते हैं
कुछ फुर्सत उन उकताहट भरी खबरों से
जो इतनी हो गयी हैं कि/जेहन को भी नहीं झकझकोरती
अब कुछ पल दुनिया से विदाई चाहती हूँ,
मैं कुछ पल अपने लिए तनहाई चाहती हूँ...

-- प्रीति दक्ष

जैसे हुई नहीं उस रात के बाद सुबह
झरता रहा अँधेरा अंदर बाहर
उसने कहा चित्त लेटो
हो जाएगा सब शांत
पर रात की रीतती रुलाई
घूमती रही लगातार गोल गोल
जाने कौन से चक्रव्यूह बनाती भेदती
कुछ खो गया था/ना मिलती थी चाभी उस संदूक की
हर बार महसूस करती ठंडा स्पर्श हथेलियों में
पर आँख खोलते गायब खो गया ,
क्या अब कभी नहीं मिलेगा ?
एक हूक उठती कोई पतली लकीर नहीं
रेशे में खरोंचा निशान नहीं बस विध्वंस
सब चुक जाने का प्रलयंकारी विलाप

-- रितु शर्मा

बार-बार सहता अपमान
टुकड़े-टुकड़े टूटता आसमान,
डर लगता है कहीं गिर न जाये।
जब भी देखती हूं क्षितिज के उस पार छाया सन्नाटा
तो सोचती हूं क्या होगा?
यदि विदीर्ण हो जाये आसमां और
टूट जाये क्षितिज पर फैला सन्नाटा
आसमां टूटता है,
धरा समाहित कर लेती है
उसे अपने अंक में, और
विस्तृत कर लेती है पाताल को,
ताकि उसमें रक्षित हो पायें
समाज से संतप्त अनेक सीताएँ!

-- डा. रचना शर्मा

(कविता संग्रह '**अन्तर-पथ**' से साभार)

हर रोज ही अस्पताल में लगी वे लम्बी कतारें कुछ बूढ़े
मगर बीमार चेहरे खड़े रहते हैं थामे हुए पर्ची लाठी के
सहारे डॉक्टर साहब जब भी आते हैं ब्रेक के बाद
चाहे वो टी ब्रेक हो या फिर लंच ब्रेक
तो बुलाते हैं पहले जान-पहचान वालों को
पूछते हैं उनका हाल-चाल/लिखते हैं उनकी दवा-दारू
और जब निढाल हो जाता है
वह बूढा शरीर तो बैठ जाते हैं
वहीं पर लम्बी कतार के बीच वक्त का विस्तृत अनुभव
संजोये झांकती है अस्थियां कमजोर देह के भीतर से
फिर छुट्टी होने पर डाक्टर साहब
उठ जाते हैं सीट से
लौट जाता है वह बूढा शरीर
वापिस घर की ओर
और अगले दिन फिर
बन जाता है हिस्सा उसी कतार का

-- मनोज चौहान

यूं रोज रोज मुझे न/सताया करो तुम
रह रह कर/आंसू न बहाया करो तुम
माना के हम/दुनियावी रिश्तों के दायरे में नहीं आते
पर खुद की नजरों से तो/हमें न गिराया करो तुम
जब भी देखता हूं तुमको/अपनी नजरों के सामने
गन्धर्व विवाह मान कर/पत्नी मान लेता हूं तुमको
फिर यूँ बार बार/किसी की बातों में आकर
मुझको मेरी ही पहचान/न बताया करो तुम
जब तक जियूँगा/तुम्हारे लिए जिऊंगा
तुम्हारे जाने से पहले/मौत का जहर पियूँगा
इसलिए जब तक जिन्दा हूँ
जी भर के कर लो प्यार मुझको
क्या पता किस दिन
बंद हो जाएँ ये आंखें
यूँ जीते जी तो मुझको
न जलाया करो तुम

-- महेश कुमार माटा

नमक का कर्ज

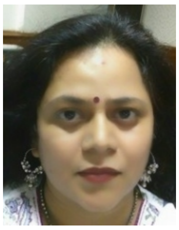

डा. मंजरी शुक्ला

चारों ओर से धमाकों की आवाज आ रही थी। ऐसा लग रहा था मानो दीपावली हो, पर यह पटाखों की नहीं बल्कि हथगोलों और बंदूकों की आवाजें थीं। सन्नाटे को चीरती जब किसी जवान की बन्दूक चलने की आवाज आती, तो मानो पनघट और चौबारे भी थरथरा उठते। इन्हीं के बीच दस वर्षीय नन्हा बालक टीपू अपनी बूढ़ी और अंधी दादी से चिपककर सोने की कोशिश कर रहा था। दहशत और मौत का भय उसकी आँखों में साफ नजर आ रहा था, क्योंकि वह जानता था कि उसकी झोपड़ी किसी भी पल किसी हथगोले का निशाना बन सकती है। हर दूसरे दिन वह गाँव के किसी आदमी को बिना किसी अपराध के मौत के मुहँ में जाता देखता और उसके पीछे रोते बिलखते परिवार रह जाते। जब कभी बमबारी नहीं हो रही होती, तो वह चैन से अपनी दादी के साथ सोता, पर यह सुकून भरी नींद उसे बहुत कम ही नसीब हो पाती थी।

एक दिन टीपू रोज की तरह दादी की खाना बनाने में मदद कर रहा था क्योंकि दादी को सामान टटोल कर इकठ्ठा करने में बहुत समय लग जाता था। तभी दादी ने कहा- 'टीपू, मुझे यह लकड़ियाँ कुछ सीली मालूम पड़ रही हैं, जरा पास में ही जाकर कुछ सूखी टहनियां ले आना और दूर बिलकुल मत जाना।' टीपू यह सुनकर बहुत खुश हो गया, क्योंकि दादी उसे झोपड़ी से बाहर जाने ही नहीं देती थी। उनकी झोपड़ी सीमा के नजदीक थी, इसलिए कब बमबारी हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता था। उसने इन्हीं नफरतों की आंधी के चलते अपना भरा पूरा परिवार खो दिया था, और अब वह टीपू को किसी कीमत पर नहीं खोना चाहती थी। टीपू झोंपड़ी के पीछे की ओर जाकर टहनियां ढूँढने लगा, तो उसे झाड़ियों में कुछ हलचल सी लगी। वह उस ओर बढ़ा तो उसने देखा कि एक घायल सैनिक पड़ा हुआ था। उसकी वर्दी जगह-जगह से फटी हुई थी और उसके घावों से खून बह रहा था। बाल बिलकुल रूखे और चेहरे पर मिट्टी की परत जमी हुई थी।

एक पल को तो वह उस सैनिक का डरावना रूप देखकर डर गया, पर दूसरे ही पल उसे अपने पिताजी की याद आ गई, जो उसे हमेशा हिम्मत और बहादुरी से काम करने के लिए कहते। वह थोड़ा और आगे बढ़ा और गौर से सैनिक को देखने लगा। लहुलुहान चेहरा, अधखुली आँखें और सूखे पपड़ी भरे होंठ,वह दर्द से रह रहकर कराह रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उसे कई दिन से भोजन और पानी भी नहीं मिला हो। तभी सैनिक ने धीरे से अपनी आँखें खोली और टीपू की ओर आशा भरी नजरों से देखकर बोला -'पानी!'

टीपू ने इधर-उधर देखा, फिर दौड़कर अपनी झोपडी से एक बर्तन में पानी ले आया। उसने सैनिक को जैसे-तैसे सहारा देकर उठाया और पानी का बर्तन उसके मुहँ से लगा दिया। सैनिक एक ही साँस में सारा पानी गटागट पी गया। पानी पीकर जैसे उसके भीतर नए प्राणों का संचार हो गया। उसकी आँखों में चमक आ गई। टीपू को यह देखकर बहुत अच्छा लगा। उसने पुछा -'तुम कहाँ से आये हो?'

सैनिक ने यह सुनकर एक फीकी मुस्कान के साथ टीपू को देखा और चुप हो गया। टीपू ने कहा- 'वो देखो, सामने मेरी झोपड़ी है। वहाँ पहुंचकर तुम्हें खाना भी मिलेगा।'

सैनिक ने यह सुनकर टीपू का नन्हा हाथ थाम लिया और बड़ी ही मुश्किल से लगभग घिसटते हुए किसी तरह झोपड़ी तक पहुँच गया। अपनी दादी को सैनिक के बारे में बताता हुआ टीपू बोला- 'दादी, इनके घावों से बहुत खून बह रहा है।'

दादी एक दयालु और अनुभवी महिला थी। उन्होंने तुरंत जड़ी बूटियों का काढ़ा बनाकर उसे पिलाया और हल्दी का लेप उसके घावों पर लगा दिया। फिर उसने जल्दी से खाना बनाकर दाल भात सैनिक को बड़े प्यार के साथ परोसा।

सैनिक खाने पर भूखे शेर की भाँति टूट पड़ा और देखते ही देखते उसने चावल का आखिरी दाना तक चट कर डाला। उसकी आँखों में असीम तृप्ति का एहसास था और उसका रोम-रोम टीपू और उसकी दादी के लिए कृतज्ञ था। पर अगले ही पल वह शर्मिंदा होते हुए बोला- 'तीन दिन से मैंने अन्न का दाना भी नहीं खाया था इसलिए खाते समय होश ही नहीं रहा कि आप लोगो लिए कुछ बचा ही नहीं है।'

यह सुनकर दादी प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली- 'तुमसे मिलकर मुझे मेरे बेटे की याद आ गई और अगर बेटा पेट भर के भोजन कर ले तो माँ का पेट तो क्या आत्मा तक तृप्त हो जाती है।'

यह सुनकर सैनिक की आँखें भर आईं। कुछ ही दिनों में सैनिक चलने फिरने लायक हो गया। टीपू उससे तरह-तरह के प्रश्न पूछता रहता, कभी जंग के बारे में तो कभी फौज के बारे में। एक दिन टीपू ने उसकी वर्दी पर हाथ फेरकर पूछा 'अच्छा, तो हमारे देश के सैनिक क्या इसी तरह की वर्दी पहनते हैं?"

यह सुनकर सैनिक कुछ नहीं बोला और उसें प्यार से गले लगा लिया। सैनिक ने थोड़ी देर बाद पूछा- 'तुम्हारे माँ और पिताजी कहाँ हैं?"

यह सुनकर टीपू का गोरा मुहँ गुस्से से लाल हो गया और वह आसमान की ओर इशारा करके बोला 'दादी कहती हैं कि सीमा पार से किसी फौजी ने हमारी झोपड़ी के पास ताबड़तोड़ फायरिंग की थी, जिससे मेरे माँ और पिताजी भगवान के पास चले गए। जब मैं बड़ा होकर फौज में भर्ती होऊंगा तो उसको भी बन्दूक से मार दूँगा।'

यह सुनकर सैनिक के पैरों तले जमीन खिसक गई। उसे वह मनहूस शाम याद आ गई जब उसने दुश्मनों का जिक्र आते ही गुस्से में फायरिंग शुरू कर दी थी और उसे बाद में पता चला था कि एक पति-पत्नी की उसी में मौत हो गई थी। अब उसके समझ में आया कि वे दोनों टीपू के ही माँ-बाप थे। उसका हृदय चीत्कार कर उठा। जो बच्चा उसे मौत के मुंह से बचाकर लाया था, उसने उसे ही अनाथ बना दिया था।

वह जैसे पत्थर का बन गया। बहुत देर तक वह बिना हिले डुले वैसे ही बैठा रहा पर उसकी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे। वह अपनी सेना में मेजर था और अब तक न जाने कितने युद्ध देख चुका था, कितनी ही लाशें उसके सामने से गुजरी थीं, पर उसकी आँखें कभी नम नहीं हुई थीं। आज वह जोर-जोर से बच्चों की तरह सिसकारी भरकर रो रहा था। वह अपने ऊपर बहुत लज्जित था कि उसने सीमा पार की हर औरत और मासूम बच्चों की जान को कैसे अपनी माँ और बच्चों की जान नहीं समझा। क्यों उनमें उसे अपने परिवार वालों की झलक नहीं दिखाई दी। सुबह को काम पर जाता, हँसता-मुस्कुराता आदमी जब अपने घर नहीं लौटा होगा, तो उसके रोते बिलखते परिवारवाले उसे कभी क्यों नहीं दिखे।

उसे इस तरह रोता देख टीपू दौड़कर अपनी दादी को बुला लाया। दादी उसे बड़े ही प्यार से चुप कराने लगी तो वह बोला, 'माँ, तुमने मेरी इतनी सेवा की पर कभी मुझसे मेरा नाम तक नहीं पूछा। यह भी जानने की कोशिश नहीं की कि मैं हिन्दू हूँ या मुसलमान ?'

यह सुनकर दादी अपने आँसुओं को आँचल से पोंछते हुए बोली-'बेटा, मैं नहीं जानती कि राम कौन है और कौन रहीम। मुझे तो केवल मेरे मेहमान की चिंता है कि कही उसकी सेवा करने में मुझसे कहीं कोई कमी ना रह जाए।' यह सुनकर मेजर सन्न रह गया।

तभी उसने देखा कि उसके सैनिकों की एक टुकड़ी उस ओर बढ़ी आ रही है। सैनिकों को लगा कि झोपड़ी के अन्दर और भी कई लोग हैं, जिन्होंने मेजर को बंदी बनाकर रखा हुआ है। उनमें से एक ने दादी की ओर निशाना साधकर बंदूक चला दी। मेजर यह देखकर हवा की गति से उनके सामने आ गया। गोली सनसनाते हुई सीधे जाकर उसके पेट में लगी। बौखलाए हुए सैनिक यह देखकर दौड़ते हुए उसके पास आ गए। टीपू मेजर के गले लगकर जोर-जोर से रोने लगा।

मेजर ने प्यार से उसे चूमा, एक लम्बी सिसकारी भरी और दादी के चरणों में अपना सर रखकर बोला- 'मैंने नमक का कर्ज अदा कर दिया माँ! हो सके तो मुझे माफ कर देना।' और यह कहकर मेजर शान्ति से सो गया हमेशा-हमेशा के लिए...। ■

आओ, फसलें उगायें फूलों की
बात हर्गिज करें न खारों की
ढूढ़ते फिर रहे हैं खुशियां सब
भीड़ है जग में गम के मारों की
अब कोई गैर हो न बेगाना
एक दुनिया हो बस यगानों की
लाटरी उसकी खुल गयी शायद
बाढ़ आयी है मेहरबानों की
मो'तकिद हम भी उनके हैं लेकिन
धूम अब है हमारी गजलों की
फिर मचा शहर में गदर 'नासिर'
"बंद हैं खिड़कियां मकानों की"

-- डा. मिर्ज़ा हसन नासिर

(ग़ज़ल संग्रह '**ग़ज़ल गुलज़ार**' से साभार)

इक घड़ी भी जियो इक सदी की तरह
जिंदगी को जियो जिंदगी की तरह
रास्ते खुदबखुद ही निकल आयेंगे
जब बहो तो बहो इक नदी की तरह
क्यों परेशान होते हो कल के लिए
जब खिलो तो खिलो इक कली की तरह
दूसरों के लिए भी उजाला बनो
जब जलो तो जलो रोशनी की तरह
नींद मे भी हैं पलकें बिछाये हुए
उड़के आ जाओ तुम इक परी की तरह
ये न सोचा था इतने करीब आओगे
हम मिले थे कभी अजनबी की तरह

-- डॉ डी. एम. मिश्र

अब न सता मुझे तू मेरा साथ छोड़ दे
वादे किये थे जो कभी तू आके तोड़ दे
मुझको ना सता और तू बेदर्द मसीहा
मुझको मेरे हाल पे ऐसे ही छोड़ दे
मुझको बता हबीब मेरे चाहता है क्या
मौजे-तूफां में मुझको ऐसे ही छोड़ दे
पशेमां ना मुझे तू कर ऐ मेरे संगदिल
मुझको तू शबे-हिज्र में ऐसे ही छोड़ दे
तू चाहे या न चाहे इख्तियार है तेरा
तश्नातलब मुझे तू ऐसे ही छोड़ दे

-- अरुण निषाद

मैं भी गुम माजी में था
दरिया भी जल्दी में था
एक बला का शोरो-गुल
मेरी खामोशी में था
भर आयीं उसकी आँखें
फिर दरिया कश्ती में था
एक ही मौसम तारी क्यों
दिल की फुलवारी में था ?
सहरा सहरा भटका मैं
वो दिल की बस्ती में था
लम्हा लम्हा राख हुआ
मैं भी कब जल्दी में था ?

-- प्रखर मालवीय 'कान्हा'

हमें चिरागों के लाले, तुझे है इससे क्या
ऐ गैर घर के उजाले, तुझे है इससे क्या
हमारे खून पसीने पे दावतें तेरी
हमें हैं सूखे निवाले, तुझे है इससे क्या
यकीन करके तेरी बात पे, ये हाल हुआ
सतायें आईने वाले, तुझे है इससे क्या
सितम का बोझ उठाते लरज रहे हैं कदम
कोई भी आ के सम्हाले, तुझे है इससे क्या
तेरा खिताब है मंजिल, मिजाज कठिनाई
पड़ेंगे पाँव में छाले, तुझे है इससे क्या
तुझे तो उजले लिबासों को पूजना है 'होश'
भले हों दिल के वो काले, तुझे है इससे क्याा
पड़ेंगे पाँव में छाले,
तुझे है इससे क्या
तुझे तो उजले लिबासों
को पूजना है 'होश'
भले हों दिल के वो
काले, तुझे है इससे क्या

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

संस्कृति केवल वही है जिसमें मानवता बसे
ईश के सागर की जानिब कर्म की गंगा बहे
भारतीय संस्कृति में ऐसे ढेर सारे तत्व हैं
योग बनकर संतुलन में जो हमें प्रतिपल रखे
शांति को जीवन में हमने धर्म के स्वर हैं दिये
प्राण की बाजी लगाकर सत्य-पथ पर हम चलें
शोध मानवता पे केवल अपने भारत में हुआ
बात इतनी सी है लेकिन विश्व यह कैसे कहे?
हमने भौतिकवाद को अध्यात्म के पीछे रखा
सत्य को पहचानकर ही
हम सदा आगे बढ़े
'शांत' शिक्षा पर, व्यवस्था
पर नजर अपनी टिकी
आधुनिक भारत उपेक्षा
इस विषय पर क्यों सहे?

-- देवकी नन्दन 'शान्त'

फूल बागों में खिले ये सबके मन भाते भी हैं
मंदिरों के नाम तोड़े रोज ये जाते भी हैं
चाहे माला में गुंथे या केश की शोभा बने
टूट कर फिर डाल से ये फूल मुरझाते भी हैं
इनका हर रूप-रंग और सुरभि भी पहचान है
डालियों पर खिलके ये भौरों को ललचाते भी हैं
फूल चंपा के खिलें या फिर चमेली के खिले
गुल ये सारे बाग के मधुबन को महकाते भी हैं
भोर उपवन की सदा तितली से ही गुलजार है
फूलों का मकरंद पीने
भौरे मँडराते भी हैं
पेड़ पौधों से सदा
हरियाली जीवन में रहे
फूल पत्ते पेड़ का
सौन्दर्य दरशाते भी हैं

-- शशि पुरवार

दूर रहकर हमेशा हुए फासले, चाहे रिश्ते करीबी कितने भी हों
कर लिये बहुत काम लेन-देन के, बिना मतलब कभी तो जाया करो
पद पैसे की इच्छा बुरी तो नहीं, मार डालो जमीर कहाँ ये सही
जैसा देखेंगे बच्चे सीखेंगे वही, पैर माँ बाप के भी दबाया करो
काला कौआ भी है काली कोयल भी है, कोयल सभी को भाती है क्यों
सुकूँ दे चैन दे अपने दिल को भी, मुँह में ऐसे ही अल्फाज लाया करो
जब संघर्ष हो तब ही मंजिल मिले, ये सुविधा नहीं यार जीवन में है
जिस गली जिस शहर में चला सीखना,
दर्द उसके मिटाने भी जाया करो
यार जो भी करो तुम सँभलकर करो,
सर उठे गर्व से ना झुके शर्म से
वक्त रुकता है किसके लिए ये 'मदन',
वक्त ऐसे ही अपना ना जाया करो

-- मदन मोहन सक्सेना

खामोशियाँ बोलें तो सुनने का मजा कुछ और है
दर्द-ए-दिल चुपचाप सहने का मजा कुछ और है
तैरना लाजिम है माना पार जाने के लिए
पर नदी के साथ बहने का मजा कुछ और है
ये महल वाले ना समझे हैं ना समझेंगे कभी
दोस्तों के दिल में रहने का मजा कुछ और है
गीत महफिल में सुना कर वाह-वाह मिलती है पर
तनहाई में गुनगुनाने का मजा कुछ और है
आँसूओं में डूब जाने वाले इतना जान ले
अश्क पी कर मुस्कुराने
का मजा कुछ और है
फानूस करता है हिफाजत
शमा की माना मगर
आंधी-तूफानों में जलने
का मजा कुछ और है

-- भरत मल्होत्रा

बरसात का ये मौसम, कितना हसीन है!
बादल-धरा का संगम, कितना हसीन है!
जाती नजर जहाँ तक, बौछार की बहार
बूँदों का नृत्य छम-छम, कितना हसीन है!
कागज की किश्तियों में, तिरते ये बाल गण
औ' भीगने का ये क्रम, कितना हसीन है!
विहगों की रागिनी है, कोयल की कूक भी
उपवन का रूप अनुपम, कितना हसीन है!
झूलों पे पींग भरतीं, इठलातीं तरुणियाँ
सावन सुनाता सरगम, कितना हसीन है!
मित्रों का साथ हो तो, आनंद दो गुना
मुस्काता मंद आलम,
कितना हसीन है!
हर मन का मैल मेटे,
सुखादाई मानसून
हर मन का नेक हमदम,
कितना हसीन है!

-- कल्पना रामानी

प्रेम का कर्ज

सुशीला बैंक में नौकरी करती है, उसके पति भी अच्छी नौकरी में हैं। दोनों ने बड़ी मेहनत और मुश्किलों से घर गृहस्थी को संभाला और बढ़ाया। परिवार से लेकर नौकरी तक तमाम संघर्ष किये, मगर कभी टूटा हुआ महसूस नहीं किया। जब भी दोनों में से किसी एक को भी लगता कि दूसरा थक रहा है, जिन्दगी की दौड़ में कमजोर पड़ रहा है, तो तुरंत दूसरा आगे बढ़कर उसका मनोबल बढ़ाता। इसी उधेड़बुन में तीस साल निकल गए विवाह के, लेकिन मन में सुकून था कि उनके बच्चे अच्छी तरह सेटल हो गए। बेटी अच्छा कमा रही थी और खुशकिस्मती से उसका विवाह भी अच्छे घर में हो गया था। छोटा बेटा कनाडा चला गया था सर्जन हो गया था वहीं।

सुशीला को कभी-कभी बहुत बुरा लगता, लेकिन सोचती कि वही तो चाहती थी कि उसका बेटा बहुत बड़ा आदमी बने और विदेश में सेटल हो। दुनियाँ देखे कि उसके बच्चे कितने लायक हैं। लेकिन आज सुशीला का मन अंदर ही अंदर टूट रहा था, योगेश भी खामोश था। घर में एक सन्नाटा था। सुशीला को अनिकेत के दोस्त ने बताया था कि अनिकेत की शादी है, कनाडा में हीं कोर्ट मैरिज कर रहा है वो चार दिसंबर को। सुशीला सन्न रह गयी थी। ४ दिसंबर, चार दिन बाद ही थी, तो क्या बेटे ने माँ बाप को बुलाया तक नहीं।

सुशीला ने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा और इसलिए उसने रूठे बेटे को मनाने का प्रयास नहीं किया। दरअसल अनिकेत अपनी डाक्टरी की पढ़ाई के समय से ही शालिनी को चाहता था दोनों एक दूसरे को बहुत पसंद करते थे ,लेकिन योगेश और सुशीला को शालिनी बिल्कुल पसंद नहीं थी। वे अपने ही रुतबे का घर चाहते थे और शालिनी एक साधारण परिवार से थी।

बहुत समझाने पर भी अनिकेत ने शालिनी का साथ नहीं छोड़ा था और दोनों पढ़ाई करते करते ही एक साथ कनाडा चले गए थे। उस समय सुशीला को बहुत गुस्सा आया था कि लड़की तो पीछे ही पड़ गयी और इसी बात पर उसने अनिकेत को बहुत सुना दी थीं, लेकिन अनिकेत ने शालिनी को छोड़ने से मना कर दिया था। गुस्से में योगेश ने उसे घर छोड़ने की धमकी दे दी थी और वह जब से गया था तब से नहीं आया था।

लेकिन आज दोनों ही एक-दूसरे को देख रहे थे, जैसे पूछ रहे हों- क्या इसलिए इतना संघर्ष किया दोनों ने? दोनों की आँखों में आँसू थे। लेकिन सुशीला की समझ में आ गया था कि हमने प्यार को प्यार रहने ही कहाँ दिया हार और जीत का खेल बना दिया। लेकिन अब वो इस खेल में अपना बेटा नहीं हारेगी और उसने कनाडा जाने की तैयारी शुरू कर दी थी। बेटे को समय रहते मनाने की तैयारी, जानती थी उसका ही खून है गलत बात पर नहीं झुकेगा और नहीं चाहती थी कि वो टूट जाये। जानती थी कि वो अंदर ही अंदर टूट रहा होगा लेकिन कहेगा नहीं। योगेश को भी समझ में आ गया था कि प्रेम में अहम् के कारण घर नहीं टूटने देगा और बेटे की खुशी को भी संम्मान देगा।

आज सुशीला अनिकेत का ध्यान ही कर रही थी की उसका फोन आ गया था उसे पता चल चुका था कि उसकी माँ उसके पास आ रही है और रोक नहीं पाया था खुद को। प्रेम का कर्ज कब किसको चैन लेने देता है! प्रेम का कर्ज जिस पर भी चढ़ा होता है वो उसे बहुत दिन अपने ऊपर नहीं रख पाता और प्रेम के बदले प्रेम प्रस्फुटित हो ही जाता है।

-- अंशू प्रधान

मैं चोर नहीं...

माँ की असमय मौत ने गुलाल से उसका सुरक्षित गढ़ छीन लिया। अब वह पाँच वर्ष का नन्हा सहमा ‘सहमा रहने लगा। लोगों ने सलाह दी -दूसरी शादी कर लो बच्चा माँ पाकर खिल उठेगा। दूसरी शादी हो गई।

गुलाल उसे माँ न कह सका, कहने की कोशिश भी करता तो जीभ तालुए में चिपक जाती। पापा कबीर ने कुछ समय के लिए होस्टल पढ़ने भेज दिया, शायद समय उसके घाव को भर दे और गुलाल नई माँ के रिश्ते को इच्छा से ओढ़ ले। दो वर्ष तो वह होस्टल में रहा पर तीसरे वर्ष उसे घर बुला लिया गया बिना बच्चे के कबीर का मन नहीं लग रहा था। गुलाल के आते ही उसके पापा बोले- ‘बेटा अब तुम अपने घर आ गये हो।’ सुनते ही मासूम का चेहरा चमक उठा। ‘जो चाहिए ले लेना या अपनी माँ से कह देना। माँ शब्द ने उसके चेहरे की चमक को डस लिया।

एक दिन कबीर शाम की बजाय दोपहर को ही आफिस से घर आ गये। किसी के रोने की आवाज सुनकर उनका दिल दहल उठा। अन्दर जाकर देखा- गुलाल कुर्सी पर बैठा है। लेकिन उसके दोनों हाथ-दोनों पैर रस्सी से बंधे हैं। पापा को देखते ही गुलाल बदहवास सा चिल्लाने लगा- ‘पापा मैं चोर नहीं हूं, मेरी रस्सी खोल दो। मैं चोर नहीं हूं।’

‘क्यों रे, झूठ बोलता है। दो दिन से बराबर चोरी कर रहा है। तेरी सजा यही है, न हिलेगा, न बिना पूछे कुछ उठाएगा।’ पत्नी का ऐसा रौद्र रूप कबीर पहली बार देख रहे थे। अपने को काबू में रखते हुए पूछा- ‘बेटा, तुम्हें रस्सी से क्यों बाँधा?’

‘पापा, पापा मैं चोर नहीं, बस लड्डुओं को देखकर खाने को मेरा जी चाहा सो खा लिये। आप ने ही तो कहा था यह घर मेरा है। फिर लड्डू भी तो मेरे हुए। बोलो पापा मैं ठीक कह रहा हूं मैं चोर तो नहीं ।

‘आप इसको बिगाड़ कर रख देंगे, होस्टल भेजना ही ठीक है इसको।’

‘जरूर होस्टल भेजूँगा, लेकिन उसे नहीं तुम्हें। जिस स्कूल में गुलाल था वहाँ एक शिक्षिका की जगह भी खाली है। तुम जैसे पढ़े लिखे और समझदारों को इतना अच्छा अवसर नहीं गंवाना चाहिए और हाँ, वे रहने की जगह उसी होस्टल में देंगे जहाँ गुलाल रहता था। आनंद ही आनंद! छुट्टियों में घर आ जाना या तुमसे मिलने हम वहाँ पहुँच जायेंगे।’

‘आप तो अच्छा मजाक कर लेते हैं। मैं आपके बिना कैसे रहूँगी फिर आपको भी तो मेरी याद आएगी।’

‘याद तो आयेगी, लेकिन गुलाल के बिना रह सकता हूं तो तुम्हारे बिना भी रहना तो पड़ेगा ही।’

‘अपनी बात तो कह दी मैं तो नहीं रह...।’

कबीर ने उसकी बात काटते हुए कहा- ‘जब गुलाल रह सकता है मेरे बिना, तो तुम भी आदत डाल लो।’ पत्नी के चेहरे पर भय व आश्चर्य मिश्रित रेखाएं उभर आईं। वात्सल्य का झरना ऐसा सुखद था कि कबीर उसमें भीग गया और पितृ-प्रेम के आगे पत्नी-प्रेम फीका पड़ गया।

-- सुधा भार्गव

बहू बनाम बेटी

अचानक सहेली प्रभा की मौत की खबर सुन कमला तो जैसे अंदर तक हिल गयी। प्रभा की बहू का फोन आया और वो जाने की तैयारी में लग गयी। ट्रेन में बैठी-बैठी कमला उसी के बारे ही सोच रही है। कुछ दिन पहले ही प्रभा का पत्र आया था कि बहू का मेरे प्रति व्यवहार बिलकुल भी ठीक नही है सम्मान की भावना तो दूर-दूर तक उसके मन में नहीं आती है। अति व्यसत्तता के चलते ज्यादा तो नहीं केवल एक बार ही प्रभा के घर जा सकी थी, तब मुझे तो उसके व्यवहार में कोई कमी नहीं दिखी थी।

आखिर चार घंटे के सफर बाद प्रभा के घर पहुंच गयी। बहू तो मुझसे लिपट कर दहाड़ें मारकर रोने लगी। विनय भी मुहँ लटकाए खड़ा था। आखिरकार एकांत पाकर बहू और विनय ने मुझसे बात की- ‘माँ जाते-जाते एक पत्र लिख गयी है, जिसके अनुसार उसे बहू ने मरने को उकसाया है। हम दोनों बहुत परेशान हैं। हमारा एक साल का नन्हा बच्चा भी है। अगर नेहा को जेल होती है तो बच्चे का क्या होगा? आंटी जी हमने तो हर तरह से माँ को खुश रखने की कोशिश की पर उन्हें हमारी हर बात गलत ही लगती थी। माँ तो अपनी सांस की बीमारी से मरी है। कौन अपनी माँ को मरने को छोड़ेगा। बराबर डाक्टर देखने आता था।

बहू को अभी तो जमानत पर छोड़ा गया है। मैंने बहू को बचाने को अपनी मोरल ड्यूटी समझा और मैंने बहू और विनय के साथ उसी वक्त पुलिस थाने पहुंचकर अपना बयान दर्ज कराया और बहू को केस से मुक्त होने

(शेष पृष्ठ ११ पर)

कविता कुंज

तुमसे ही यह धरती सुन्दर है
तुमसे ही इस धरती पर बचा जीवन है
कोटि कोटि प्रकाश वर्ष दूर रहकर भी तुम
धरती का कितना खयाल रखते हो
दिए गए ताप और उर्जा का/कभी हिसाब नहीं मांगते
ना ही दी हुई निःशुल्क सहूलियतों पर
किसी प्रकार का कोई टैक्स लगाते
तुम धरती कभी से नहीं कहते कि
कृतज्ञता वश अपने गर्भ में संचित
अपार खनिज वह तुम्हें सौंप कर
हो जाए खाली और
लिख दे अपनी गुलामी तुम्हारे नाम!

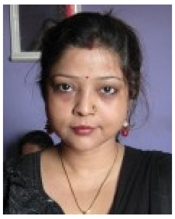

-- डा. भावना सिन्हा

अब ये दुनिया नहीं है भाती/तभी तुम्हें लिक्खी है पाती
खून-खराबा है गलियों में/छिपे हुए हैं बम कलियों में
है फटती धरती की छाती/तभी तुम्हें लिक्खी है पाती
उजड़ गये हैं घर व आँगन/छूट गये अपनों के दामन
यही देख के मैं घबराती
तभी तुम्हें लिक्खी है पाती
है बड़ी बेचौनी मन में
नफरत फैली है जन-जन में
नींद भी अब तो नहीं है आती
तभी तुम्हें लिक्खी है पाती!

-- डा. भावना कुँअर

नाज तो सदा ही रहा/अपने देश के जवानों पर
जो मर मिटते है हर घड़ी/करते फख्र बलिदानों पर
आज नमन मेरा उनके/घर और परिवार को
जो भेजते सीमा पर अपने/जिगर के टुकड़े लाल को
हम सुरक्षित हैं यहां पर/उनकी चौकसी शान से
जो रहते सीमा पर हरदम
अपने ही अभिमान से
शत् शत् नमन कारगिल फतह को
जिसने रचा एक इतिहास
आज भी गर्वित होता भारत
बढा है और इक विश्वास

-- एकता सारदा

तुम्हारा मौन सालता है बहुत/शब्द न सही आँखों से बोल
मौन की ये भाषा/मुश्किल नहीं यूँ तो पढ़ना
पर शब्द की बयानगी से/दर्द निकल जाता है
नफरत बह जाती है/तो तुम भी बह जाने दो ना दर्द को
मौन से तो ये दर्द जमता चला जाता है परत दर परत
और नफरत की बेल आधिपत्य जमा लेती है
फिर भला कैसे उगेगा
प्रेम का अंकुर दिल में
नफरतों से हासिल भी क्या
ये तो सिर्फ जलाती हैं
तन मन और आत्मा को
पर प्रेम... प्रेम तो सँवारता है...!

-- प्रवीन मलिक

काश! किस्मत लिखने की भी कलम कोई रहती
अपनी हाथ से मैं मनचाही किस्मत लिखती
प्यार का सागर लिखती खुशियों का आसमान
तब पूरा होते हमारे सभी ख्वाब और अरमान
मंजिल की राह के काँटों को हटा देती कलम से
एक ही बार में मंजिल तक नाप लेती कदम से
धरती से भी अधिक लिखती धैर्य और सहनशक्ति
पंछी से अधिक होती हौसले की उड़ान की गति
दीपक जैसा अंधेरा चीरकर देती ज्ञान प्रकाश
मेरे चमन की खुशबू से
रौनक होता जमीं आकाश
दीन-दुखियों को तन-मन-धन से
बनाती सच्चा साथी,
इतिहास के पृष्ठों पर अपना
स्वर्णाक्षरों में नाम लिख जाती।

-- दीपिका कुमारी दीप्ति

मैं निरन्तर टूट टूटकर,
फिर जुड़ने वाली वह चट्टान हूँ
जो जितनी बार टूटती है
जुड़ने से पहले
उतनी ही बार अपने भीतर
कुछ नया समेट लेती है
मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे बार-बार तोड़ते रहो
और मैं फिर-फिर जुड़ती रहूँ!

-- डॉली अग्रवाल

एक भेड़ के पीछे पीछे
खड्ढे में गिरती जाती पूरी कतार को/पूरी इस कौम को
इतनी सारी 'मैं'/हम न हो पायीं जिनकी अब तक
उनको चंहु ओर होते परिवर्तन से बेखबर चाबुक खाते
आधी आँखों पे पड़े परदे से सच आंकते
दुलत्ती भूल जो बस एक सीध में दौड़ लगाते, उन्हें भी
और बाहर निकलने की कोशिश में
टोकरी के खुले/मुहँ तक बस पहुँचने ही वाले
साथी केकड़े को खींच घसीटकर/वापस पेंदे में पटककर
समानता का जश्न मनाते वो सब
जुगाली करते किसी बिसरे युग की
आँखें मूंदे, ऊबते, जम्हाई लेते
फिर इसी संतुष्टि को उगल देते इर्द गिर्द
इसी भ्रमित पीढ़ी पे जो, उन्हीं को
इन्कलाब की आहट पर
उदासीनता की रेत में सर घुसेड़े
निश्चिन्त शुतुरमुर्ग को
सजे धजे, खाए पिए, खुद पे रीझते
बकरीद के बाजार के आकर्षण
बलि होती मासूमियत को
और खुले पिंजरे को कस कर भींचे
आदत से मजबूर, प्रेम को
हाँ, हम सभी को आजादी मुबारक!

-- डा. छवि निगम

वो जो अपनी माँ का एक बेटा था
वो आज बहुत उदास है!
बहुत बरस बीते
उसकी माँ कहीं खो गयी थी
उसकी माँ उसे नहलाती,
खाना खिलाती, स्कूल भेजती
और फिर स्कूल से आने के बाद,
उसे अपनी गोद में बिठा कर खाना खिलाती
अपनी मीठी सी आवाज में लोरियां सुनाती ..
और उसे सुलाती/दुनिया की नजरों से बचाकर रखती!
उस बेटे को कभी कुछ माँगना न पड़ा,
सब कुछ माँ ही तो थी,उसके लिए,
हमेशा के लिए उसकी दुनिया बस उसकी माँ ही तो थी
अपनी माँ से ही सीखा उसने/सच बोलना और हँसना
क्योंकि,माँ तो उसके आंसुओ को
कभी आने ही नहीं देती थी
माँ से ही सीखा, नम्रता क्या होती है
और मीठे बोल कैसे बोले जातें है
माँ से ही सीखा/कि हमेशा सबको क्षमा किया जाए
और सबसे प्यार किया जाए
बहुत बरस हुए, उसकी माँ वहां चली गयी थी,
जहाँ से कोई वापस नहीं लौटता,
शायद ईश्वर को भी अच्छे इंसानों की जरूरत होती है!
वो जो बच्चा था, अब एक/मशीनी मानव बना हुआ है
कई बार रोता है तेरे लिए/तेरी गोद के लिए
आज मैं अकेला हूँ माँ/और बहुत उदास भी
मुझे तेरे बिन कुछ अच्छा नहीं लगता है
यहाँ कोई नहीं, जो मुझे तुझ जैसा संभाले
तुम क्या खो गयी/मैं दुनिया के जंगल में खो गया
आज मुझे तेरी बहुत याद आ रही है माँ!

-- विजय कुमार सप्पत्ति

प्रगाढ़ प्रेम के परिचायक हो भानु तुम
सदियों से धरा का आंचल/स्नेह की हरियाली से
भरते आये हो/कण कण पुलकित तुमसे
हर जीव के तुम सरमाये हो
रश्मियों का पहरा भोर में/हर कली में तुम मुस्काये हो
निशा में शशि जब जब आकर
धरणी से तुम्हारा बिछोह करवाता है
फिर मिलन की आस लिए
तुम नयी सुबह संग लाए हो
युगों युगों से मिलन तुम्हारा
धरा के तुम हमसाये हो
जब जब तिमिर प्रहार करे
तुम दीप प्रज्वलित से आए हो
हो प्रेम के पारितोषिक तुम
हर युग मे जगमगाए हो
हे सूर्य ! तुम हो प्राण सभी के
हर जुग मे झिलमिलाये हो

-- मधुर परिहार

एक सिक्का दो पहलू

अप्रैल माह रविवार की एक भीगी भीगी सी सुबह थी। खिड़की से बाहर झांकती सुमन बोली, 'रमेश, बाहर देखो कितना सुहावना मौसम है। रात भर ओले और तेज बारिश के बाद बाहर कितना अच्छा मौसम हो गया है। बहुत दिन हो गए गर्मी में घर में बैठे बैठे। चलिए कहीं पिकनिक पर चलते हैं बच्चों के साथ।'

'ठीक है सुमन। तुम बच्चों को भी तैयार कर लो। पहले लम्बी ड्राइव पर चलेंगे और किसी रिसोर्ट में लंच करेंगे।' बिस्तर से उठते हुए रमेश बोला।

'जी, आज सारा दिन बाहर ही गुजारेंगे और रात को पिक्चर देख कर और बाहर ही खाना खा कर आयेंगे।' सुमन ने रमेश के गले लगते हुए कहा और गुनगुनाते हुए कमरे से बाहर निकल गयी।

रात भर तेज बारिश और कड़कती बिजली का शोर श्यामू के मन को दहलाता रहा। खपरैल की छत पर ओलों के गिरने की तीव्र आवाज सर पर पत्थर की चोट जैसी लग रह थी। रात भर वह अप्रैल के महीने में बे-मौसम बरसात और खेतों में खड़ी फसल के बारे में सोच कर सो नहीं पाया। कई बार खेतों में जाने की सोची, लेकिन बारिश की तीव्रता को देख कर वह मन मसोस कर रह गया।

सुबह उठते ही बाहर आकर देखा तो बादल साफ थे और वह पत्नी की नाश्ते के लिए आवाज अनसुनी करके खेतों की ओर भागा। ओले और तेज बारिश से नीचे जमीन पर पड़े गेहूँ की बालियों को देख कर उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं। अपने खेत में गेहूँ की कल तक लहलहाती बालियों को आज जमीन पर गिरी देख उसकी आँखों के सामने साहूकार, भूखे बच्चों और शादी के योग्य बेटी कमला की सूरत तैरने लगी। बेमौसम बरसात से अपने सपनों को जमीन पर कुचला पड़ा देख उसकी आँखों के सामने अँधेरा छा गया और वह अपने सीने को पकड़ कर जमीन में लेटी हुई गेहूँ की बालियों पर बेजान होकर गिर पड़ा। उसकी खुली आँखें एकटक खोज रहीं थीं आसमान के गर्भ में छुपे बेमौसम काले बादलों को।

-- कैलाश शर्मा

पाचनशक्ति

'हाँ हाँ !! हमारी कार है ले जाएगा बाजार! सारी दुनिया के बच्चे कार लेकर घूमते हैं। एक इनको हर बात पर टोकना होता हैं बच्चों को।' रसोई से अमृत जोर से चिल्लाते हुए बोली, '१८ साल से कम का हैं तो क्या? लगता तो २२-२४ बरस का है! अब यह तो कनाडा जाकर बस गए और हमें छोड़ गए इन बूढ़ों से माथा-पच्ची को! कौन सा दिन आएगा जब हम यह घर बेच कनाडा जायेंगे। फोन आते ही शिकायतें लगाने बैठ जाएंगे, यहाँ दर्द, वहां दर्द, बस जबान ही दर्द नहीं करती इनकी बोलते हुए।'

अमृत का बड़बड़ाना लगातार जारी था, लेकिन उसकी आवाज बाहर गेट तक आ रही थी। बीजी चुन्नी में मुंह छिपाए रो रही थी और बाऊजी का चेहरा गुस्से से तमतमाया हुआ था- 'आने दे इस बार नानक को. मैंने कह देना उसे. ले जा इस मिटटी की ढेली को अपने साथ, हमारा घर है, हम अकेले रह लेंगे लेकिन आँखों के सामने बच्चों को गलत संगत में जाते नहीं देख सकते और न इसके इतने मीठे बोल सुन सकते अब। चुप कर! अबके साफ बात करेंगे जब फोन करेगा तो...।'

बूढ़े माता-पिता बहू पोते के रहमो-करम पर थे। अचानक घंटी बजी और हमेशा की तरह बाऊजी ने दरवाजा खोला- 'ओये! जी सदके! आज कुछ और ही मांग लेते सोहने रब से! पुत्तर तेरी उम्र बहुत लम्बी है।'

हैरानी से अचानक आये पति को देखती अमृत को अपनी धड़कन बुलेट ट्रैन की माफिक लगी। आज तो बीजी-बाऊजी उसकी शिकायत लगाकर उसका पति से झगड़ा करा देंगे। लेकिन जब पानी लेकर बाहर आई तो बीजी को कहते सुना, 'पुत्तर सब चंगा यहाँ, तेरी वोटी (पत्नी) खाना बहुत अच्छा बनाती हैं हमारे लिए, तेरा पुत्तर तो हमारे से पूछे बिना पानी भी नहीं पीता। जो कहे करता है।'

फिर बहू की तरफ देखकर बाऊजी बोले- 'अमृत जा कुड़िये पकोड़े बना आज तो बहुत कुछ पचाना है। आज हमने बेटे के अचानक आने की खुशी में।'

अमृत के चेहरे पर तनाव की लकीरें कुछ कम हुई और उसने देखा कनखियों से बीजी बाऊजी का हाथ दबाकर शांत रहने को कह रही थीं।

तौलिये से हाथ पोंछते हुए नानक बोला, 'पाचन शक्ति बहुत प्रबल है मेरे बीजी-बाऊजी की। मैंने सब सुना गेट पर खड़े होकर टैक्सी वाले को पैसे देते हुए।'

-- नीलिमा शर्मा (निविया)

(पृष्ठ ६ का शेष)

बहू बनाम बेटी

में अहम रोल अदा किया ऐसा करके मैंने अपनी बेटी समान बहू को मुश्किल में पड़ने से बचाया। उसी दिन से बहू ने मुझे अपनी माँ माना और मैंने सहेली की बहू को अपनी बेटी।

-- शान्ति पुरोहित

समय का फेर

समय के साथ सोच बदलता है या अलग अलग मनुज की अलग-अलग सोच होती ही है समय काल कोई भी हो। मेरी शादी में एक दूर के रिश्ते की ननद से मेरी मुलाकात दो चार दिनों की हुई वो बहुत सुलझी हुई लगी। एक दो साल बाद उनकी भी शादी हुइ।

मेरी जब उनसे मुलाकात हुई तो मैंने उनसे पूछी, 'आप सम्बन्ध विच्छेद कर नई जिंदगी क्यों नहीं शुरू करतीं?' उनका जबाब था, 'जैसी किस्मत मेरी! भाभी उनमें एक ही कमी है, पर वे बहुत अच्छे इंसान हैं। फिर क्या पता दूसरा इंसान कैसा मिले। इतने अनाथ बच्चे हैं दुनिया में किसी को गोद ले अपने आँचल भर लूंगी।'

करीब २६-३० दिन बाद मेरे पड़ोसी की लड़की की शादी हुई। फिर एक बार लड़के वालों के धोखे की शिकार एक लड़की हुई। लड़की दो तीन दिन में ही लड़के को तलाक दे अपने नौकरी पर लौट गई।

दोनों लड़कियों के नजरिये से दोनों का निर्णय मुझे सही लगा। हम हमेशा अपने को आजमायें। खुद में जितनी सहनशक्ति हो उतनी ही क्षमता की कार्य करें।

-- विभा रानी श्रीवास्तव

दर्द

सुनीता के फोन रिसीव करते ही उसकी सहेली नेहा की शिकायती आवाज सुनाई दी, 'क्या सूमी! कहाँ थी यार? कितनी बार कॉल किया, अब जाकर अटेंड किया तूने।'

सुनीता ने हँसकर कहा, 'नहीं नेहा, मैं थोड़ा खाना बना रही थी इसलिए थोड़ी देर हो गई।'

नेहा आश्चर्य से बोली, 'क्या क्या क्या...अब तू सिक्सटी प्लस में भी खाना बना रही है? तेरी बहू और लड़के कहाँ हैं?'

सुनीता ने बताया कि उसकी बहू-लड़के नौकरी कर रहे हैं, उन्हें इतनी फुर्सत कहाँ मिलती है। इसलिए धीरे-धीरे भोजन बनाकर अपना पेट भरती हूँ और कभी-कभी भोजन जल जाने पर दूध-ब्रेड खाकर दिन गुजार देती हूँ।

नेहा ने बताया- 'मैं भी इसी दर्द को झेल रही हूँ। अथक परिश्रम का क्या यही फल है?' सुनीता की आँखें गीली हो गईं।

-- पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'

छुपा आगोश में अपने इबादत भूल जायेंगे
हमारा साथ दो गर तुम मुहब्बत गुनगुनायेंगे
न जाना भूल बैठे हम सितारों को बिछा पथ में
तुम्हारे दिल में घर हम इक मुहब्बत का बनायेंगे

-- गुंजन अग्रवाल

अपना होकर भी जब उसने साथ निभाना छोड़ दिया
मेरे गीतों-गजलों ने भी उसको गाना छोड़ दिया
साकी ने मय देने में जब मुझसे बेईमानी की
साकी तो साकी है मैंने वो मैखाना छोड़ दिया
मैं न हुनर सिख पाया अब तक दोहरा जीवन जीने का
दिल न मिला जिससे भी उससे हाथ मिलाना छोड़ दिया
जिन रिश्तों में थोड़ी सी भी कडुआहट महसूस हुई
मैंने उन रिश्तों के दर पर आना-जाना छोड़ दिया
दिल से किसी ने जो भी दिया वो माना खजाने से बढ़कर
अहसानों के साथ दिया
तो मैंने खजाना छोड़ दिया
सारा जमाना क्या सोचेगा-
इसकी कुछ परवाह न की
मैंने अपना दोस्त न छोड़ा
सारा जमाना छोड़ दिया

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

अकुलित हो रहा गर्भ में कोई गीत है
अंग करते हैं किलोल गर्भ में कोई गीत है
मन प्रफुल्लित हो रहा गर्भ में कोई गीत है
प्रसव का हो गया समय गर्भ में कोई गीत है
वेदना प्रसव की मुख पर है छाई हुई
मन हिलोरें ले रहा जन्मता कोई गीत है
नौ माह कोख में माँ ने बालक को रखा
नौ पल मैंने भी अपने गीत को मन में रखा
वेदना व सुख का अनुभव हर पल मैंने किया
गीत मेरा जन्म ले ले प्रार्थना मैंने किया
सलोना हो रूप उसका जैसे बालकृष्ण का
कल्पना में रूप उसका यही मैंने धारण किया

-- डा. अ. कीर्तिवर्धन

मैं उड़ने के सपने संजोती रही, वो मेरे पंख काटते रहे
मैं चन्द खुशियां तलाशती रही, वो मुझे घाव बांटते रहे
कुछ यूं दी जमाने ने, बेटी होने की सजा मुझे
कि बेटों की फसल से, जैसे खरपतवार छांटते रहे
सांसें तो क्या, मेरी सोच तक पर पहरे बिठाए हैं
सदमे में हूं, तमाम प्रतिबंध सिर्फ मेरे लिए क्यूं लगाये हैं
समाज के ठेकेदारों से, पूछने की कोशिश तो बहुत की
मगर यहां सबने, चेहरे के ऊपर कई मुखौटे लगाये हैं
यूं तो करते हैं मेरा पूजन भी, देवी बना आरती भी उतारते हैं
बहू चाहिये तो, बेटी की महिमा भी खूब विचारते हैं
पर इस पुरुष प्रधान समाज में, उसी मातृ शक्ति को
कभी तेजाब से जलाते हैं, कभी दहेज की खातिर मारते हैं
ना मेरी सोच अपनी है, ना मेरे सपने सपने हैं
जो जिम्मेदार हैं मेरी इस हालत
के, वो मेरे खास अपने हैं
जन्म से लेकर जाने तक,
मेरी बस यही कहानी है
इस घर भी गम के आंसू हैं,
उस घर भी दर्द का पानी है

-- सतीश बंसल

दिल में जब अंगार भरे हो, कैसे फिर श्रृंगार लिखू
आँखों में अश्रुधारा ले, कह दो कैसे प्यार लिखूँ
जिसने हरदम हमला बोला, मेरे देश की धरती पर
क्यों ना फिर मैं खुल के उनको
भारत का गद्दार लिखूँ
जात पात और धर्म की आड़ ले
मत उनको मासूम कहो
हां वो कातिल मानवता के
खुल के मैं हर बार लिखूँ

-- मनोज डागा

वो पीपल का पेड़ जिसके नीचे खड़ी होकर
मैंने घंटों तक देखा रस्ता तुम्हारा
फिर भी नहीं आए तुम
वो पेड़ आज भी घूरता है मुझे
और पूछता है कई सवाल कि
मैंने क्यों खोद डाला उसकी जड़ों को
अपने नाखूनों से तुम्हें याद करते

-- सरिता दास

सांझ की सरगोशी में लिपटे हुए ये अनमोल यादें
आज भी सुरक्षित हैं किसी बेशकीमती नगीने की तरह
जब बारिश की बूंदों संग लहराती है मदमस्त पवन
दिल के हर कोने में बज उठते हैं असंख्य मधुर झंकार
जब कभी देखती हूँ, स्वर्ग से उतरती हुई भोर
संग अनगिनत किरणें
बिखर जाती हैं अनंत एहसासों
संग ख्वाहिशों की रंगिनियाँ
जीवन के उतार-चढ़ाव में उम्मीदों
से भरी ये तुम्हारी शोखियाँ
आज भी बुलाते हैं मुझे..
पास पास और बहुत पास

-- संगीता सिंह 'भावना'

रख दिया हाथ सिर पर किसी ने/तो साया बन गया
मुसकाया देख कर मुझको/तो हँसना आ गया
रखा पाँव पर पाँव किसी के/तो चलना आ गया
पकड़ कर उंगली दिखाई चौखट/दुनिया रंगना आ गया
दिलाया हौसला इतना कि/उड़ना आ गया
जुटाये मेहनत के दाने/तो खजाना बन गया
टुकड़ा टुकड़ा बंटता रहा पिता/अब बूढ़ा हो चला है
पसीने से, लथपथ रहने वाले हाथों की नमी सूख चली है
आँखों में रंग हीन सा मोतिया बिन्दु चाहता है
तुम्हारी आँखों की चमकीली रोशनी
आँखों में उमड़ आया करते थे
जो आँसू तुम्हारी यादों में
वो आँसू स्थाई हो चले हैं
दिखाया था आकाश पिता ने
तुमको उड़ने के खातिर
लेकिन तुमने तो उस जमीन को ही भुला दिया
जिस पर टिका था तुम्हारी सफल उड़ान का वजूद!

-- कल्पना मिश्रा बाजपेई

गीत

सुनो सुनो ए राष्ट्र कलंको

सुनो सुनो ए राष्ट्र कलंको, सुनो दलालो भारत के
सुनो सुनो गीदड़, सियार, ढोंगी घड़ियालो भारत के
सुन लो वृद्ध अवस्था में बौराये जेठमलानी जी
सुनो शत्रुघन सुनो आजमी, नहीं चली शैतानी जी
सबसे तेज खबर के पंडित पापी पुण्य प्रसून सुनो
अभय दुबे-सागरिका जिनका सूख गया है खून सुनो
आतंकी पर रोने वाले सैफ और सलमान सुनो
दिल्ली के अरविन्द, शाजिया, संजय सिंह, खेतान सुनो
सुनो सानिया, सुनो तीस्ता और अकबरुद्दीन सुनो
डर्टी पिक्चर करने वाले शाह नसीरुद्दीन सुनो
कलकत्ता की कोरी ममता, सचिन पायलट लाल सुनो
अबू आजमी, सिद्धरमैया, भूषण से बेहाल सुनो
सुन आजम, सुन ले शकील, कुंठित ईमाम बुखारी सुन
ओ पागल ओवैसी, ड्रामा नहीं रहेगा जारी सुन
ये नितीश लालू फांसी पर करते बड़ा कलेश रहे
इनके साथ खड़े भी देखो यू पी के अखिलेश रहे
सुनो द्रोहियों के हाथों में पल भर में बिकने वालो
राष्ट्रपति को क्षमा दान की चिट्ठी तक लिखने वालो
चिट्ठी लिखने वालों ने गंगा में कीचड़ घोल दिया
चिट्ठी ने भी चीख चीख इन सबका चिट्ठा खोल दिया
छाती पीटो आंसू डालो सबका चेहरा साफ हुआ
सबसे बड़ी अदालत का सबसे धाँसू इन्साफ हुआ
विस्फोटों में जो तड़पे थे उन सबका अरमान कहे
गद्दारों पर रहम नहीं हो
ये 'गौरव चौहान' कहे
राष्ट्रप्रेम की माटी में
मजहब की उगती दूब नहीं
रह पायेगा हरगिज जिंदा
अब कोई याकूब नहीं

-- गौरव चौहान

कोई न खेवनहार, लगा दो गुरुवर नैया पार
चारों ओर घना अँधियारा, दिखता नहीं है कोई किनारा
टूट गई पतवार, लगा दो गुरुवर नैया पार
तुझको छोड़ कहाँ मैं जाऊँ तू ही दिखे जहाँ मैं जाऊँ
तुम अनन्त अविकार, लगा दो गुरुवर नैया पार
जीवन का विज्ञान सिखा दो, मन से तम-अज्ञान मिटा दो
ज्ञान-ज्योति भण्डार, लगा दो गुरुवर नैया पार
तन में भर दो अविरल शक्ति, मन में भर दो अविचल भक्ति
कृपा-सिन्धु करतार, लगा दो गुरुवर नैया पार
तुम हो ब्रह्माच्युत शिवशंकर, आदिदेव हो मुरलीमनोहर
तुम ब्रह्म-रूप साकार,
लगा दो गुरुवर नैया पार
माया-मोह, लोभ के बन्धन
जकड़ उठा है मेरा तन-मन
'भान' गये थक-हार,
लगा दो गुरुवर नैया पार

-- उदय भान पाण्डेय 'भान'

लम्बी कहानी (दूसरी किस्त)

लव जिहाद और आईने का सच

सुधीर मौर्य

कादिर और डॉली ने एक दूसरे को देखा और छलकते आंसुओ के साथ एक-दूसरे को गले लगा लिया। यूँ इतने दिनों बाद कादिर को सामने पा कर वो नारंगी लड़की हरे रंग की चादर ओढ़ने को मचल उठी।

‘कमरे के सामने से गुजर रहे लड़की के बाप के कानों में लड़की के सिसकने और लड़के के हांफने की आवाज पड़ी। माजरा समझ कर उसने फोन करके गेरुए संगठन के कार्यकर्ता बुला लिए। उसकी गेरुए संगठन में अच्छी पैठ जो थी।’

‘गाली-गलौज और चिल्लम-चिल्ला के बीच डॉली ने डरते-सहमते दरवाजा खोला और सहम कर एक और दुबक गई। कादिर बेड पे बैठा था बैखौफ। मुहब्बत करने वाले खौफजदा जो नहीं होते। बिस्तर की सिमटी चादर, डॉली और कादिर के अस्त-व्यस्त कपड़े पूरा अफसाना बयां कर रहे थे।’

‘कादिर के बैखौफ अंदाज ने उन पाखंडी गेरुए वालिंटियरों को पागल बना दिया और वे जानवर की तरह कादिर को धुनने लगे। लात-घूसों, लाठी-डंडों और लोहे की राडों से। लड़की का बाप अपनी नारंगी लड़की के जिस्म पे नीले-हरे दाग बना रहा था। उस दिन कादिर ने वहशी-दरिंदों की मार से दम तोड़ दिया और उसे उसी रात कहीं दफन कर दिया गया। डॉली कुछ दिनों बाद सदमे से गले में दुपट्टा डाल कर पंखे से झूल गई।’

‘अब तुम्हीं कहो कितने बेरहम होते है ये गेरुए वाले जो प्यार-मुहब्बत की समझ नहीं रखते।’ अब्दुल ने चाय का आखिरी घूंट भरके विजय की ओर देखा।

‘हम्म।’ विजय ने भी चाय खत्म की। उसका डर कुछ हद तक खत्म हुआ था। पूरा नहीं।

‘चलो तुझे एक कहानी और सुनाता हूँ।’ अब्दुल ने सिगरेट जलाकर कश लेते हुए कहा। एक सिगरेट उसने विजय को भी दी। अब्दुल विजय को पूरी तरह शीशे में उतार रहा था यानी लोहा गर्म देखकर हथौड़ा मार रहा था। विजय ने भी इस अंदाज में अब्दुल की ओर देखा मानो वो अगली कहानी सुनने को उत्सुक है।

‘एक बड़े गेरुए रंग वाले घर की खूबसूरत नारंगी रंग की लड़की थी। इसी साल स्कूल से निकलकर कालेज गई थी। उसके घर के सामने की सड़क के एक ओर स्कूल था और दूसरी ओर कालेज।’

‘कालेज जाने वाली सड़क के अगले नुक्कड़ पे एक पतंग बेचने वाली छोटी सी लकड़ी की दुकान थी। जिस पे सर पे जालीदार टोपी लगाये एक नया जवाँ मर्द पतंग बेचता था। देखने-सुनने में वो गरीब लगता था। उसकी एक बूढ़ी माँ थी जो दोपहर को दुकान पे ही उसे खाने के वास्ते रोटी दे जाती थी।

‘नारंगी लड़की अपनी स्कूटी पे उधर से गुजरती तो उसकी उड़ती जुल्फें देखकर वो पतंग बेचने वाला लड़का ख्वाबों में अपनी उड़ती पतंग के सहारे आसमान में उड़ता। और उसके ख्वाब में वो स्कूटी वाली नारंगी लड़की भी होती। लड़की जब कभी गर्दन मोड़कर जाने-अनजाने उस पतंग बेचने वाले लड़के को देखती तो वो लड़का अल्लाह से दुआ मांगता कि वो उस नारंगी लड़की को हिदायत दे और वो लड़की अपनी देह का नारंगी रंग खुरच कर उस पर हरा रंग चढ़ा ले।’

‘जरूर सज्जाद ने अल्लाह से दुआ मन से मांगी होगी। सज्जाद उस पतंग बेचने वाले लड़के का नाम था। तो उसकी दुआ अल्लाह ने कबूल की और वो स्कूटी वाली लड़की जिसका नाम सारिका था एक दिन स्कूटी खड़ी करके सज्जाद की दुकान में पहुँच गई। सारिका के होठ उस दिन जुगाली नहीं कर रहे थे। उसे च्युंगम चबाने की आदत थी और उस दिन वो घर से च्युंगम का पैकेट लाना भूल गई थी।’

‘सज्जाद ने पहली बार अपने ख्वाबों की महबूबा को अपने इतने करीब, अपने रूबरू पाया। उसने, उसकी आवाज भी पहली बार सुनी। आवाज सुनते ही वो अपनी दुकान से कूद कर एक ओर बन्दूक से निकली गोली की तरह भगा। लड़की अवाक उसे यूँ भागकर जाता देखती रही। उसने सोचा उसने ऐसा क्या कह दिया जो दुकान पर बैठा अच्छा खासा लड़का मिल्खा सिंह बन गया। उसने नार्मल ढंग से इतना ही कहा था- ‘आपकी दुकान में च्युंगम है ?’

‘सोचती लड़की अभी अपनी स्कूटी की ओर बढ़ना ही चाहती थी कि लड़का दौड़ता हुआ आकर उसके सामने खड़ा हो गया। हांफती साँसों के साथ लड़के ने अपनी बंद हथेली लड़की की तरफ खोली। उसकी हथेली पे कई तरह के च्युंगम चमक रहे थे। लड़की जान गई थी। लड़की की दुकान में च्युंगम नहीं थे और वो किसी दूसरे से च्युंगम लेकर हाजिर हो गया था। लड़के के हाथ से लड़की ने च्युंगम समेटे। यूँ पहली बार, पहली मुलाकात में दोनों एक-दूसरे की छुअन से सहमे। सिहरे, लरजे, शर्माए और मुस्कराये।’

‘अब लड़की रोज च्युंगम लाना घर से भूल जाती। लड़के की दुकान पर च्युंगम लेने के बहाने पहुँचती। लड़का, लड़की के पसंद के च्युंगम दुकान पे ही रखने लगा था। धीरे-धीरे बातों का दौर शुरू हुआ। एक-दूसरे के नाम जाने। एक-दूसरे के बारे में जाना। और यूँ नारंगी रंग की लड़की और हरे रंग के लड़के में अघोषित दोस्ती हो गई।’

‘लड़का सिर्फ पतंग बेचता ही नहीं था। बल्कि एक उम्दा पतंगबाज भी था। उसने कई पतंग प्रतियोगिता जीती थी। और यूँ जब शहर में अगली पतंग स्पर्धा थी तो उसने उसमें अपनी अघोषित दोस्त सारिका को भी बुलाया। सारिका ने भी पल भर में उसका दावतनामा कबूल कर लिया। सारिका, सज्जाद के इश्क में ढलने जो लगी थी। हरे रंग में रंगने को मचलने जो लगी थी।’

‘लड़की कालेज से सीधे उस जगह गई जहाँ पतंगबाजी की प्रतियोगिता थी। आज उसने फिरोजी साड़ी पहनी थी। ये रंग उसे हरे रंग वाले लड़के को पसंद जो था। लड़की की नजरें पतंग उड़ाते लड़के से मिली और लड़की की मुस्कान से लड़के के हौसले में चार गुना इजाफा हो गया।’

‘लड़का विजेता बना, ईनाम की ट्रॉफी ली और लड़की की फिरोजी साड़ी में खो गया। लड़के का असली ईनाम और जीत अभी बाकी थी। लड़की, लड़के को अपनी स्कूटी पे बिठाकर वहां से निकल गई। और लड़के का चेहरा कभी लड़की की उड़ती जुल्फें और कभी लहलहाते फिरोजी आँचल से ढकने लगा।’

‘यूँ वो स्कूटी की सवारी अभी शहर से सात-आठ मील दूर ही थी कि बारिश और तूफान ने उनकी रफ्तार रोक दी। लड़का का एक दोस्त वहीं पास के एक फार्म हाउस में नौकर था। सो उन दोनों ने भागकर वहां पनाह ली। बारिश में भीगते उस जोड़े की किस्मत जरूर बुलंद थी जो वहां सज्जाद के दोस्त के अलावा वहां कोई नहीं था। सज्जाद के दोस्त ने जब भीगी लड़की को देखकर कहा- ‘भाभी बहुत खूबसूरत है’ तो सज्जाद मुस्करा पड़ा और सारिका शर्म से उस बारिश में भी तप गई।’

‘सारी रात तूफान बाहर मचलता रहा और बंद कमरे में सारिका और सज्जाद के जज्बात अंगड़ाई लेते रहे। सारिका की फिरोजी साड़ी न जाने कब उतर गई। न जाने कब वो आपे से बाहर हुई। न जाने कब उसने सज्जाद को अपने ऊपर खींचा। न जाने कब उसने अपना कौमार्य सज्जाद पे लुटाया। कोई खबर नहीं। सारिका ने सज्जाद को अपना शौहर जो मान लिया था। उन दोनों की अघोषित दोस्ती आज रात घोषित मुहब्बत में बदल गई थी।’

‘सहर होते-होते बाहर और अंदर का तूफान शांत हो गया। लड़की ने ये तूफान पहली बार झेला था सो उसके सँभलते-सँभलते दिन चढ़ गया। जैसे-तैसे साड़ी बाँध वो घर जाने को उठी तो, उसके शिथिल अंग लरज गए। लड़का जानता था स्कूटी चलाना या फिर उसने लड़की के पीछे बैठकर सीख लिया था। होशियार जो था वो। लड़के और लड़की ने लड़के के दोस्त का शुक्रिया कहा और निकल पड़े सफर पे। लड़की ने लड़के की पीठ पर कन्धा रखकर आँखें बंद कर लीं।’

‘लड़के ने लड़की के घर के सामने स्कूटी रोकी। आलिशान माकन। राह लड़की ने ही बताई थी। लड़के के जाते वक्त लड़की ने उसकी और मुस्कराकर हाथ हिलाया। लड़का चला गया। पर लड़की और लड़के का मिलन समारोह और हाय-बाय आलिशान मकान के अंदर की कुछ आँखों ने देख लिया।’

(अगले अंक में जारी...)

अन्तर्मन

सविता मिश्रा

पेड़ के बगल ही खड़ी हो पेड़ से प्रगट हुई स्त्री ने पूछा, 'अब बताओ इस रूप में ज्यादा काम की चीज और खूबसूरत हूँ या पेड़ रूप में।'

पेड़ बोला, 'खूबसूरत तो मैं तुम्हारे रूप में ही हूँ, पर मेरी खूबसूरती भी कम नहीं। काम का तो मैं तुमसे ज्यादा ही हूँ।'

'न, मैं हूँ।'

पेड़ ने कहा, 'न, न, मैं'

पेड़ ने धोंस देते हुए कहा, 'मुझे देखते ही लोग सुस्ताने आ जाते हैं, जब कभी गर्मी से बेकल होते हैं।'

'मुझे भी तो।' रहस्यमयी हंसी हंसकर बोली स्त्री

'मुझसे तो छाया और सुख मिलता है आदमी को।'

'अरे मूर्ख मैं भी छाया और सुख प्रदान करती हूँ। आंचल से ज्यादा छाया और सुख कोई नहीं दे सकता।' अहंकार से भरकर इठला गयी स्त्री।

'मुझ पर लगे फल लोग खा के तृप्त होते हैं।'

'हा हा हा हा' जोर का ठहाका मारकर बोली, 'मुझसे भी तृप्त ही होते हैं।' कुछ शरमाई सी बोली

'मेरी पतली-पतली शाखायें लोग काटकर आग के काम में लाते हैं।'

'मैं स्वयं एक आग हूँ बड़े बुजुर्ग यही कहते हैं।' उसकी रहस्यमयी मुस्कान और बढ़ गयी थी।

'मैं आक्सीजन प्रदान करता हूँ।'

'मैं खुद आक्सीजन हूँ ! जिन्दगी देती हूँ ! मेरे से प्यार करने वाला मेरे बगैर मर जाता है। तुमसे भी प्यार करने वाले करते तो हैं पर तुम्हारे न होने पर मरते नहीं हैं।' गर्वान्वित हो बोली स्त्री।

'मैं उपवन को हरा-भरा रखता हूँ।'

'अरे महामूर्ख, मैं खुद उपवन ही हूँ ! मेरे बगैर इस धरती का सारा वैभव तुच्छ है।'

'मुझे लोग काटकर निर्जीव कर अपने घरों में सजाने के उपयोग में ले आते हैं।' थोड़ा दुखी हो वृक्ष बोला 'इससे अच्छा हैं मैं तुम्हारे इस स्त्री रूप में ही रहूँ। सच में तुम ज्यादा खूबसूरत और काम की हो। मैंने हार मान ली तुमसे।'

अहंकार खो सा गया यह सुनते ही। स्त्री बोली, 'नहीं, नहीं, वृक्ष मैं इस रूप में नहीं रह सकती। तुम्हारा निर्जीव रूप में ही सही शान से उपयोग तो लोग कर रहें पर मुझे तो ना जीने देते हैं, न मरने। तुम्हें निर्जीव कर तुम्हारे ऊपर आरी चलाते हैं पर मुझ पर तो जीते जी।' दुखित हो स्त्री बोली।

'ठहरो, मैं तुम में समा जाती हूँ फिर से। जादूगर ने कहा था न, सूरज डूबने से पहले नहीं समाई, तो मैं स्त्री ही बन रह जाऊँगी। हे वृक्षराज, मैं स्त्री नहीं वृक्ष रूप में ही ज्यादा सुरक्षित हूँ। और हर रूप में मानव को सुख देने में सक्षम रहूंगी इस वृक्ष रूप में। मानव स्त्री को तो नरक का द्वार कहकर घृणा भी करता है। तुम्हें यानि पीपल को पिता का रूप मान आदर देता है। मैं तुम्हारे रूप में ही रहकर सुकून पाऊँगी। मुझे अपने में समेट लो वृक्षराज।' विनती करती हुई सी बोली स्त्री।

दोनों ने जादूगर द्वारा दिए गये मन्त्र बोले और एक रूप हो गये। अँधेरा अपने पूर्ण यौवन में प्रवेश कर चुका था।

■

आत्म-ग्लानि

निशा मित्तल

कैलाश जी के पुत्र संदीप को घर से गये हुए आज पांच दिन बीत चुके थे। कैलाश जी बहुत दुखी थे और संदीप की माँ के तो रोते-रोते आंसू भी सूख चुके थे। एक बेटा और एक विवाहित बेटी के पिता कैलाश जी का परिवार अनुशासित और संस्कारी था। बेटी का विवाह हुए ३ वर्ष हो चुके थे। संदीप ने भी ग्रेजुएशन पूरा कर लिया था। १२वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात उसने इंजीनियरिंग की तैयारी की थी। किसी अच्छे संस्थान में ही प्रवेश लेना चाहता था संदीप। परिश्रम तो उसने पर्याप्त किया था, कोचिंग भी ली थी पर दुर्भाग्य से सफलता नहीं मिली उसको और किसी निजी संस्थान में मोटी धनराशि देकर प्रवेश लेने का वह इच्छुक नहीं था।

एक आयु के पश्चात स्वाभिमानी बच्चे अपने पैरों पर खड़ा होना चाहते हैं। संदीप भी सलेक्शन न होने के कारण अब किसी व्यवसाय से ही जुड़ना चाहता था अतः उसने सकुचाते हुए पिता से कुछ धन माँगा। कैलाश जी भी कोई बहुत धनवान तो थे नहीं और थोड़े बहुत धन में महंगाई के युग में कोई व्यवसाय करना बहुत कठिन है। कैलाश जी ने ६० हजार रुपए का प्रबंध कर उसके प्रस्तावित व्यवसाय के विषय में जानकारी लेते हुए, कुछ विशिष्ठ बातों का ध्यान रखने की सलाह देते हुए सौंप दिए। संदीप ने अपने एक मित्र के साथ व्यवसाय को चलाने में कड़ी मेहनत की, परन्तु कभी-कभी भाग्य भी साथ नहीं देता और संदीप को जबर्दस्त हानि उठानी पड़ी। दुखी तो संदीप भी बहुत था। हर समय उसके चेहरे पर उदासी रहने लगी थी।

कैलाश जी को व्यवसाय का कोई अनुभव नहीं रहा था। वो स्वयं शिक्षक ही रहे थे, लेकिन अपने धन की हानि वे सह नहीं सके और अब हर समय परिचित, घर में आने वाले के सामने संदीप के संदर्भ में टिप्पणी करते रहते। संदीप पहले ही आत्मग्लानि अनुभव कर रहा था, पिता का नकारात्मक व्यवहार उसको और भी दुखी कर देता।

संदीप की उदासी बढ़ती जा रही थी, माँ के कहने पर ही वह थोड़ा-बहुत भोजन कर लेता था। माँ भी संदीप के पिता को भी समझाने की कोशिश करती कि वो संदीप से ऐसा व्यवहार न करें। उसने किसी गलत कार्य में तो धन नहीं गंवाया, परन्तु कैलाश जी नहीं समझ पाए। अभी पांच दिन पूर्व ही संदीप के दो मित्र उससे मिलने आये थे, पिता पुनः वही विषय छेड़ बैठे। संदीप बिलकुल गुमसुम ही रहा। उसकी सहनशक्ति उसका साथ छोड़ चुकी थी। मित्रों के जाते ही वह जिस हाल में बैठा था, माँ से 'अभी आता हूँ' कहकर घर से निकल गया और उस दिन से घर नहीं आया। पुलिस में भी सूचना दे दी गयी थी, सभी रिश्तेदारों, परिचितों और मित्रों के यहाँ भी फोन करके पूछा गया परन्तु संदीप नहीं मिला।

सभी लोग परेशान थे, संदीप की बहिन नम्रता भी आ पहुंची थी अपने पति के साथ। भाई के लिए बहुत दुखी थी वो भी अपने पुत्र से एक पिता के रूप में प्यार तो कैलाश जी को भी बहुत था, परन्तु व्यवहारिकता की कमी के कारण संभवतः ये स्थिति आयी थी।

सातवें दिन पुलिस की ओर से सूचना मिली कि एक लड़का मूर्छित अवस्था में निकटस्थ रेलवे स्टेशन पर मिला है। कैलाश जी तुरंत अन्य लोगों के साथ वहाँ पहुंचे। वो संदीप ही था मैले कुचैले कपड़ों में। लोगों ने बताया कि ये लड़का स्टेशन पर ही छोटे-मोटे काम कर रहा था, हर समय यही बड़बड़ा रहा था, "मुझको पैसा कमाना है, पापा को बहुत दुखी किया है मैंने!"

कैलाश जी फूट फूट कर रोने लगे। डाक्टर के प्रयास से संदीप को होश आ गया था। कैलाश जी ने उसको गले से लगा लिया। संदीप पिता के चरणों में पड़ा था और कैलाश जी उसको उठा रहे थे। उनको अपने नकारात्मक व्यवहार के द्वारा की गयी गलती का अहसास हो गया था, धन ही सब कुछ नहीं है। गलती उनकी थी कि उन्होंने बेटे को कुछ सकारात्मक सुझाव देकर निराशा की स्थिति से बाहर निकालने के स्थान पर उस पर हर समय टीका टिप्पणी ही करते रहे, उनको ऐसा व्यवहार पुत्र की मनस्थिति को देखते हुए नहीं करना चाहिए था। सभी लोग घर पहुंचे, माँ को तो बेटे को देखकर जीवन दान ही मिल गया।

■

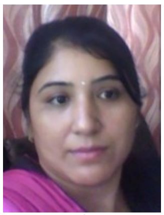

बाँट सकूं गम तुम्हारे
बस इतनी तमन्ना है,
खुशियों में गर शामिल
ना करो तो
कोई गम नहीं है

-- कामनी गुप्ता

गजलें

बंदगी के सिवा ना हमें कुछ गवारा हुआ
आदमी ही सदा आदमी का सहारा हुआ
बिक रहे हैं सभी क्या ईमां क्या मुहब्बत यहाँ
किसे अपना कहे, रब तलक ना हमारा हुआ
अब हवा में नमी भी दिखाने लगी है असर
क्या किसी आँख के भीगने का इशारा हुआ
आ गए बेखुदी में कहाँ हम नहीं जानते
रह गई प्यास आधी
नदी नीर खारा हुआ
शाख सारी हरी हो
गई, फूल खिलने लगे
यूँ लगा प्यार उनको
किसी से दुबारा हुआ

-- रामकिशोर उपाध्याय

उनको अपनी अक्ल पर गफलत पुरानी है तो है
बे वजह सी बात पर जहमत बुलानी है तो है
है जिन्हें हैवानियत से फिर मुहब्बत बे पनाह
उनको चादर फिर किसी तुरबत चढ़ानी है तो है
खा गए जो मुल्क की दौलत सरे बाजार में
भूख की बाकी बची हसरत मिटानी है तो है
राम अल्ला और जीसस एक हैं सबको खबर
साजिशों के वास्ते नफरत चलानी है तो है
जेल में है वह दरिंदा जिसकी दहशत बेशुमार
हर गली में कुछ न कुछ सोहबत निशानी है तो है
कुर्सियां उसकी ही होंगी ये भरोसा था उसे
आज फिर उसकी जुबां फुरकत कहानी है तो है
मंदिर-ओ-मस्जिद से जाते रास्ते भी मैकदे
इस तरह कुछ यार के
निसबत पिलानी है तो है
हक कभी मांगा तो दुश्मन
खास का ओहदा मिला
रहनुमाओं को यहां फितरत
दिखानी है तो है

-- नवीन मणि त्रिपाठी

कर्ज धरती माँ का वो अदा कर चले थे
अपना सब कुछ वतन पर लुटाकर चले थे
त्याग कर घर अपना छोटी सी उम्र में ही
राष्ट्रहित के पथ पर सीना तान कर चले थे
कभी न सोचा अपने सुख के लिए उन्होंने
देश की आन पर जान न्यौछावर कर चले थे
कभी न डरे,कभी न झुके जालिमों के आगे
वीरता से अंग्रेजों का मुकाबला कर चले थे
लड़ते रहे अपनी आखिरी सांस आने तक
खून का आखिरी कतरा
भी फना कर चले थे
तड़प उठा था तब भारत
माँ का सीना भी
जब स्वतंत्रता सैनानी
प्राण त्यागकर चले थे

-- प्रिया वच्छानी

चंद्रमा की छवि मनोहर मधुर रस टपका गई
चाँदनी की धवल चादर प्रेम से सहला गई
चन्द्र किरणों ने अनोखा सेतु जब निर्मित किया
नृत्य करती अप्सरायें भी धरा पर आ गईं
प्रेंति ने सुर ताल छेड़े नाद स्वर झेंत हुआ
जलधि की लहरें मचल कर व्योम से टकरा गई
प्रेम वश नक्षत्र सारे मुदित हो हँसने लगे
नवल कोमल रश्मियाँ भी
अवनि को नहला गई
देख अद्भुत द्रश्य नभ का
चकित सारा जग हुआ
चन्द्र की ये छवि मनोहर
अमिय रस बरसा गईं

-- लता यादव

खुशी की बात होठों पर गमों की रात होठों पर
चले आओ कि होने दो सनम बरसात होठों पर
बड़ा जालिम जमाना है फँसा देगा सवालों में
मैं आने दे नहीं सकता तुम्हारी बात होठों पर
नजर की बात नैनों से फिसलकर दिल में आ धमकी
हुई जो बात नैनों से बनी सौगात होठों पर
जुबां को लफ्ज देते हैं गजल को भी नजाकत दी
अदम या जानवर हो तुम
तुम्हारी जात होठों पर
तेरा आलोक आशिक है
गजल से इश्क फरमाए
कलम की नोक पर या
फिर मेरी औकात होठों पर

-- अनन्त आलोक

अक्ल गुमसुम-सी हुई है, जिस्म भी बेजान है
आ रहा है जिन्दगी में कौन-सा तूफान है
झांककर दिल में न देखो तो पता चलता नहीं
सिर्फ चेहरे से कोई होती कहां पहचान है
जानते हैं सब कि आना-जाना इसका खेल है
किसलिये दौलत पे करते सब यहां अभिमान हैं
ईद कैसी, चाँद कैसा, क्या खुशी उनके लिए
मुफलिसों के वास्ते तो
रोज ही रमजान है
किस दिशा में भागते हैं
लोग मैं समझी नहीं
आखिरी मंजिल ‘शुभी’
सबकी ही वो श्मशान है

-- शुभदा बाजपेयी

उन्हें पता है, जिसने बीज विष के बोये हैं
कैसे-कैसे अब तक किसान देश के रोये हैं
बन रहे महलों के साए में हैं किसके साए
भरी जवानी और बुढ़ापा जिसने खोये हैं
लह-लहाते खेतों से जो पालते रहे अरमाँ
हुए लहू-लुहान, आँसू आठ-आठ रोये हैं
कर्जों से लदा स्वाभिमान आखिर कब तक
अरमानों के लाश जिसने
कन्धों पे ढोए हैं
जी भरता नहीं भरा
नहीं, मिचलाता भी नहीं
जिसने जी के खातिर,
सपनों को संजोये हैं

-- श्याम स्नेही

कलम में कैद रहते हैं तो दम घुटता है लफ्जों का
रिहा होकर के जब निकले, तो खुलकर सांस लेते हैं
कभी नासूर भी इन्सान को ना दर्द दे पाए
कभी छोटे से जख्म भी बड़ी तकलीफ देते हैं
गया वो दौर जब इन्सानियत लोगों में जिन्दा थी
कि अब तो लोग मुर्दों का कफन भी बेच देते हैं
भला बचपन था जब होता था बस खुशियों का बंटवारा
बड़े क्या हो गए मां-बाप भी हम बांट लेते हैं
इसे कह लीजिए खूबी या यूं कहिए कि फितरत है
कि चेहरा देखकर हम दिल
की बातें जान लेते हैं
फकत इतनी जरूरत है
कि दिल में हौसला रखिए
वही मंजिल को पाते हैं,
जो पाना ठान लेते हैं

-- असमा सुबहानी

मुझपे ही नहीं मेरा इक्तिहार जरा सा
आप कहते हो कि करो इंतजार जरा सा
उम्र भर का दर्द दिया है मुझे बदले में
दो पल जो किया था तूने प्यार जरा सा
अब नहीं तेरे वादे पे यकीन मुझको
लिखकर दे कागज पर ये करार जरा सा
वादा करके भी तेरे पास नहीं आऊँगी
तू भी तो हो जुदाई में बेकरार जरा सा
अधूरी रह जाती हैं कुछ खुशियाँ अकसर
टूट ही जाता है वादा हर बार जरा सा

-- पूजा बंसल

जिन्दगी तेरी बज्म हम उल्फत से सजाते
फुरसत न हुई गम रहे हरदम आते जाते
जंग-ए-जज्बात और नाजुक सा दिल
रुक जाते हैं कदम तुम तक आते-आते
मैं स्याह रात का तन्हा मुसाफिर जुगनू हूँ
ये हवाएँ न बुझा सकेंगी मुझे जगमगाते
परिंदों का हुनर है आसमान को छू लेना
माकूल न हो हवा तो
क्या पंख रुक जाते
ये आरजू ये जुस्तजू
इंतजार की खलिस
जो होती तुम्हारे
दिल में तो समझ जाते

-- अनिता मण्डा

कहानी

एक थप्पड़

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

कालेज की पढ़ाई, जवानी की उम्र और माँ बाप के पैसे, रमेश को एक नई हसीन दुनियां में रखते। सभी दोस्त जब भी बातें करते, उनकी बातों का अंत लड़कियों की बातों पर आकर होता। कौन-सी लड़की सुन्दर है, किसके कपड़े अच्छे हैं, कौन अमीर घर की है, उनको इसकी सारी खबर होती। यों तो रमेश कुछ कवितायें भी लिखता था और कालेज के फंक्शनों में कविता पड़ता जिनमें वह अपने जज्बात जाहिर करता और देखता भी रहता कि कोई लड़की भी उसकी ओर देखती है या नहीं। उसको एक खुशफहमी सी थी कि सभी लड़कियां उसको चाहती थीं। जब भी बाहर घूमते लड़कियों को देखकर सीटियां बजाते और कभी-कभी अशुभ भाषा भी बोल देते।

एक दिन सभी दोस्त एक पब्लिक पार्क में घूम रहे थे कि एक खूबसूरत लड़की जाती हुई दिखाई दी। रमेश ने सीटी बजाई और उस लड़की को कुछ ऐसे शब्द बोले कि वह लड़की उसी जगह खड़ी हो गई। कुछ मिनट वह खड़ी रही फिर रमेश की तरफ आई और रमेश के मुंह पर इतनी जोर से थप्पड़ मारा कि भौंचका सा होकर रमेश उस लड़की का मुंह देखने लगा। लड़की गुस्से में बोली, "तेरी कोई माँ बहन नहीं घर में?" और वह लड़की अपनी सखियों की ओर जाने लगी। रमेश को यह आशा ही नहीं थी कि कभी कोई लड़की उसके साथ ऐसा करेगी। उसके दोस्त भी चुप कर गए थे क्योंकि सभी को एक भय सा हो गया था कि लोग इकठे ना हो जाएँ।

कुछ देर तक रमेश सोचता रहा और फिर उन लड़कियों की ओर जाने लगा। उसके दोस्त डर गए कि अब कुछ हो जाएगा और वहां से खिसक गए। रमेश उस लड़की को बोला, "सुनिये! जो मैंने आपके साथ किया, उसके लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूँ, आपने ठीक कहा, मेरी तीन बहनें हैं, अगर उनको कोई लड़का इस तरह कहता तो वह भी दुखी होती और उनकी बात सुन कर मैं भी पता नहीं क्या कर बैठता। आपने मेरी आँखें खोल दी हैं, मैं आपसे मुआफी मांगता हूँ।" और रमेश वापस आ गया। इस घटना ने रमेश को बहुत बदल दिया। वो मस्ती की बातें, वो चुलबुलापन सब खत्म हो गया। जब भी घर आता, बहनों को देखकर कुछ ऐसा महसूस करता जो उसकी समझ में ना आता।

धीरे-धीरे कालेज की पढ़ाई खत्म हो गई और रमेश काम की तलाश में जगहजगह एप्लाई करने लगा। यह भी अच्छा ही हुआ कि बहुत अच्छी नौकरी उसे शीघ्र ही मिल गई। अपने काम में रमेश मसरूफ हो गया लेकिन वह थप्पड़ उसका पीछा ना छोड़ता। अब माता पिता रमेश को शादी के लिए जोर देने लगे लेकिन वह इंकार कर देता। एक दो लड़कियां देखी भी, लेकिन रमेश बातें करके जवाब दे देता। बहनें भी जोर देकर थक गयीं लेकिन रमेश टस से मस न हुआ। कुछ महीने ऐसे ही गुजर गए। माता पिता ने एक और लड़की को देखने के लिए रमेश को कहा और उसकी फोटो भी देखने को बोला तो रमेश कुछ गुस्से में बोला, "पिता जी कब जाना है?". सभी खुश हो गए लेकिन रमेश के दिल को किसी ने नहीं जाना।

होटल के एक कमरे में लड़की वालों ने मुलाकात का प्रबंध कर रखा था। चाय का सामान बड़े टेबल पर सजा हुआ था। जैसे ही रमेश और उसके माता पिता कमरे में दाखल हुए, रमेश चौंक उठा क्योंकि सामने कुर्सी पर वही लड़की बैठी थी जिसने एक दिन उसे थप्पड़ रसीद किया था। एक दूसरे से बातें होने लगीं, प्लेटों में मिठाई डाली जाने लगी और सभी खाने और पीने लगे। कुछ देर बाद रमेश और लड़की जिसका नाम मीना था को एक दूसरे के साथ बातें करने के लिए छोड़कर सभी दूसरे कमरे में चले गए। रमेश और मीना अकेले रह गए। बहुत देर तक कोई ना बोला। एक अजीब सी घुटन महसूस हो रही थी रमेश को। क्या बोले वोह उसको समझ नहीं आ रहा था।

मीना ने ही शुरू किया, "रमेश जी! मुझे मालूम है आप क्या सोच रहे हो। माना आपने मुझे कुछ कहा था लेकिन मैंने भी आपके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया था, लेकिन मेरे बुरे व्यवहार के बाद आपने जो शब्द मुझ को बोले थे उसने मेरे गुस्से और अहंकार को हरा दिया था। मुझे जल्दी ही महसूस हो गया था कि जो आप बाहर से दिखते थे वह भीतर से नहीं थे। उस दिन से मैं अपने आपको कोस रही थी कि मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था। आज तक मैंने किसी के साथ कोई झगड़ा नहीं किया था, फिर उस दिन मुझे क्या हो गया था, मेरी

(शेष पृष्ठ २३ पर)

आवारा बादल हूँ मैं/मुझे एहसासों से
तरबतर करता पानी हो तुम/अपने आगोश में ले तुम्हें
मस्त हवाओं से हठखेलियाँ करता
दूर तक निकल जाता हूँ/अपार उर्जा से दमकता
गर्जन करता/इस मिलन का उद्घोष करता हूँ
मगर फिर ना जाने क्यूँ/तुम बिछुड़ जाती हो मुझसे
बरस जाती हो अपने बादल को छोड़
और देखो मैं बिखर जाता हूँ
मेरा अस्तित्व ही मिट जाता है/जानता हूँ
इस बंजर जमीन को भी/तुम्हारी प्यास रहती है
अगर तुम न बरसो/तो नया सृजन कैसे हो
अब लौट आना जल्दी
आ मिलना मुझको
और बना देना मुझको
एक बार फिर वही काला बादल
जो घड़ घड़ाता/तुम्हें आगोश में ले
प्रफुल्लित चला जाता है दूर तक
देखो हमारा ये निरंतर मिलन नियति भी है

-- मोहन सेठी 'इंतजार', ऑस्ट्रेलिया

करिया-ए-जां में खामोशी है अभी
दिल में इक हूक सी उठी है अभी
अब्र से कह दो टूटकर बरसे
प्यास सहराओं की जगी है अभी
तेरे दिल से जो आशनाई थी
रूह में मेरी वह बसी है अभी
तुम अभी से पलक भिगोने लगे
दास्तां दर्द की पड़ी है अभी
तेरा दामन न भीग जाए कहीं
चश्म-ए-पुरनम झुकी हुई है अभी
रफ्ता रफ्ता यकीन आएगा
इश्क की हर अदा नई है अभी
तेरी खुशबू से मेरी सांसों की
गुफ्तगू सी कोई हुई है अभी
कैसे हो जिन्दगी खिलाफे जहां
तेरा ही गम उठा रही है अभी
हमसे पूछो ना 'प्रेम' के किस्से
हम पे दीवानगी चढ़ी है अभी

-- प्रेम लता शर्मा, अमेरिका

इंतजार भरी दो आँखें
उम्मीद भरी दो आँखें
आस भरी दो आँखें
माथे की बिंदिया बुलाये
आँखों की उम्मीद बुलाये
बिना आवाज दो आँखें
आंसू बह न पायें
पलके झपक न पायें
बेबस हैं दो आँखें

-- रमा शर्मा, जापान

रहा गन्तव्य सबका एक, प्रश्न करते अनेकानेक
बहे बूँदों सरिस धारा, रहे फिर भी मनोहारा!
समय की धार सब चलते, विवश मन विश्व में रहते
प्रयोगित बुद्धि बल करते, विवेकी कहाँ हो पाते!
राह बस पूछते जाते, लिखा रास्ता कहाँ पढ़ते
देख हम-सफर कब पाते, चला जो आगे ना लखते!
बूँद वत कहाँ बह पाते, उछलना कूदना चहते
समझते अलग औरों से,
विलय हो धार कब बहते!
चले सब वहीं हैं जाते,
पूछ संस्कार वत जाते
रहा उत्तर 'मधु' का एक,
फिरा जग खोजता प्रभु एक!

-- गोपाल बघेल 'मधु', कनाडा

सपूत मातृभूमि के, उठो कि माँ पुकारती
कलाम तुम चले कहाँ कि रो रही है भारती
नजर उठा के एक बार मुस्करा के देख लो
हर आँख आज नम हुई, तुम्हें ही है निहारती
उठो भरत की बेटियों, कलाम को करो विदा
सजा लो दीप थाल में, उतारो आज आरती
कर्म योगी बन जिया, नाम को अमर किया
कलाम हर युवा बने,
प्रत्येक माँ विचारती
माँ की गोद में गिरा,
माँ के वक्ष से लगा
जय मिसाइल मैन,
जय कलाम माँ उचारती

-- लता यादव

हे महान आत्मा ! आपको शत-शत नमन!!
अंततः आठ दशकों की यह अनवरत यात्रा थम ही गई
आप भी हो गए चिरनिद्रा में लीन !!
यूँ लगता है जैसें एक युग का अवसान हो गया है!
सही अर्थों में आप भारत रतन थे!
आपका कद हर सम्मान से ऊँचा था
'भारत रत्न' आपके नाम के साथ
जुड़कर स्वतः ही सर्वोच्च हो गया,
सार्थक हो गया !
आपकी यात्रा भले ही थम गई है
लेकिन क्या थम सकेगी कभी, अग्नि की उड़ान !
वह अग्नि जिसे पाकर देश गौरवान्वित हुआ, भयमुक्त हुआ
क्या कभी हो पायेगा राष्ट्र उऋण इस ऋण से !
धन्य वह राष्ट्र, धन्य वह माता जो ऐसे लाल जनती है।

-- महावीर उत्तरांचली

भूल सकेगा नहीं देश यह, गौरव का अभियान तुम्हारा
हे भारत के भाग्य विधाता तुमको शत सम्मान हमारा
भारत माँ के अमर लाल तुम, राष्ट्र शत्रु के महाकाल तुम
उन्नति की अभिलाषा लेकर, नव पथ की परिभाषा देकर
स्वाभिमान के हर अवसर पर, पूर्ण समर्पण आयुधबल पर
प्रहरी बनकर आज खड़ा है, देखो अनुसंधान तुम्हारा
हे भारत के भाग्य विधाता, तुमको शत सम्मान हमारा
अखबार बेच जीवन साधा, अद्भुत संघर्षों की गाथा
थी शक्ति चरम लेखनी में, सड़कों पर बैठ रौशनी में
विज्ञान सूत्र रचते रहते, संकल्प मान गढ़ते रहते
नवयुग के तुम कर्णधार थे, है तुम पर अभिमान हमारा
हे भारत के भाग्य विधाता, तुमको शत सम्मान हमारा
स्वीकार चुनौती कर हँसकर, बना गए परमाणु उपस्कर
लक्ष्मण रेखा खींच गए तुम, दम्भ शत्रु का तोड़ गए तुम
बच्चों को प्यार दुलार दिया
भारत को नव संसार दिया
सूरज सम युग पुरुष बने तुम
अमर हुआ दिनमान सहारा
हे भारत के भाग्य विधाता
तुमको शत सम्मान हमारा

-- नवीन मणि त्रिपाठी

अखबार बाँटने से लेकर उनकी सुर्खियाँ बनने तक
कागज के जहाजों से लेकर राकेट गढ़ने तक,
साधारण से असाधारण कि सीढ़ियाँ चढ़ने तक,
ऊँची-नीची हर तरह की डगर पर,न हताशा न थकान
सदैव होठों पर लिये प्रारब्ध की मुस्कान
बढ़ा जाता था वो एक अनवरत सफर पर!
समस्याओं के समुंदर पार करता हुआ
वो बढ़ा जाता था अपने सपनों के पीछे
सपने जो उसे चौन से सोने नहीं देते
सांसारिक वैभव को पिरोने नहीं देते
सपना, अपने देश को सर्वोच्च देखने का सपना,
सपना, ऐसा कुछ कर गुजरने का
जो कुछ बड़ी ताकतों के ही बस में था
सपना, जो भूख था, प्यास था, उसकी नस नस में था
अपने देश को शक्तिशाली और समृद्ध देखने का
शिक्षा और आय में चहुँ ओर वृद्धि देखने का
और जब वो पकड़ में आये तो उन्हें
अनन्त तक का विस्तार दिया
अपने सपनों के भारत को साकार किया!
पर कौन रोक पाया है समय के आघात को
वो भी चला गया छोड़ हमें विलाप को
एक सरल और निश्छल जीवन
बस गया जो जन जन के मन में
अगणित सपनों की तरह
जो रहा हमारे बीच
हमारे अपनों की तरह
हर नया कदम देश का उनका ही 'कलाम' है
हम कृतज्ञ भारतवासियों का उन्हें आखिरी सलाम है!

-- मनोज पाण्डेय 'होश'

अस्तित्व में आते ही आ जाती हैं चप्पलें
उम्र भर रहता है उनका साथ/जाडा गर्मी या बरसात
कीचड़ ककड़-पत्थर/कील काँटे कैसा भी हो पथ
सहकर दुख की आंच/देती है सुख दूसरे को
खुल जाती है उनकी सिलाई/हो जाती चलते-चलते
उनके सास वाले फीते की कटाई
कुछ चाहते हैं उनका साथ
कराते हैं उनकी सिलाई-मरम्मत
कुछ निर्धन है या धन का अभिमान
छोड देते हैं उन्हें किसी कोने में
या सौंप देते हैं किसी गैर के हाथ

-- अजय श्रीवास्तव 'अजयश्री'

खुले आसमान में बादलों का उमड़ना
सभी जीवों को गर्मी से राहत पहुंचाना
मानो बादलों का बदलीं रूपी मुस्कान
बुन्दो के रुप में शीतलता प्रदान करना
सबको ठन्डे मौसम का एहसास होना
मन्द-मन्द सर्द हवाएं रह-रह बहना
काली-काली घटा नभ में छा जाना
तन-मन को एक नयी उमंग पहुँचना

-- रमेश कुमार सिंह

प्रेम की पाती लेकर आता था डाकिया
पुकारता जब नाम मेरा/हिरणी सी चपलता लिए
कर जाती थी चोखट को पार
लगा लेती दिल से प्रेम की पाती।
छुपकर पढ़ती ढाई अक्षर प्रेम को
जोड़ लेती ख्वाबों से रिश्ते
होसला, भर लेती मन में
जमाने से डर नहीं का !
वो सामने आते तो होंठ थरथराने लगते
मानो शब्द को कर्फ्यू लगा हो
बस आँखें ही कर जाती थीं प्रेम का इजहार!
नींद खुली तो लगा/एक ख्वाब देखा था प्रेम का
अब डाकिया भी नहीं लाता प्रेम की पाती
क्योंकि हो जाती है मोबाइल पर प्रेम की बातें।

-- संजय वर्मा 'दृष्टि'

अमुआ तेरे बाग में, खुशियों की बौछार
झूला डाले डार पर, उमड़ रहा है प्यार
उमड़ रहा है प्यार, झूलने सखियाँ आती
बारिश की बौछार सभी का तन महकाती
कह लक्ष्मण कविराय हवा जब बहती पछुआ
झूला देते डाल, डार पर तेरी अमुआ

* * *

झूला झूले सब सखी, कर सोलह शृंगार
पावस ऋतु में देखते, तीजों के त्यौहार
तीजो के त्यौहार, सुहागिन सभी मनाती
कुदरत भी माहौल, सदा खुशनुमा बनाती
कह लक्ष्मण कविराय कष्ट को मानव भूला
करे प्रकृति से प्यार तभी खुशियों का झूला

-- लक्ष्मण रामानुज लडीवाला

दिनकर की स्वर्णिम किरणों ने, धरती का सुंदर रूप सजाया
काले मेघों ने सूरज के संग, आँख मिचोली खेल रचाया
अब तो रिमझिम-रिमझिम बूँदें अमृत बन कर बरस रहीं हैं
एक झलक प्रियतम की पाने, अँखियाँ जैसे तरस रहीं हैं
टिप टिप गिरती बूंदों ने, मनभावन संगीत रचाया है
मन सागर में उठी हिलोरें सब का मन हर्षाया है
ऐसे में यारों की महफिल,
अद्भुत रंग जमाती है
जीवन है वरदान जब
सावन भादों ऋतु आती है

-- जय प्रकाश भाटिया

अंतर्मन में झांकने की जरूरत

जवाहर लाल सिंह

एक टी वी चैनल पर बहस में एक भाजपा नेत्री ने कहा- “केजरीवाल को अंतर्मन में झांकने की जरूरत है।” उसी बहस में कांग्रेस के नेता जे.पी. अग्रवाल ने कहा- “अगर केजरीवाल अपनी बात पर टिके नहीं रहते, तो जनता का राजनीतिज्ञों पर से भरोसा उठ जाएगा. मानता हूँ, वे अभी नए हैं, पर वे तो नयी राजनीति का वादा करके आए हैं. जनता ने उन पर अभूतपूर्व भरोसा किया है. या तो वे जनता से किये गए वादों को पूरा करें या फिर इस तरह के अव्यवहारिक वादे करने से दूसरी राजनीतिक पार्टियाँ भी बचें।”

निश्चित ही सैद्धांतिक रूप से दोनों नेताओं की बातें समीचीन हैं, पर सिर्फ केजरीवाल के लिए नहीं, सबके लिए. केजरीवाल तो नए हैं अभी राजनीति सीख रहे हैं. गलतियों से सीख लेते हैं, माफी भी माँगते हैं, यथोचित सुधार भी करते हैं. अब फिर से प्रशांत भूषण और योगेन्द्र यादव को पार्टी में लौटने की बात कह रहे हैं. शायद उनको अपनी भूल का अहसास हो रहा है. विभिन्न मुकदमों में और सार्वजनिक स्तर पर उनकी बहुत छीछालेदर हो रही है. उनके कई मंत्री और विधायक विवादों में फंसते जा रहे हैं. अंततः उनकी विश्वसनीयता पर सवाल उठना भी लाजिमी है. फिर अपने द्वारा किये कार्यों का बहुत महंगा और बार-बार प्रचार, मोदी जी को भी परास्त कर दे रहा है. शायद यह उनकी आगे की रणनीति का हिस्सा हो.

पर, मेरा कहना है कि सभी को अपने अंतर्मन में झांकने की जरूरत है, चाहे वो मोदी जी हों, भाजपा के वरिष्ठ और सम्मानित नेता या अन्य पार्टियों के नेता. सभी अति उत्साह में उल्टा-सीधा बयान दे देते हैं और बाद में उसको सही साबित करने का असफल प्रयास करते हैं या गलत ढंग से पेश किये जाने पर अपना स्पष्टीकरण देते फिरते हैं.

केजरीवाल जब लोगों से चंदा मांगते हैं तो उनको गलत ठहराया जाता है और दूसरी पार्टियाँ जिनमें भाजपा सबसे आगे है, अपने प्रचार प्रसार में जो खर्चे करती है, वो धन बिना चंदे के कहाँ से आता है? यह भी तो बतलाना चाहिए. केजरीवाल का तो सब कुछ सामने उनके साईट पर उपलब्ध भी रहता है. दूसरी पार्टी का लेखा-जोखा कहाँ रहता है? इसकी छान-बीन भी तो होनी चाहिए. मोदी जी का बनारस दौरा तीसरी बार रद्द हुआ. हर बार महंगे पंडाल बनाये गए और इस बार तो एक मजदूर की मौत भी हो गयी. एक बयान भी जारी नहीं किया गया. केजरीवाल की सभा में एक किसान ने आत्महत्या कर ली तो खूब हंगामा हुआ और केजरीवाल की पार्टी ने उसका मुआवजा भी दिया, माफी भी माँगी पर मोदी जी ?

आज दिल्ली में कानून व्यवस्था की जो स्थिति है, उसके लिए दिल्ली पुलिस जो केंद्र के अधीन है, क्या कर रही है और उसके लिए केंद्र सरकार कितनी दोषी है इसका भी तो मूल्यांकन होना चाहिए. दिल्ली पुलिस जितनी सक्रियता के साथ आम आदमी पार्टी के सदस्यों, विधायकों पर पैनी नजर रखकर कार्रवाई करती है, उतनी ही पैनी ष्टि दूसरी तरफ क्यों नहीं जाती? उप-राज्यपाल और केजरीवाल सरकार के बीच जो जंग लगातार जारी है, उस पर केंद्र सरकार खामोशी क्यों अख्तियार कर लेती है. दिल्ली के मुख्य मंत्री को प्रधान मंत्री से मिलने का समय तक नहीं दिया जाता है, वही पी.एम. किसी से भी रात के दो बजे भी मिलने का वादा करते हैं. दिल्ली की केंद्र सरकार तीसरी बार भूमि अधिग्रहण बिल पर अध्यादेश लाकर फिर उसे ठंडे बसते में डाल देती है. इसे क्या कहा जाय? कानून विशेषज्ञ ही इस पर अपनी राय रख सकते हैं, पर किरकिरी तो मोदी सरकार की हुई है. उसी तरह विदेशों में भले ही भारत का नाम आज आदर के साथ लिया जा रहा है, पर काफी जगहों पर खासकर अमेरिका, चीन और पाकिस्तान में किरकिरी भी हुई है.

वित्त विभाग के आंकड़े बताते हैं कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है. उत्पादन बढ़ा है, पर जब तक उसका लाभ आम जनता तक नहीं पहुंचता, उपलब्धि नहीं कही जा सकती. क्या बेरोजगारों को रोजगार देने में यह सरकार कामयाब हुई है. कृषि उत्पादों के बेहतर उत्पादन, उसके रख-रखाव और वितरण में सुधार हुआ है? मोदी जी की यही तो कल्पना थी- ‘सबका साथ सबका विकास’- हो रहा है क्या? इसका सही उत्तर तो बिहार विधान सभा के चुनाव में ही पता चल सकेगा. बिहार में १६० आधुनिक रथों को हरी झंडी दिखा दी गयी, पर बिहार के लिए ‘विशेष पैकेज’ का क्या हुआ? कुछ निवेश को बढ़ावा दिया गया क्या? शिक्षण संस्थान, आधारभूत संसाधन में वृद्धि हुई क्या?

मेरा मानना है कि अगर काम का असर धरातल पर दिखेगा तो प्रचार-प्रसार की बहुत कम आवश्यकता होगी. टी.वी. पर खूब विज्ञापन आते हैं गैस सब्सिडी छोड़ने की. लाखों लोगों ने सब्सिडी छोडी भी है, पर उसका लाभ गरीब लोगों तक पहुंचा है क्या? ये आंकड़े भी बताये जाने की आवश्यकता है. प्रधान मंत्री जन-धन योजना, बीमा और पेंशन योजना का धरातल स्तर पर लाभ के आंकड़े को भी दिखाने की जरूरत है. किसानों को ऋण देने में सहूलियत हुई है क्या? जमीन की मिट्टी की जांच कायदे से हो रही है क्या? तदनुसार फसलें लगाई जा रही है क्या? संतुलित उत्पादन और उसका संतुलित वितरण ब्यापक चीज है. जिसका समुचित पालन जरूरी है ताकि किसान आत्महत्या न करे और उन्हें उचित मुआवजा दिया जाय.

‘कोलगेट’ के उद्भेदन से सरकार को फायदा हुआ है, पर बहुत सारी बिजली कंपनियों (जिनमें डी.वी.सी. शामिल है) को कोयले के अभाव में अपने जेनेरेटर बंद करने पड़ रहे हैं. टाटा स्टील जैसी कंपनी को पिछले दिनों लौह अयस्क और कोयले की आपूर्ति में बाधा पहुँची है. यह सब नौकरशाही और सरकारी कामों के समयबद्ध निस्तारण न होने के कारण हुआ है. फिर ‘डिजिटल इण्डिया’ और ‘मिनिमम गवर्नमेंट और मैक्सिमम गवर्नेन्स’ का गाना किस लिए? नौकरशाही के कार्यप्रणाली में बदलाव लाने की बहुत आवश्यकता है.

स्वच्छ भारत अभियान का परिणाम कितना सामने आया है? क्या सभी शहर और गांव स्वच्छता के प्रति जागरूक हुए हैं? इसका परिणाम तो तभी दिख जाता है, जब थोड़ी सी वर्षा में दिल्ली, मुंबई और चंडीगढ़ शहरों में जल जमाव हो जाता है. जम्मू कश्मीर और केदारनाथ की यात्राओं में लगातार ब्यवधान जारी है.

मैं तो कहूँगा कि हम सबको अपने अन्दर झांकने की जरूरत है क्या हम अपनी ड्यूटी सही तरीके से कर रहे हैं? क्या हम स्वच्छता को अपना रहे हैं? क्या हम प्राकृतिक संसाधनों का सही इस्तेमाल कर रहे हैं? क्या राष्ट्र भावना हम सबमें जाग्रत हुई है? क्या हम अन्याय का विरोध कर पा रहे हैं? क्या हम किसी कमजोर की मदद कर रहे हैं? क्या हम सरकारी हेल्प-लाइन का इस्तेमाल कर रहे हैं? क्या हमारी किसी भी शिकायत का असर हो रहा है? अगर नहीं तो हम सबको अन्दर झांकने की जरूरत है ‘पर उपदेश कुशल बहुतेरे’ यह तो हम सभी जानते हैं.

इसके अलावा और बहुत कुछ बातें हैं जो मोदी सरकार को सोचने की जरूरत है- जैसे बुजुर्ग फौजी महीने भर से एक रैंक एक पेंसन के लिए हड़ताल पर है और सांसदों को वेतन भत्ते बढ़ाये जाने की मांग हो रही है. गेस्ट अध्यापकों से वादाखिलाफी करके घर बैठा दिया गया है. हरियाणा के किसानों का ३५० करोड़ रूपये का भुगतान रुका हुआ है और वो भी धरने पर है. बेटी बचाओ का नारा देते हुए करनाल में नर्सिंग की छात्राओं पर लाठीचार्ज करवाया गया.

बुजुर्गों की पेंशन प्रक्रिया इतनी मुश्किल बना दी गई है कि हर जिले के अखबार पर बैंकों में धक्के खाते बुजुर्गों की तस्वीरें हैं. सरकारी कर्मचारियों से प्राइवेट हस्पतालों में इलाज करवाने की सुविधा छीन ली है नियम बदलना है तो एम.एल.ए. और मंत्रियों को भी कहिये कि वो भी अपना इलाज सरकारी हस्पताल में ही कराएं. आमूल-चूल परिवर्तन की सख्त आवश्यकता है. बिना सिस्टम को सुधारे सिर्फ बातों से कुछ नहीं होनेवाला. सकारात्मक कदम की उम्मीद के साथ देश मोदी जी की ओर देख रहा है।

रोजा इफ्तार के बहाने सियायत चमकाने का नया दौर

मृत्युंजय दीक्षित

जब-जब रमजान का माह प्रारम्भ होता है और ईद का पर्व नजदीक आता जाता है वैसे-वैसे देश के तथाकथित धर्मनिरपेक्ष दल अपनी राजनीति को नये सिरे से चमकाने के लिये रोजा इफ्तार का सहारा लेकर मुसलमानों को बेवकूफ बनाने में जुट जाते हैं। विगत ६५ वर्षों से कांग्रेस व अन्य तथाकथित समाजवादी व वामदल जिनका भरण पोषण केवल और केवल मुस्लिम वोटबैंक से होता है अपने आप को महान सेकुलर सिद्ध करने का प्रयास करने में लग जाते हैं। विगत लोकसभा चुनाव इन दलों के लिए गहरा आघात देने वाले सिद्ध हुए हैं। इन सभी सेकुलर दलों को अभी भी अपनी पराजय स्वीकार नहीं हो रही है। ये सभी दल एक बार फिर जनमानस विशेषकर मुस्लिम समाज के बड़े रहनुमा बनने के लिए बेताब हो रहे हैं।

यही कारण है कि इस बार केंद्र में मोदी सरकार है और ये सभी दल बेरोजगार और विपक्ष में, इसलिए ये सभी दल रोजा इफ्तार बड़े ही आक्रामक अंदाज में आयोजित कर रहे हैं। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने भी इफ्तार पार्टी का आयोजन किया जिसमें उपराज्यपाल नजीब जंग और दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने शामिल होकर मीडिया को एक बड़ी खबर दे दी। इस मुलाकात का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह था कि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का उपराज्यपाल नजीब जंग के साथ टकराव चल रहा है वहीं पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के खिलाफ भ्रष्टाचार के मामले लम्बित हैं। सम्भावना व्यक्त की जा रही है कि पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित अपने खिलाफ मामलों को रूकवाने के लिए इस दावत में शामिल हुईं।

वहीं दूसरी ओर संसद में सरकार को घेरने के लिए व विपक्ष की एकता को मजबूत करने के प्रयास के कांग्रेसाध्यक्ष सोनिया गांधी ने भी दावत का आयोजन किया जिसमें लालू, मुलायम सहित वामदल व कई क्षेत्रीय दलों के बड़े चेहरे शामिल नहीं हुए। इससे संकेत जा रहा है कि संसद में कांग्रेस सरकार के खिलाफ रणनीति बनाने में विफल हो सकती है। टीवी चैनलों पर इन रोजा इफ्तार आयोजनों को लेकर बड़ी बहसें हो रही हैं। हैदराबाद के आवैसी व कुछ मुस्लिम धर्मगुरूओं ने इन इफ्तार दावतों के औचित्य को सिरे से नकार दिया है। एक मुस्लिम धर्मगुरू मौलाना अंसार रजा का कहना था कि इन दावतों से मुस्लिम समाज का कोई भला नहीं होने वाला है। मुसलमानों को सबसे अधिक बेवकूफ बनाने वाली और ठगने वाली कांग्रेस पार्टी ही है क्योंकि आजादी के बाद देश पर सबसे अधिक ६५ वर्षों तक शासन करने वाली कांग्रेस पार्टी ही है यह कांग्रेस की ही नीतियों का ही परिणाम है कि आज मुसलमानों के लिए रंगनाथ मिश्रा आयोग और सच्चर आयोग की रिपोर्ट देश के सामने है। मुसलमानों को कांग्रेस ने ठगा है, अपना गुलाम बनाकर रखा है। अब देश का मुसलमान कांग्रेस के बहकावे में नही आने वाला है। टीवी बहसों का निचोड़ यह भी था कि इन दावतों के बहाने केवल एक दूसरे को मुस्लिम टोपी पहनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस पर भी मुस्लिम समाज की ओर से बहस करने वालों का कहना था कि मुस्लिम टोपी मुस्लिम समाज के लिए बहुत पवित्र होती है। मुस्लिम समाज में टोपी का बहुत महत्व और सम्मान है। हर कोई मुस्लिम टोपी पहनकर मुसलमानों का भला नहीं कर सकता।

वैसे भी इस प्रकार की इफ्तार पार्टियां हराम की होती हैं क्योंकि पता नहीं इन पार्टियों में किस प्रकार का पैसा लगा हो। लोगों का कहना है कि मुस्लिम टोपी पहनकर ये सभी दल एक बार फिर हमें बरगलाने के लिए निकल पड़े हैं। लेकिन अब मुस्लिम समाज भी समझदार हो रहा है। वह किसी के लिए बिकाऊ नहीं है और न ही किसी दल विशेष का गुलाम। अब मुसलमान अपने पैरों पर खड़ा हो रहा है। आज देश के मुसलमान समाज के पिछड़ेपन और गरीबी के लिए केवल कांग्रेस पार्टी और तथाकथित सेकुलर दल ही जिम्मेदार है। अब देश के मुसलमान को विकास चाहिए, शिक्षा चाहिए और मुसलमान युवकों को वास्तव में रोजगार चाहिए। ये दावतें केवल राजनीति चमकाने का जरिया बन चुकी हैं। मुस्लिम टोपी पहनकर ये दल इसे अपवित्र कर रहे हैं और अपमानित भी कर रहे हैं। ये सभी दल केवल बिहार विधानसभा का चुनाव जीतना चाहते हैं। बिहार में मुस्लिम वोटबैंक बड़ी ताकत है। यही कारण है कि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार अब अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े दिखाई पड़ रहे हैं। नीतिश कुमार केजरीवाल के लिए केंद्र को कोस रहे हैं। वहीं कांग्रेसी युवराज राहुल गांधी तो पूरी राजनैतिक मूर्खता पर ही उतारू हैं। वे अपने आप को भोला बनाकर जनता के सामने पेश कर रहे हैं। सुबह मंदिर जाते हैं और शाम को रोजा इफ्तार की दावत करते हैं, जिसमें बहुसंख्यक हिंदू समाज को अपमानित करने वाले बयान भी देते हैं व अपने आप को सबसे बड़ मुस्लिमों का रहनुमा बताते हैं।

राहुल गांधी पूरी तरह से राजनैतिक ढोंगी हैं व कुंठाग्रस्त हैं। उनको अपनी एक राजनैतिक राह पकड़नी होगी या तो उदार हिंदूवादी बनें या फिर पूरी तरह से मुस्लिम टोपी पहन लें। राहुल गांधी के सलाहकार ही उनकी राजनीति को डुबोकर रख देंगे। राहुल गांधी का कहना है कि मैं तो रोज बोलूंगा, लेकिन रोज बोलने से उनकी सारी ताकत तो अभी ही समाप्त हो जायेगी। राहुल गांधी को पहले अपने ६५ वर्षों के इतिहास को अच्छी तरह से एक बार फिर पढ़ना चाहिए। केवल किसी को गरियाने से कोई लाभ नहीं होने वाला। अगर कांग्रेस का यही रवैया रहा तो वह दिन दूर नहीं जब इसकी हालत पूरे भारत में दिल्ली जैसी हो जायेगी। ■

बॉलीवुड राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा

डा. विवेक आर्य

एक समय था जब अमिताभ बच्चन को सब ओर थक हार कर मंदिर जाते दिखाया जाता था। वहां वो मूर्ति के सामने अपनी समस्या बोलते या कोई अन्य अभिनेता सिर पटकता था और उसकी माँ या प्रेमिका-पत्नी-पिता-मित्र इत्यादि का स्वास्थ ठीक हो जाता था। फिल्में लोगों में विश्वास जगाती थीं कि जब कुछ नही है तब धर्म का सहारा है, भगवान है, ईश्वर अंतिम आश्रय है। हम आर्य हैं, योग का मार्ग मानते हैं, पर हम लोगों को विकल्प देते हैं कि मूर्तिपूजा से ऊपर उठो, ऋषियों का मार्ग अपनाओ। आज पीके जैसी फिल्में क्या कहती हैं मंदिर ना जाओ, वहा पैसा ना चढ़ाओ, सारे बाबा ढोंगी हैं, पाकिस्तानी मुल्ले अच्छे हैं, उनसे शादी करो, वो धोखा नहीं देते। रंडियों और दलालों का अड्डा बना हुआ है बॉलीवुड जो पाकिस्तान आई.एस.आई और शेखों के पैसे से चल रहा है। तभी बप्पा रावल, पृथ्वीराज चौहान, महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, शिवाजी, तानाजी मालसुरे, बंदा वैरागी, हरी सिंह नलवा इत्यादि शूरवीरों पर फिल्में नहीं बनती।

इसके विपरीत आतताईयों एवं आक्रमणकारियों पर फिल्में बनाई जाती हैं। शाहजहां, ताजमहल, मुगले आजम, जोधा-अकबर जैसी फिल्में बनाई जाती हैं। फिजा, मिशन कश्मीर, मैं हूं ना, शौर्य, हैदर जैसी फिल्मे बनती हैं जो हमारी ही सेना पर कालिख पोतने का प्रयास करती हैं। इसके साथ-साथ नंगापन खुलकर परोसते हैं। शादी से पहले सम्बन्ध बनाओ, बाद में सम्बन्ध बनाओ, बुढापे में जवान लड़की से सम्भोग करो, प्यार की उम्र नहीं होती इत्यादि-इत्यादि। सन्नी लियोन जैसी रण्डी को हीरोइन बनाकर क्या सन्देश देना चाहते हैं? संवाद में उर्दू और फारसी के शब्द इतने मिला दिए जाते हैं कि लोग उसी को हिंदी समझ के हिंदी को मुसलमानों की भाषा समझने लगे हैं। गानों में मौला, अल्लाह, अली सूफी संगीत जैसे शब्दों का छलावा देकर छोटे-छोटे बच्चों से बड़ों तक अरब की भाषा और सभ्यता की छाप छोड़ देते हैं। बॉलीवुड वास्तव मे राष्ट्रीय एकता अखंडता और सुरक्षा के लिए एक बड़ा खतरा बनता जा रहा है।

(साभार- आर्य मुदित)

हमारे रचनाकार

परिचय

नाम - रमेश कुमार सिंह
माता- श्रीमती सुघरा देवी
पिता- श्री ज्ञानी सिंह
पत्नी - श्रीमती पूनम देवी
पुत्री - पलक यादव
जन्मदिन - ०५-०२-१९८५
जन्मस्थान- ग्राम- कान्हपुर, पोस्ट- कर्मनाशा, जिला- कैमूर बिहार -८२११०५
फोन- ९५७२२८९४१०
ई-मेल- rameshpunam76@gmail.com
rksingh9572@gmail.com

रमेश कुमार सिंह

शिक्षा - एम.ए., बी.एड.
आजीविका - प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
लेखन- काव्य एवं गद्य विधा दोनों में, कई ब्लॉग एवं वेबसाइटों पर प्रकाशित होती हैं

आत्म कथ्य

मेरी रूचि पढ़ने-पढ़ाने के साथ-साथ लेखन क्षेत्र में रही है। कहते हैं लोग कि जीवन अनेक रंग-रूपों से भरा है, संसार में सभी की इच्छा होती है इन रंग-रूपों को अपने में समेटकर चलने की। मेरी भी इच्छा यही रही। थोड़ा बहुत साहित्य में शब्दों को एक कतार में रखकर कुछ पंक्तियों का विस्तार कर लेता हूं। जो बाते मेरे हृदय से गुजर कर मानसिक पटल से होते हुए पन्नों पर आकर ठहर जाती हैं। बस यही मेरी लेखनी है।

कविताएं

परछाई भी हूँ/और मैं तेरा हौसला भी हूँ
कोई साथ नहीं पर हर कदम मैं तेरे साथ हूँ
तेरे रूकने से वक्त तो रुकता नहीं
पर मैं ठहर जाती हूँ सहम जाती हूँ
तेरी हर तकलीफ से वाकीफ हूँ
मैं खुदगर्ज नहीं हूँ ना ही मतलबी हूँ
तुझे अंधेरे में अकेला छोड़ देती हूँ
ऐसा नहीं है मैं अदृश्य हो जाती हूँ
तेरे कदमों के निशान मैं नहीं मिटाती
परछाई हूँ एक साहस हूँ
अदृश्य होकर भी तेरे साथ हूँ
तेरी कामयाबी तेरे सुख-दुःख पर मैं साथ हूँ
दर्पण और नीर में मैं तेरे रूप में दिखती हूँ
तेरा प्रतिबिम्ब बनकर तुझसे बात करती हूँ
मैं जब परछाई हूँ तो मैं भी तन्हा हूँ
तेरी तन्हाई को में बहुत अच्छे से समझती हूँ
तुझे दुनिया धोखा देती है मैं इसका दर्द जानती हूँ
रास्ते कदमों तले निकलते रहे तु आगे बढ़ता गया
मैं हमेशा तेरे पीछे हूँ कभी आगे नहीं बढ़ पाई हूँ
मैं परछाई हूँ मैं गरिमा में रहना जानती हूँ

-- नितिन मेनारिया

तोड़ के ये खामोशियाँ, कोई बात हो तो कैसा हो
यूँ अजनबी से अगर हमसफर हो जाएँ तो कैसा हो
इस मस्त बरखा में, तेरा आँचल भी लहराये तो कैसा हो
बरसों से है दिल बंजर, तेरा प्यार बरस जाए तो कैसा हो
लंबी तन्हा जिंदगी से क्या, ये एक रात की हो तो कैसा हो
मौत चाहता हूँ मैं, पर जहर तेरे इश्क का हो तो कैसा हो
गिरा दीवार दुनिया की, मेरे और करीब आओ तो कैसा हो
टकरा जाएँ लब से लब, हो ये
भी गर इत्तेफाक तो कैसा हो
तोड़ दूँ बोतल अभी, तू अपनी
आँखों से पिलाये तो कैसा हो
शुरू कहीं से हो कविता मेरी,
खत्म तुझ पर हो तो कैसा हो

-- केशव

समीक्षा

सृजन की सार्थक अभिव्यक्ति

'स्वप्न सृजन' तीन रचनाकर्त्रियों का साझा काव्य संग्रह है। वे हैं- मुंबई की प्रिया वच्छानी, सूरत की एकता सारदा और जोधपुर की मधुर परिहार। दूर दूर रहने वाली तीनों सखियों ने मिलकर भाषा सहोदरी-हिंदी के बैनर से अपना साझा काव्य संग्रह प्रकाशित कराया है, जो एक सराहनीय और स्तुत्य कार्य है।

इसमें पहले भाग में प्रिया वच्छानी की ४१ रचनायें गजलें और अतुकांत कवितायें हैं। सभी रचनाएं साहित्यिक दृष्टि से अच्छे स्तर की एवं पठनीय हैं। रचनाओं में आम जीवन के विभिन्न पक्षों को उभारा गया है। सामाजिक समस्याओं और बिडम्बनाओं पर खुलकर कलम चलायी गयी है। विशेष रूप से इबादत, वृद्धाश्रम, बेबस औरत, औरत का सफर, बलात्कार पीड़िता का दर्द शीर्षक रचनायें उल्लेखनीय हैं। अन्य सभी रचनायें भी स्तरीय हैं। कई गजलें प्रभावशाली हैं।

दूसरे भाग में एकता सारदा की ४० रचनाओं को प्रकाशित किया गया है, जो लगभग सभी अतुकांत कवितायें हैं। इस भाग की रचनायें भी स्तरीय हैं और उनमें समाज के विभिन्न रूपों को प्रकाश में लाया गया है। इस सम्बंध में विशेष रूप से मां, बुजुर्ग, औरत, बाल भ्रूण हत्या, बुढ़ापा और शून्य शीर्षक रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। वैसे सभी रचनायें पठनीय और रोचक हैं।

तीसरे और अंतिम भाग में मधुर परिहार की ४० काव्य रचनाओं को प्रस्तुत किया गया है, जिनमें अतुकांत कवितायें, गीत और मुक्तक भी सम्मिलित हैं। इनकी रचनाओं में पापा, बचपन, बुढ़ापा, होली, पेड़ की सूखी डाली, भिखारी और गुब्बारे वाला विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अन्य सभी रचनायें भी स्तरीय तथा जमीन से जुड़ी हुई हैं।

संग्रह में प्रूफ या वर्तनी की गलतियां बहुत कम हैं। एक-दो गलतियां खटकती हैं। एक कविता में कई जगह 'नश्वर' को 'नस्वर' छापा गया है। पुस्तक की छपायी अच्छी है। मुखपृष्ठ आकर्षक है, जिस पर तीनों कवियत्रियों का एक जैसे परिधान में साझा चित्र प्रभावशाली बन गया है। संग्रह के आकार एवं गुणवत्ता के अनुसार मूल्य उचित रखा गया है।।

-- विजय कुमार सिंघल

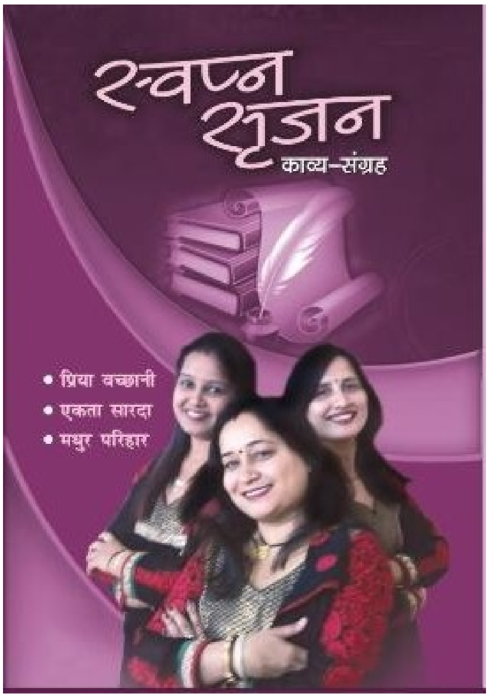

काव्य संग्रह - स्वप्न सृजन
रचनाकार- प्रिया वच्छानी, एकता सारदा एवं मधुर परिहार
प्रकाशक- भाषा सहोदरी-हिन्दी
पृष्ठ संख्या-१२८, मूल्य-रु. २५०

कुंडली

सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ा, लिया शिखर को चूम।
शून्य रहीं उपलब्धियाँ, उसी बिंदु पर घूम।।
उसी बिंदु पर घूम, हाथ कुछ लगा न अब तक।
बहकाओगे मित्र, स्वयं के मन को कब तक।
'ठकुरेला' कविराय, याद रखती हैं पीढ़ी।
या तो छू लें शीर्ष, या कि बन जायें सीढ़ी।।

-- त्रिलोक सिंह ठकुरेला

बाल कविताएं

नाच रहे थे खुशी में सारे, रिमझिम बारिश बरस रही
पर जाने क्यूं, एक कोने में, बैठी चिड़िया सुबक रही
पूछा तो बोली- देखो, वर्षा ने मेरा घरौंदा गिरा दिया
क्या करूं और कहां जाऊं मैं, घर अब मेरा नहीं रहा
सुनकर बात ये उसकी मेरे, दिल को आया बड़ा मलाल
रोओ नहीं, रो-रोकर तुमने, आंखें कर ली दोनों लाल
बड़े प्यार से मैंने छत में डलिया एक लटकाई
घास फूंस और तिनके रखकर अच्छी तरह सजाई
देखके ये सब चिड़िया के चेहरे पे रौनक आई
धन्यवाद जो तुमने मेरी खोई खुशी लौटाई

पाँच साल की हुई जो सिमरन दादा बोले चल
नाम लिखा आता हूं स्कूल में पढ़ लिखकर बनो सफल
बेमन से होकर तैयार बिटिया चली स्कूल
पूरे दिन बस खेल खेलना कैसे जाती भूल
भूख लगी जब लंच टाईम में डिब्बा उसने खोला
बड़े प्यार से भोला मिन्टू आकर उससे बोला
आओ सिमरन साथ खाऐंगे जो भी हम सब लाए
मेरी मां ने देखो
आज मीठे पुए बनाए
नए नए जब दोस्त
मिले बिटिया रानी मुस्काई
स्कूल उसे इतना भाया कि
घर की याद ना आई

-- असमा सुबहानी

जून माह में ठंडक पड़ती नैनीताल में
गर्मी की सब अकड़ निकलती नैनीताल में
लखनऊ दिल्ली पैतालीस डिग्री में झुलस रहे
सोलह पर ही धूप सिकुड़ती नैनीताल में
गर्मी धूप पसीना सबकी दादागीरी बंद
नहीं किसी की भी है चलती नैनीताल में
पंखा कूलर एसी सबकी छुट्टी रहती है
नहीं किसी की दाल
है गलती नैनीताल में
तुम भी यहाँ घूमने
आना मौका मिलते ही
गर्मी से है राहत
मिलती नैनीताल में

-- अरविन्द कुमार साहू

चाँद सो गया रात मे, देखा सपना प्रात में
चाँद की मम्मी सुला रही थी, प्यारी लोरी सुना रही थी
सो जाओ मेरे लाल अभी, आने वाली प्रात अभी
कलरव करते नभ में विहंग
झुंड-झुंड में उड़े विहंग
मातु गीत सुनाय रही है
चाँद को आज सुलाय रही है
गीत संग में प्यारी थपकी
रात चाँद ले रहा है झपकी

-- राजकिशोर मिश्र

ऋतुओं की रानी है वर्षा, रिमझिम-रिमझिम होती वर्षा
चारों तरफ हरियाली छायी, मौसम में खुशहाली लायी
खुश होती तो भर देती है, नदी तालाब में पानी वर्षा
पर गुस्से में बाढ़ बनकर, करने लगती मनमानी वर्षा!

काले बादल नभ में गरजते, रिमझिम-रिमझिम बरसते बादल
इस तप्त धरती को नम और ठंडा करते बादल
इन बूंदा बूंदी फुहारों में बच्चे नहाते आँगन में
शोर मचाकर धूम मचाकर मस्ती करते आँगन में
हाथ जोड़ कर विनती करते बार-बार तू आना सावन में
तेरा आना अच्छा लगता
जैसे बगियों में फूलों का खिलना
जब तू आता मन हर्षाता
तन-मन भी बेसुध हो जाता
खेत खलिहान में हरियाली लाता
सबके मन को सदा लुभाता

-- निवेदिता चतुर्वेदी

नानाजी का बागवानी

सुबह-सुबह सूरज दादा की किरण पड़ी
पड़ते ही चुन्नु-मुन्नू की नींद उड़ी
चुन्नु और मुन्नू ने ली अंगड़ाई
उठकर नानाजी की और दौड़ लगाई
कमरे में जाकर देखा तो नानाजी वहाँ नहीं थे
ना पूजाघर ना रसोई, नानाजी और कहीं थे
चुन्नु-मुन्नू बाहर आए वहीं खड़े थे नानाजी
चरण-स्पर्श करके बोले- 'करते हो क्या जी-क्या जी?'
नानाजी बोले- 'चुन्नु पहले वहाँ गड्डा खोदो
और मुन्नू ये लो कुछ बीज उस खड्डे में बो दो
बारिश के मौसम में पानी पाकर ये फूटेंगे
डाली, कलियां लाकर फूल सुनहरे हमको देंगे !'
चुन्नु और मुन्नू अचरज में करने लगे विचार
कैसे देंगे इतने फूल ये बीज हमें दो-चार
इतने में नानाजी बोले-"स्कूल नहीं जाना क्या?
नया पाठ मास्टरजी से पढ़कर नहीं आना क्या?'
चुन्नु- मुन्नू में फिर से होड़ लगी
स्कूल में जाने को घर में दौड़ लगी
खेलकूद में चुन्नु-मुन्नू उन बीजों को बिसर गए
दस-पंद्रह दिन बाद अचानक उनके पाँव ठहर गए
देखा कि इतने दिन गए थे जिन बीजों को भूल
उसी जगह खिल आए है नन्हें-नन्हें फूल
चुन्नु नानाजी को हाथ पकड़ खींच के लाया
कोमल-कोमल फूलों
को जल्दी से दिखलाया
नानाजी बोले, 'इसे
कहते हैं बागवानी'
चुन्नु-मुन्नू चिल्लाए,
'फूलों की यहीं कहानी!'

-- सूर्यनारायण प्रजापति

शिशु गीत

१. जूते

कील धूल से हमें बचाते, पालिश पा चमचम हो जाते
काले हों या रंग-बिरंगे, जूते काम हमेशा आते

२. चप्पल

जैसे जूता वैसे चप्पल, इसके बिन मत फिरना इक पल
काकरोच पर पैर पड़ा तो, तन में हो जाएगी हलचल

३. मच्छरदानी

रोज लगाओ मच्छरदानी, बैठ उसी में पढ़ो कहानी
वरना मच्छर के हमले से, नहीं बचा पाएगी नानी

४. खिड़की

खुलते ही ताजी हवा, कमरे में ले आती है
आँधीं में खड़-खड़ करे, थोड़ा-बहुत डराती है

५. दरवाजा

करता घर की पहरेदारी
हमें बचाता चोर से
जैसे कोई इसको पीटे
चिल्लाता है जोर से

-- कुमार गौरव अजीतेन्दु

लघुकथा

ठहाका

'साहब, भारत में माता के नौ रूपों की पूजा होती है।', मंदिर के सामने माता की मूर्ति को नमन करते हुए राजू गाइड ने अमेरिकन टूरिस्ट से अंग्रेजी में कहा और नवरात्रों का महत्व तथा माता के रूपों का विस्तार से वर्णन करने लगा, 'इतना ही नहीं साहब, यहाँ की सती स्त्रियों ने तो अपने तप के प्रभाव से यमराज के चंगुल से अपने पति के प्राण तक वापिस मांग लिये। यहाँ गाय को गौमाता कहा जाता है। और तो और नदियों तक में माता की छवि देखी जाती है जैसे मोक्षदायनी गंगा मईया, यमुना, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी, गोमती आदि। विश्व का पहला अजूबा ताजमहल शाहजहाँ और मुमताज के अमर प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है।'

इसके बाद भी राजू गाइड उस टूरिस्ट को हिन्दुस्तान की न जाने क्या-क्या खूबियाँ गिनाने लगा और ऐसा कहते वक्त उसके चेहरे पर अति गर्व का भाव था।

'लेकिन तुम्हारे यहाँ आज भी कन्या के जन्म पर मातम क्यों मनाया जाता है?' उस टूरिस्ट ने बड़ी गंभीरतापूर्वक कहा।

'प... प... पता नहीं साहब!' सिर खुजाते हुए राजू गाइड बड़ी मुश्किल से बोल पाया था और अगले ही पल उसके हिंदुस्तानी होने का गौरव न जाने कहाँ गुम हो गया।

-- महावीर उत्तरांचली

बाल कहानी

अनोखे अतिथि

(अपने भूतपूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम की जिंदगी पर आधारित एक प्रेरक कहानी)

अरविंद कुमार साहू

सुदूर दक्षिण स्थित केरल प्रांत के रामेश्वरम मे एक छोटा सा गाँव था, जहाँ मछुवारा समुदाय के अनेक लोग रहते थे। समुद्र में मछलियाँ पकड़ना और किराए पर नावें चलाना रोजी रोटी का मुख्य जरिया था। सभी मिलजुल कर रहते थे। इन्ही के बीच संघर्षों में पलने वाला एक बच्चा अपने सपनों को तूल देने की कोशिशों में लगा था। वह खूब पढ़ना चाहता था। आकाश की ऊंचाइयों में उन्मुक्त उड़ना चाहता था। लेकिन एक दिन समुद्र में आए तूफान ने उसके पिता की नाव दूर बहा दी। रोजी रोटी का जरिया छिन गया। सपने चूर होने लगे। पर बच्चे ने हिम्मत न हारी। वह रेलवे स्टेशन से अखबार लाकर सड़कों पर बेचने लगा। खर्च तो निकला ही, अखबारों ने उसकी पढ़ने की प्यास और जगा दी। खूब आगे बढ़ने के सपने देखता हुआ वह खूब मन लगाकर पढ़ता और काम भी करता।

बड़े होते बच्चे को अनेक लोगों के साथ दो लोगों का विशेष सहयोग मिला। एक था वहाँ का मोची, जो उसके जूतों का ध्यान रखता और बच्चे के सपनों की तरह उन्हें चमकाने में कोई कमी नहीं छोड़ता था। दूसरा वहाँ का एक ढाबे वाला, जो उसे रोज हर परिस्थिति मे खाना खिलाता और बच्चे के बड़े होते सपनों को थकान और कमजोरी से बचाने मे सहयोग देता।

जीवन की गाड़ी धकेलते हुए बच्चा किशोर बना, फिर युवावस्था के पंख लगाकर खुले आकाश मे उड़ चला। अपनी अदम्य जिजीविषा के बल पर उसने अपने सपनों को आकार दे दिया। उनमे सफलता के रंग भर दिये। उसका कद इतना बढ़ गया कि संघर्षों के पहाड़ बौने हो गये। सफलता की कहानियाँ समन्दर जैसी फैलती चली गई। देश-दुनिया में उसका रुतबा, उसकी हनक कायम हो गई।

इस लंबी यात्रा में गाँव के लोग, वह मोची और वह ढाबेवाला दूर कहीं पीछे छूटते चले गये। किसी को उम्मीद भी न थी अब उस बच्चे को वे छोटे-छोटे गरीब और दलित लोग याद भी होंगे। एक दिन देश के सबसे बड़े और ताकतवर सत्ता के केंद्र राष्ट्रपति भवन से खबर आई कि वहाँ बहुत बड़ा जलसा है, जिसमें उस बड़े हो चुके बच्चे के पारिवारिक सदस्यों समेत गाँव के लगभग पचास लोगों को बुलाया गया है।

सब भौंचक थे, अभिभूत थे, इस राजसी मेहमाननवाजी से। किसी ने भी इस तरह से यहाँ पहुँचने का सपना तक नहीं देखा था। लेकिन सब कुछ सपने से भी ज्यादा सच्चा और अच्छा था। उन सबको उसी गाँव के बच्चे ने बुलाया था, जो अब इतना बड़ा हो गया था कि दुनिया के हर हिस्से तक उसकी परछाईं पहुँच गई थी। लोगों ने जमकर खाया पिया, झूमे-नाचे, जिंदगी का असली सुख अनुभव किया और आनन्द पूर्वक अपने गाँव को जब लौट गए। अब उन्हें भरोसा हो गया था कि ईश्वर सचमुच आकाश में सच्चे मन से उड़ने का सपना देखने वालों को सफलता के पंख जरूर देता है।

और इसके कुछ दिनों बाद ही जब वह बड़ा हो चुका बच्चा एक महाराजा की भांति पहली बार अपने गृहराज्य केरल पहुंचा तो फिर एक चमत्कार सबकी प्रतीक्षा कर रहा था। विशालकाय और सुंदर राजभवन में उसके स्वागत-सत्कार के भव्य इन्तजाम थे। इतना भव्य इन्तजाम कि आम आदमी तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता था। लेकिन इस अवसर पर यहाँ बुलाये गये दो मुख्य अतिथि तो अपने स्वागत सत्कार को कल्पना भी मानने को तैयार न थे। वे अपने शरीर को बार-बार चिकोटी काट कर यथार्थ को समझने का प्रयास कर रहे थे। पर सत्य तो सत्य था जिसे कोई भी झुठलाने की हिमाकत नहीं कर सकता था। वहाँ हर व्यक्ति आश्चर्य चकित था। महामहिम के विशेष निर्देश पर आमंत्रित किए गये ये दोनों विशेष अतिथि वही मोची और ढाबेवाले थे, जिन्होंने बच्चे के सपनों को चमकाने मे भरपूर सहयोग किया था। आज वही दोनों इस भव्य समारोह के 'गेस्ट ऑफ ऑनर' थे। सफलता के शिखर पर पहुँच चुका वह बच्चा अपनी जमीन से जुड़े छोटे से छोटे व्यक्ति को भी नहीं भूला था।

जानते हो कि रामेश्वरम का वह छोटा बच्चा कौन था? निसन्देह, वह भारत के मिसाइल मैन से राष्ट्रपति बन चुके डा ए पी जे अब्दुल कलाम ही थे, जिनका सारा जीवन ऐसे प्रेरक प्रसंगों से भरा पड़ा है। ■

हास्य व्यंग्य

इस कुर्बानी पे हाय मैं मर जावां

डा. मनोहर लाल भंडारी

'अरे सुनते हो, थोड़ा-सा जहर मुन्ने को दे दो, वही दो मिनट वाला.'

'हां डार्लिंग, बिग बी वाला न, अभी देता हूं, टेंशन क्यों लेती हो, मैं हूं ना.'

'हां तुम भी जरा, अपने गुलाबी होंठों पर जहर लगा लेती तो अच्छा रहेगा.'

'वही तो कर रही हूं, वर्ना मैं खुद ही अपने लाड़ले को जहर नहीं दे देती क्या? इत्ती निठल्ली नहीं हूं मैं.'

'अरे डार्लिंग बुरा तो मत मानो, क्या मजाक भी नहीं कर सकता हूं मैं?'

'ऐसी टान्टिंग मुझे पसन्द नहीं है.'

शायद आपको पता होगा कि वैज्ञानिकों को यह ज्ञात नहीं है कि लेड यानी सीसे की वह सूक्ष्मतम मात्रा कितनी है जो मानव शरीर को नुक्सान नहीं पहुंचाती हो. अर्थात् सीसे की न्यूनतम मात्रा भी जहर होती है और न जाने क्यों वैज्ञानिक हर तरह के खाद्य पदार्थों में लेड की एक न्यूनतम पर्मिसिबल मात्रा तय कर डालते हैं.

परिणाम यह होता है कि मां अपने ही बच्चों के लिए पूतना राक्षसी हो जाती है और पत्नियां लेड युक्त लिपस्टिक लगाकर अपने पति के लिए विषकन्या सिद्ध होने लगती हैं (स्वयं भी बेचारियां जहर लेती हैं). ■

एक आम बात

धर्म पाण्डेय

हमको दशहरी आम पसंद है, और पत्नी को चौसा। पत्नी का कथन है थोडा खट्टा-मीठा नहीं रहे तो मजा नहीं आये। हम दोनों के इस आम मतभेद में बेटी की चांदी है। हालात ये है कि बेटी का पसंदीदा फल आम हो गया है। जहाँ १ किलो आम लाकर काम चल जाता था, वहीं अब २ किलो पति-पत्नी दोनों की पसंद का लाना पड़ता है।

शाम को घर आने से पहले माँ का फोन जरूर आयेगा 'आम लेकर ही घर आना'. फोन काटते हुए ये भी सुना ही देती है कैसा बाप है एक बेटी को आम के लिए तरसा देता है। बेटी को रट्टू तोता बना कर अम्मा जी ने कंठस्थ करा दिया है- 'बेटा तुम्हारा पसंदीदा फल कौन सा है।'

प्रश्न खत्म भी नहीं हुआ कि बेटी का जवाब आ जाता है- 'आम'।

वैचारिक विभेद में आम मनुष्य की आम समस्याओं के दरकिनार परिवार की एक आम सोच होती है। जो परिवार के मुखिया को कंजूस, धोखेबाज स्वार्थी और पता नहीं किन किन हालातों में पहुचा देती है। जब कोई आम प्रस्ताव आम सहमति से घर वाले आप के समक्ष रखते हैं तो मानो उनकी नजरें कह रही हो- सब कुछ घोट के बैठो हो कंजूस। अभी तुम्हारी हेकड़ी निकालते हैं।

मन बार-बार सोचता है हम तो बचपन में दूसरे के आम पर ढेला मार कर खा लेते थे। कितनी आम सी थी हमारी जिंदगी! ■

आईपीएस हो तो सरकार का काम करो!

अरुण कांत शुक्ला

ठाकुर दम्पति को लग रहा था कि मुलायम सिंह अमूल चीज का टुकड़ा हैं जिसे वो मजे से खा जायेंगे। भईये जिस नेता जी ने ममता बहन को लखनऊ बुलाकर प्रेस कांफ्रेंस में साथ में खड़े होकर बेरंग कोलकाता भिजवा दिया, वो नेताजी अमूल चीज का टुकड़ा नहीं, कडक सुपारी हैं, दांत तोड़ने के बाद ही टूटती है ये सुपारी। आप किस खेत की मूली हैं? आईपीएस याने वो प्रजाति, जिसे अंग्रेज अपनी जगह राज करने के लिए छोड़ गए। अपने चक्कर सोफिस्टीकेटेड टाईप के नेताओं पर चलाना। नेताजी ने सीपीएम जैसी पार्टी और प्रकाश करात जैसे होशियार आदमी को चारों खाने चित्त करके मनमोहन सिंह की सरकार को डेढ़ साल की आक्सीजन दे दी थी। आपका रिकार्ड तो वैसे भी खराब है।

आईपीएस हो तो सरकार का काम करो। ये क्या पब्लिक फंड से तनख्वाह लोगे और रोज-रोज हाई कोर्ट-सुप्रीम कोर्ट में पीआईएल लगाते रहोगे। याने खाओगे श्यामनाथ की और बजाओगे राजनाथ की, नेताजी के सामने ये चलने वाला नहीं ठाकुर। बचवा, व्हिस्लब्लोवर, बागी या लोकप्रिय बनने की इतनी ही चाहत है तो मारो सरकारी नौकरी को लात और बन जाओ केजरीवाल। या फिर यह कहो कि तुम्हारा टांका भाजपा के साथ भिड़ गया है और अब तुम भाजपा के ‘आजअनाथ’ के इशारे पर उछल कूद कर रहे हो।

मोदी जी हमारे प्रधानमंत्री हैं, उनकी बात को समझो! आईटी का जमाना है। कुछ छिप नहीं सकता। उन्होंने इसी आईटी की बदौलत कांग्रेस की सारी पोल पट्टी मीडिया के जरिये पूरे देश की पब्लिक के सामने लाई थी, और पब्लिक हर गली, चौराहे में गाती घूमती थी ‘ये पब्लिक है ये सब जानती है, ये पब्लिक है’ और मोदी जी चुनाव जीत गए थे। आपके बारे में सब लीक हो गया है। आपका पूरा परिवार पेशेवर पीआईऐली है। सुना है आपकी पत्नी ने पिछले तीन-चार साल में डेढ़ सौ पीआईएल लगाई हैं। यहाँ तक की कोर्ट भी परेशान है आप लोगों से। कोर्ट ने आपकी पत्नी को हर पीआईएल पर २५ हजार रुपये जमा करने का आदेश दिया है। और कहा है कि ये पैसे तभी वापस किए जाएंगे जब पीआईएल सही पाई जाएगी। अब हम यह तो न पूछेंगे कि हर पीआईएल के लिए पच्चीस हजार रुपये कहाँ से आयेंगे। इसलिए नहीं पूछेंगे क्योंकि हमने वह गाना अच्छे से सुना है कि ‘ऊपर वाला जब भी देता, देता छप्पर फाड़ के’।हमने तो यह भी सुना है ठाकुर साहब कि इसी साल लखनऊ कोर्ट की बेंच ने आपकी पत्नी नूतन ठाकुर पर ओछी पीआईएल दाखिल करने के लिए एक लाख का जुर्माना लगाया था।

बहरहाल, हमारी आदत किसी और के टंटे में अपनी टंगड़ी डालने की बिलकुल नहीं है। वह तो आपने कहा कि आप यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि आपको इंसाफ के साथ लगाव है और आप किसी की मदद करते हो तो आपको अच्छा लगता है और सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण कि आप यह सब अपनी पहचान बनाने के लिए करते हैं। यह तो आप आईपीएसगिरी करते हुए भी कर सकते थे और एक नेकदिल, इन्साफ पसंद, दूसरों का मददगार अधिकारी के रूप में नाम कमा सकते थे। इसके लिए आप सिंघम के दोनों पार्ट भी देख सकते थे। ये आईपीएसगिरी छोड़कर एफआईआर और पीआईएल वगैरह के चक्कर में पड़ने की क्या जरुरत थी और वह भी हमारे टेक्स के पैसों से मिलने वाली तनख्वाह के बल पर। पर, क्या किया जाए, ये पहचान बनाने का शौक मुआ जुए-दारु से ज्यादा लती होता है।

हमारे एक गुरु थे। उनकी मौत हो गयी। उन्हें जन्नत नसीब हो! तो, गुरूजी कहा करते थे कि अपनी पहचान बनाने का सबसे आसान तरीका है सारे कपड़े उतारकर बीच बाजार में नंगे दौड़ जाओ। पर, आप ऐसा नहीं करना। हम आपको कारण भी बता देते हैं, हमारे शहर में भी एक ठाकुर साहब थे, अब पता नहीं कहाँ हैं? वो आईएएस की तैयारी कर रहे थे। उन्हें अपनी पहचान बनाने की बड़ी जल्दी थी, बस एक दिन रात को सारे कपड़े उतारकर ठाकुर साहब स्कूटर पर सैर के लिए निकल पड़े। फिर, आप ही की बिरादरी के किसी अधिकारी के चंगुल में फंसे। धुम्मस हुई, दूसरे दिन अखबार में नाम आया और पहचान बन गयी।

तो, वैसे तो बिना माँगी सलाह की कोई वकत नहीं होती, पर हम भी अपनी आदत से मजबूर हैं, दिए देते हैं कि आप ऐसा कतई नहीं करना। आप तो हमारे टेक्स के पैसों को खानदानी संपत्ति मानकर सरकारी खजाने से तनख्वाह लेते हुए पूरे परिवार सहित पीएलआई में लगे रहो। हां, ये व्यवसाय और अच्छे से चले और ये मुलायम रूपी विघ्न बाधाएं व्यवसाय में रुकावट न डालें, इसके लिए निर्मल बाबा से सलाह ले लें। बच्चे विरोध करेंगे, पर आप ध्यान न देना। हो सकता है बाबा आपको कोई अच्छा सा टोटका बता दे। ■

(पृष्ठ १६ का शेष)

कहानी : एक थप्पड़

समझ में नहीं आ रहा था। जब मुझे आपकी फोटो दिखाई गई थी तो मुझे मालूम था कि हमारा रिश्ता तो हो नहीं सकेगा लेकिन आपसे मुआफी मांगने का अवसर तो मिल ही जाएगा, इसीलिए मैं ने आप से मिलना सवीकार कर लिया था।” मीना चुप हो गई और मेज पर पड़ी प्लेटों की ओर देखने लगी। रमेश भी कुछ देर चुप रहा और फिर अचानक बोला, “मीना जी! मुझ से शादी करोगी?” मीना ने रमेश के दोनों हाथों को पकड़ कर अपने माथे पर रख लिया।

कुछ देर बाद ‘बधाई हो! बधाई हो!’ की आवाजें आ रही थीं और सभी खुशी से हंस रहे थे। ■

(पृष्ठ ४ का शेष)

चाय...

अर्थात् सोकर उठने पर सबसे पहले बिस्तर पर ही चाय पीते हैं। यह आदत अति हानिकारक है। उन्हें चाय पीने के बाद ही शौच होता है, इससे वे समझते हैं कि चाय पेट साफ करती है। जबकि बात इससे ठीक उल्टी है। चाय पीने के बाद शौच इसलिए आ जाता है कि उससे आँतों में प्रतिक्रिया होती है, जिसके कारण शौच निकल जाता है। यदि इसके बजाय वे केवल एक गिलास सादा या गुनगुना जल पी लें, तो पेट अधिक अच्छी तरह साफ होगा और चाय के कुप्रभावों से भी बचे रहेंगे। बेड टी की आदत यूरोप के ठंडे देशों में तो कुछ हद तक स्वीकार्य है, परन्तु भारत जैसे गर्म देशों में बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है।

चाय में जो विषैले तत्व पाये जाते हैं, उनकी तो चर्चा करना ही व्यर्थ है, क्योंकि सभी जानते हैं कि चाय पीने वालों को कैंसर और डायबिटीज होने की सम्भावना सबसे अधिक होती है। इसके अन्य कई हानिकारक प्रभाव भी होते हैं, जो निम्न दोहे में बताये गये हैं-

कफ काटन, वायु हरण, धातुहीन, बल क्षीण।
लोहू को पानी करै, दो गुण, अवगुण तीन।।

इस दोहे में चाय में जो दो गुण बताये गये हैं अर्थात् कफ को काटना और गैस को दूर करना, वे चाय के कारण नहीं, बल्कि गर्म पानी के कारण होते हैं। साधारण गुनगुना पानी पीकर भी ये लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। इसलिए चाय की कोई आवश्यकता नहीं है। चाय के साथ चीनी भी हमारे शरीर में बड़ी मात्रा में प्रतिदिन चली जाती है, जो स्वयं बहुत हानिकारक है। इसलिए चाय पीना तो तत्काल बन्द कर देना चाहिए। जो चाय के लती हैं, उनको एकदम चाय छोड़ देने से एक-दो दिन थोड़ा कष्ट होगा, लेकिन यदि वे उसे झेल जायें, तो फिर कोई कष्ट नहीं होगा और स्वास्थ्य सुधार की राह पकड़ लेगा।

यदि कभी चाय की तलब उठे भी, तो उसके स्थान पर निम्नलिखित वस्तुओं में से कोई भी वस्तु ली जा सकती है, जो स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक हैं-

१) एक गिलास शीतल जल
२) एक कप गुनगुना दूध
३) एक गिलास मट्ठा या लस्सी
४) सब्जियों का एक कप सूप
५) किसी फल का एक गिलास रस
६) एक गिलास पानी में आधे नीबू का रस (नमक और चीनी के बिना)

यहाँ हमने चाय के बारे में जो कुछ भी कहा है, वह कॉफी के बारे में भी उतना ही सत्य है, बल्कि कॉफी चाय से दुगुनी हानिकारक होती है। इसलिए चाय और कॉफी दोनों भूलकर भी नहीं पीनी चाहिए। यदि कोई मित्र या सम्बंधी आपसे इन वस्तुओं के लिए आग्रह करे, तो विनम्रतापूर्वक मना कर दें और केवल शीतल जल की माँग करें। इससे उनको बुरा नहीं लगेगा। ■

लघुकथा

अंधा

'अरे बाबा! आप किधर जा रहे हैं?' जोर से चीखते हुए बच्चे ने बाबा को खींच लिया।

बाबा सम्हाल नहीं पाए, जमीन पर गिर गए, 'बेटा! आखिर इस अंधे को गिरा दिया।'

'नहीं बाबा, ऐसा मत बोलिए।' बच्चे ने बाबा को हाथ पकड़ कर उठाया, 'मगर आप उधर क्या लेने जा रहे थे?'

'मुझे मेरे बेटे ने बताया था, उधर खुदा का घर है. आप उधर इबादत करने चले जाइए।'

'बाबा! आप को दिखाई नहीं देता है। उधर खुदा का घर नहीं, गहरी खाई है।'

-- ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

कविता

तुम कितना भी हठ करो,
सौन्दर्य, हो वह चाहे झील, झरने
नदी, पहाड़, या मेमने का,
खींच ही लेगा तुम्हें बरबस,
अपनी ओर चुम्बक की तरह
तुम कितना भी हठ करो!
प्यार तो तरल होता है,
हो चाहे, मां, बच्चे,
प्रेयसी या वतन का
खींच ही लेगा तुम्हें गहराईयों में
और डूबना तुम्हारी नियति है
तुम जितना भी हठ करो!

-- बलवंत सिंह अरोड़ा

कार्टून

-- काजल कुमार

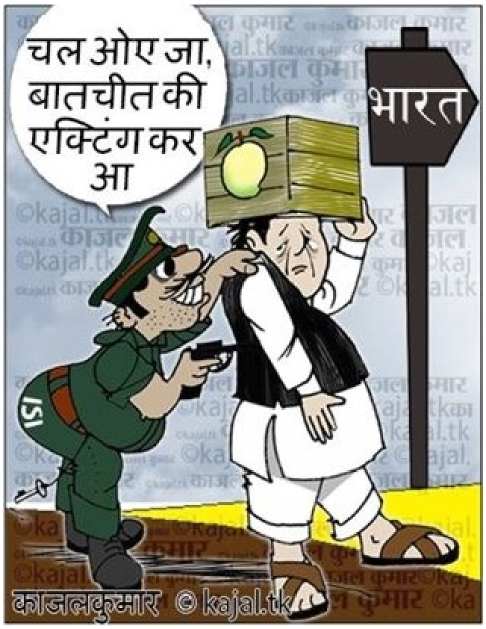

कविता

चलते चलते अनन्त यात्रा के राह में
एक अजनबी से मुलाकात हो गई
कुछ दूर साथ-साथ चले कि
हम दोनों में दोस्ती हो गई
कहाँ से आई वह, मैंने नहीं पूछा
मैं कहाँ से आया, उसने नहीं पूछा
शायद हम दोनों जानते थे
जवाब किसी के पास नहीं था
अजनबी थे हम मिलने के पहले
अजनबी रहे हम,जब मिलते रहे
अलविदा के बाद भी अजनबी रहेंगे
जैसे अजनबी थे मिलने के पहले
सफर कितनी लम्बी है न वो जाने न मैं
छोटी सी इस जीवन-सफर में
हर कदम पर रही साथी वो मेरा
और उसका हम सफर रहा हूँ मैं
सुख-दु:ख के हर पल को
दिल से लगाकर बनाया अपना
हम दोनों के मिलन का सफर
बन गया एक यादगार अफसाना

-- कालीपद 'प्रसाद'

दोहे

हे! विधना तूने किया, ये कैसा इंसाफ।
निर्दोषों को है सजा, पापी होते माफ।१।
कैसे देखें बेटियाँ, बाहर का परिवेश।
घर में रहते हुए भी, हुआ पराया देश।२।
दोहे संत कबीर के, तन-मन लेय उतार।
मानस पढ़ ले तू सखे, भर जीवन उजियार।३।
न्याय व्यवस्था पंगु है, जनता है बेहाल।
आम आदमी मर रहा, कैसा माया जाल।४।
छत पर छिटकी चाँदनी, फैला रही उजास।
जाग गई है आज फिर, पिया मिलन की आस।५।
अलियों-कलियों में हुई, कुछ ऐसी तकरार।
फूल सभी मुरझा गए, माली रहा निहार।६।
पावस की ऋतु आ गई, हर्षित हुए किसान।
प्रेम गीत गाते हुए, लगा रहे हैं धान।७।
बैठो यूँ न उदास तुम, मंजिल अब ना दूर।
यदि मन से तुम थक गए, तन भी होगा चूर।८।
तुलसी ने मानस रचा, दिखी राम की पीर।
बीजक की हर पंक्ति में, जीवित हुआ कबीर।११।
माँ के छोटे शब्द का, अर्थ बड़ा अनमोल।
कौन चुका पाया भला, ममता का है मोल।१२।

-- अमन चाँदपुरी

चालीस सेकूलरों ने की आतंकवादी याकूब को फांसी न देने की अपील

नयी दिल्ली। १९९३ मुंबई बम ब्लास्ट के दोषी याकूब मेमन को फांसी न देने के लिए ४० लोगों ने प्रेसिडेंट से अपील की थी. इन ४० लोगों में कई सांसद, रिटायर्ड जज और नामी गरामी लोग शामिल हैं.राष्ट्रपति को पत्र लिखने वालों में वामपंथी पार्टी के सीताराम येचुरी, वृंदा करात, प्रकाश करात, बीजेपी सांसद शत्रुघ्न सिन्हा और प्रसिद्ध वकील राम जेठमलानी भी शामिल हैं. गौरतलब है कि याकूब मेमन को ३० जुलाई को फांसी देने की तैयारी चल रही थी।

हालांकि इस अपील का कोई परिणाम नहीं हुआ और आतंकवादी याकूब मेमन को तय समय पर फांसी पर लटकना पड़ा। परन्तु देश की जनता में यह संदेश जरूर चला गया कि ये लोग मुस्लिम वोटों के लिए किसी भी हद तक गिर सकते हैं और देश की सुरक्षा तथा नागरिकों के जीवन की इन्हें कोई चिंता नहीं है। ■

सुप्रीम कोर्ट में रात में हुई आतंकी की याचिका पर सुनवाई

नई दिल्ली। न्याय होना ही नहीं बल्कि न्याय होते दिखना भी चाहिए। भारत के सुप्रीम कोर्ट ने दुनिया के सामने इस बात की नजीर पेश की है। उसने साबित कर दिया है कि एक आतंकी के लिए भी उसके यहां न्याय के सवाल पर कोई समझौता नहीं किया जाता। बात जब जीवन और मौत की हो, तो अदालत रात-दिन नहीं देखती। वैसे तो कई बार सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीशों ने आधी रात में घर में अदालत लगा कर न्याय दिया है लेकिन यह पहला मौका था जबकि सुप्रीम कोर्ट में आधी रात में सुनवाई हुई।

अभूतपूर्व स्थितियों में सुप्रीम कोर्ट ने फैसला भी अभूतपूर्व ही दिया। इस दफा याकूब मेमन के लिए अदालत न्यायाधीश के घर में नहीं बल्कि सुप्रीम कोर्ट परिसर में बैठी थी और सुनवाई सभी पक्षों और मीडिया के सामने खुली अदालत में हुई थी। ■

जय विजय मासिक
कार्यालय- ४/३, अक्षय निवास, २, सरोजिनी नायडू मार्ग, लखनऊ - २२६००१ (उ प्र)
मो 09919997596, 08004664748, ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com
वेबसाइट : www.jayvijay.co, www.jayvijay.co.in
प्रबंध सम्पादक- विजय कुमार सिंघल, सम्पादक- बृजनन्दन यादव
सहसम्पादक- अरविंद कुमार साहू, रमा शर्मा (जापान), कमल कुमार सिंह

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से नि:शुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।